भूमिका।

कबीर साहेबके बानीके बहुतही ग्रंथ हैं परन्तु कबीर साहेबकाही कहना है:-

चौपाई-"चौदह अरब ज्ञान हम भाखा ॥
सार शब्द बाहर ले राखा ॥"

चौदह अरबकहिये ब्रह्मज्ञानादि चौदह विद्याओं का ज्ञान, वह ब्रह्म स्वरूप चर अचर (जड चैतन्य) में व्यापक है ऐसा ब्रह्मा, विष्णु, शिवादि सब गुरु लोगोंने कथन किये हैं। परन्तु सार निर्णयरूप ज्ञान "बीजक ग्रंथ" हम अलगही निरपेक्ष जीवोंके लिये रक्खा है। जहाँ जड चैतन्यका निरुवारा करके जीवही सत्य, अविनाशी, नित्यपद है और पंचतत्त्व इनके नाम रूप, गुण खानी, बानी जाल आदि सब व्यवहार असत्य, नाशमान, मायिकहैं ऐसा बोध खोल दियेहैं और जीवोंको शुद्ध रहनी संयुक्त जीवन्मुक्त स्थिति दरशाईहै। बीजकका प्रमाण:-

॥साखी॥"जो जानहु जग जीवना, जो जानहु सो जीव।
पानी पचावहु आपना, तो पानी माँगि न पीव ॥"

इसीसे स्पष्ट जाना जाता है कि जगत्में सार सिद्धांत जीवपद मुख्य है। तैसेही ब्रह्म, ईश्वर, आत्मा,

परमात्मा खुदा आदि सब पद भी निर्जीव जड नहीं हैं तो जीवके विशेष प्रभुताके नाम परे हैं, परन्तु सर्व पद जड चैतन्य मिश्रित हैं । याहीते जीवोंको न्यारा साक्षी पारख स्वरूप पंचतत्त्वोंके विकारसे अलग होनेकी स्थिति बीजकमें कही है और निराकार, निर्गुण अनिर्वाच्य आदि सब सिद्धांत जीवकी कल्पना अनुमान भासे है ऐसा बोध खोलके बताया है । ये बीजक मूल ग्रंथ जगह २ अशुद्ध देखनेमें आया याते कबीरपंथी साधु काशीदासजीने साधु संतोंकी पुरानी प्रतिपरसे शुद्ध करके हमको प्राप्त होनेसे हमने कबीरपंथियोंके लिये अपने " श्रीवेङ्कटेश्वर " स्टीम् प्रेसमें मुद्रित किया है ।

इस ग्रंथमें अंक लिखेहैं उसकी विधि–

अङ्क १ जीवमुख बानी । जीवोंकी स्तुति प्रार्थनारूप बानी

अङ्क २ मायामुख बानी । ईश्वर प्राप्तिके सब कर्मोंकी बानी

अङ्क ३ ब्रह्ममुख बानी । अद्वैत अनिर्वाच्य सिद्धांतकी बानी

अङ्क ४ गुरुमुख बानी । जड तत्त्व और चैतन्य जीवकी पहिचानी और चैतन्यपद मुक्तस्थितिकी बानी ।

ऐसी चार प्रकारकी बानी है ये मर्म जानना ।

खेमराज श्रीकृष्णदास,

प्रोप्रायटर " श्रीवेङ्कटेश्वर " स्टीम् प्रेस–मुंबई.

भूमिका।

कबीर साहेबके बानीके बहुतही ग्रंथ हैं परन्तु कबीर साहेबकाही कहना है:-

चौपाई-"चौदह अरब ज्ञान हम भाखा ॥
सार शब्द बाहर ले राखा ॥"

चौदह अरब कहिये ब्रह्मज्ञानादि चौदह विद्याओं का ज्ञान, वह ब्रह्म स्वरूप चर अचर (जड चैतन्य) में व्यापक है ऐसा ब्रह्मा, विष्णु, शिवादि सब गुरु लोगोंने कथन किये हैं। परन्तु सार निर्णयरूप ज्ञान "बीजक ग्रंथ" हम अलगही निरपेक्ष जीवोंके लिये रक्खा है। जहाँ जड चैतन्यका निरुवारा करके जीवही सत्य, अविनाशी, नित्यपद है और पंचतत्त्व इनके नाम रूप, गुण खानी, बानी जाल आदि सब व्यवहार असत्य, नाशमान, मायिकहैं ऐसा बोध खोल दियेहैं और जीवोंको शुद्ध रहनी संयुक्त जीवन्मुक्त स्थिति दरशाईहै। बीजकका प्रमाण:-

॥साखी॥"जो जानहु जग जीवना, जो जानहु सो जीव।
पानी पचावहु आपना, तो पानी माँगि न पीव॥"

इसीसे स्पष्ट जाना जाता है कि जगतमें सार सिद्धांत जीवपद मुख्य है। तैसेही ब्रह्म, ईश्वर, आत्मा,

परमात्मा खुदा आदि सब पद भी निर्जीव जड नहीं हैं तो जीवके विशेष प्रभुताके नाम परे हैं, परन्तु सर्व पद जड चैतन्य मिश्रित हैं। याहीते जीवोंको न्यारा साक्षी पारख स्वरूप पंचतत्त्वोंके विकारसे अलग होनेकी स्थिति बीजकमें कही है और निराकार, निर्गुण अनिर्वाच्य आदि सब सिद्धांत जीवकी कल्पना अनुमान भासे है ऐसा बोध खोलके बताया है। ये बीजक मूल ग्रंथ जगह २ अशुद्ध देखनेमें आया याते कबीरपंथी साधु काशीदासजीने साधु संतोंकी पुरानी प्रतिपरसे शुद्ध करके हमको प्राप्त होनेसे हमने कबीरपंथियोंके लिये अपने "श्रीवेङ्कटेश्वर" स्टीम् प्रेसमें मुद्रित किया है।

इस ग्रंथमें अंक लिखेहैं उसकी विधि–

अङ्क १ जीवमुख बानी। जीवोंकी स्तुति प्रार्थनारूप बानी

अङ्क २ मायामुख बानी। ईश्वर प्राप्तिके सब कर्मोंकी बानी

अङ्क ३ ब्रह्ममुख बानी। अद्वैत अनिर्वाच्य सिद्धांतकी बानी

अङ्क ४ गुरुमुख बानी। जड तत्त्व और चैतन्य जीवकी पहिचानी और चैतन्यपद मुक्तस्थितिकी बानी।

ऐसी चार प्रकारकी बानी है ये मर्म जानना।

खेमराज श्रीकृष्णदास,
प्रोप्रायटर "श्रीवेङ्कटेश्वर" स्टीम् प्रेस–

॥ श्रीः ॥

बीजकमूलग्रंथका सूचीपत्र।

सतगुरवें नमः

अथ बीजक मूल ग्रंथ ।

दया गुरुकी ।

अथ लिख्यते रमैनी प्रथम अनुसार ।

रमैनी १.

अन्तरं ज्योति शब्द एक नारी । हरि ब्रह्मा ताके त्रिपुरारी ॥ ते तिरिये भग लिंग अनंता । तेउ न जाने आदिउ अंता ॥ बाखरि एक विधाते कीन्हा । चौदह ठहर पाट सो लीन्हा ॥ हरि हर ब्रह्मा महंतों नाऊं । तिन्ह पुनि तीन बसावल गाऊं ॥ तिन्ह पुनि रचल खंड ब्रह्मंडा । छौ दर्शन छानवे पाखंडा ॥ पेट न काहु वेद पढाया । सुन्नति कराय तुरुक नहिं आया ॥ नारी मों चित

गर्भ प्रसूती । स्वांग धरे बहुते करतूती ॥ तहिया हम तुम एकै लोहू । एकै प्राणबियापै मोहू ॥ एकै जनी जना संसारा । कौन ज्ञानसे भयउ निनारा ॥ भौ बालक भगद्वारे आया । भग भोगी के पुरुष कहाया ॥ अविगतिकी गति काहु न जानी । एक जीभ कित कहूं बखानी ॥ जो मुख होय जीभ दश लाखा । तो कोइ आय महंतों भाखा ॥

साखी—कँहहिं कबीर पुकारि के । ई लेऊ ब्यौहार ॥
राम नाम जानेबिना । भौ बूडि मुवा संसार ॥ १

रमैनी २.

जीवरूप एक अन्तर बासा । अन्तर ज्योति कीन्ह परकासा ॥ इच्छारूपि नारि अवतरी । तासु नाम गायत्री धरी ॥ तेहि नारिके पुत्र तीनि भयऊ । ब्रह्मा विष्णु महेश्वर नांऊ ॥ फिर ब्रह्मोंपूछल महतारी । को तोर पुरुष केकरि तुम नारी ॥ तुम

हम हम तुम और न कोई । तुमहिसे पुरुष हमें तोरि जोई ॥

साखी–बाप पूतकी एकै नारी।एकै माय बियाय॥
ऐसा पूत सपूत न देखा।जो बापहि चीन्हे धाय २

रमैनी ३.

प्रथम आरंभ कौनको भयऊ। दूसर प्रगट कीन्ह सो ठयऊ ॥ प्रगटे ब्रह्मा विष्णु शिव शक्ती ।प्रथमें भक्ति कीन्ह जिव उक्ती ॥ प्रगटे पवन पानी औ छाया । बहु बिस्तारक प्रगटी माया ॥प्रगटे अंड पिंड ब्रह्मंडा ॥ पृथ्वी प्रगट कीन्ह नौ खंडा ॥ प्रगटे सिद्ध साधक संन्यासी । ई सब लागि रहे अविनासी ॥ प्रगटे सुर नर मुनि सब झारी। तेहिके खोज परे सब हारी ॥

साखी–जीव शीव सब प्रगटे।वै ठाकुर सब दास ॥
कबीर और जाने नहीं। एक रामनामकीआस ॥३॥

रमैनी ४.

प्रथम चरण गुरु कीन्ह विचारा । कर्ता गावे सिरजनहारा ॥ कर्मके के जग बौराया । सक्त भक्तिके बांधेनि माया ॥ अद्‌भुद रूप जातिकी बानी । उपजी प्रीति रमैनी ठानी ॥ गुणी अनगुणी अर्थ नहिं आया । बहुतक जने चीन्हि नहिं पाया ॥ जो चीन्हैं ताको निर्मल अंगा । अन चीन्हे नर भये पतंगा ॥

साखी–चीन्हिचीन्हिकागावहुबौरे । बानीपरीन चीन्हि॥आदि अन्त उतपतिप्रलय । आपुहीकहि दीन्ह ॥ ४ ॥

रमैनी ५.

कँहालो कहौं युगनकी बाता । भूले ब्रह्म न चीन्हे बाटा ॥ हरि हर ब्रह्माके मन भाई । त्रिवि अक्षर ले युक्ति बनाई ॥ त्रिवि अक्षरका कीन्ह बँधाना । अनहद शब्द ज्योति परवाना ॥ अक्षर पढि गुनि राह चलाई । सनक सनन्दनके मन भाई ॥

वेद कितेब कीन्ह विस्तारा ।फैल गैल मन अगम अपारा॥चहुँ युग भक्तन बांधल बाटी । समुझि न परी मोटरी फाटी ॥ भय भय पृथ्वी दहुँ दिश धावें । अस्थिर होय न औषध पावें ॥ होयें बहिस्त जो चित न डोलावे। खसमहि छाडि दोजखको धावे॥पूरब दिशा हंस गति होई । है सनीप संधि बूझे कोई ॥ भँक्ता भक्तिक कीन्ह सिंगारा । बूडि गैल सब मांझल धारा ॥

साखी-बिनँगुरुज्ञानदुन्दभई।खसमकहीमिलिबात॥ युग युग सो कहवैया । काहु न मानी बात॥५॥

रमैनी ६.

बँर्णहु कौन रूप औ रेखा । दूसर कौन आहि जो देखा॥ वो ॐ कार आदि नहिं वेदा । ताकर कहहु कौन कुल भेदा ॥ नँहिं तारागन नहिं रवि चंदा । नहिं कछु होते पिताके बिन्दा॥नहिं जल नहिं थल नहिं थिर पवना ।कोँधरे नाम हुकमको

बरना ॥ नहिं कछु होते दिवस निशु राती । ताकर कहहु कौन कुल जाती ॥

साखी-शून्यसहजमनसुमिरते। प्रगटभईएकज्योत ताहि पुरुषकी मैं बलिहारी। निरालंब जो होत ६॥

रमैनी ७.

तँहिया होते पवन नहिं पानी। तहिया सृष्टि कौन उत्पानी॥ तहिया होते कली नहिं फूला। तहिया होते गर्भ नहिं मूला॥ तँहिया होते विद्या नहिं वेदा। तहिया होते शब्द नहिं स्वादा॥ तहिया होते पिंड नहिं बासू। नहिं धर धरणि न पवन अकासू॥ तहिया होते गुरु नहिं चेला। गम्य अगम्य न पंथ दुहेला॥

साखी-अँविगतिकीगतिकाकहो। जाकेगांव नठांव गुण बिहूना पेखना। का कहि लीजे नांव॥७॥

रमैनी ८.

तँत्वमसि इनके उपदेसा। ई उपनिषद कहैं

सँदेसा ॥ ई निश्चय इनके बड भारी । वाहिक वर्णन करें अधिकारी॥ परमतत्त्वका निज परवाना । सनकादिक नारद शुक माना॥याज्ञवल्क्य औ जनक सम्बादा । दत्तात्रेय वोहि रस स्वादा ॥ वोहि बात राम वसिष्ठ मिलि गाई । वोहि बात कृष्ण उद्धव समुझाई ॥ :वोहि बात जो जनक दृढ़ाई । देह धरे विदेह कहाई ॥

साखी-कुल मर्य्यादा खोयके।जीवत मुवा न होय॥ देखत जो नाहिं देखिया । अदृष्ट कहावे सोय॥८॥

रमैनी ९.

बांधे अष्ट कष्ट नौ सूता । यम बांधे अंजनीके पूता ॥ यमके बाहन बांधे जनी।बांधे सृष्टि कहां लो गनी ॥ बांधेउ देव तैंतीस करोरी । संबरत लोहबंद गौ तोरी ॥ राजा संबरे तुरीया चढी । पंथी संबरे नाम ले बढी ॥ अर्थ बिहूना संबरे नारी । परजा संबरे पुहुमी झारी ॥

साखी–बंदिमनावे तेफलपावे ।बंदिदियासोदेय॥
कहैंकबीरसोऊबरे।जोनिशिबासरनामाहिंलेय९॥

रमैनी १०.

राँहि ले पीपराही बही।करगी आवत काहु न कही॥आई करगी भौ अजगूता । जन्म जन्म यम पहिरे बूता॥बूता पहिरि यम कीन्ह समाता। तीन लोकमें कीन्ह पयाना॥बांधेउ ब्रह्मा विष्णु महेशू । सुर नर मुनि औ बांधु गणेशू॥बांधे पवन पावक औ नीरू। चांद सूर्य बांधेउ दोउ बीरू॥ सांच मंत्र बांधे सब झारी।अमृत वस्तु न जाने नारी ॥

साखी–अँमृ वस्तुजानेनहीं।मगनभयासबलोय
कहहिंकबीरतामोंनहीं । जीवहिमरणनहोय॥१०

रमैनी ११.

आंधँरिगुप्तसृष्टिभइबौरी।तीनलोकमेंलागिठगौरी
ब्रह्माठगोनागकहँजाई । देवतासहितठगोत्रिपुरारी

राजठगोरीविष्णुपरपरी।चौदहभुवनकेरचौधरी॥ आदि अंत जाकी जलकन जानी । ताकी डर तुम काहेक मानी॥वै उतंग तुम जाति पतंगा । यम घर कियेउ जीवको संगा ॥ नीम कीट जस नीम पियारा । विषको अमृत कहत गँवारा ॥ विषके संग कौन गुण होई।किंचित लाभ मूल गौ खोई ॥ विष अमृत गौ एकै सानी । जिन जानी तिन विषकै मानी ॥ काह भये नर शुद्ध बेशुद्धा । बिन परचय जग बूड नबुद्धा॥मतिके हीन कौन गुण कहई । लालच लागी आसा रहई ॥

साखी–मुवाँहै मारि जाउगे । मुयेकिबाजीढोल ॥
सपनसनेहीजगभया।सहिदानीरहिगौबोल ११॥

रमैनी १२.

माँटिक कोट पषानको ताला।सोईक बन सोई रखवाला ॥ सो बन देखत जीव डेराना । ब्राह्मण वैष्णव एकै जाना॥ज्यों किसान किसानी करई।

उपजे खेत बीज नहिं परई ॥ छाडि देहु नर झलिके झेला । बूडे दोऊ गुरु औ चेला ॥ तीसर बूडे पारथ भाई । जिन बन डाहे दवां लगाई ॥ भूंकि भूंकि कूकुर मरि गयऊ । काज न एकौ सियारसे भयऊ ॥

साखी—मूसबिलाई एक सँग।कहु कैसे रहिजाय॥ अचरजएकदेखोहोसंतो। हस्तीसिंघहिखाय १२

रमैनी १३.

नहिं परतीत जो यहसंसारा।दर्बकीचोटकठिन कै मारा ॥ सोतो शेषौ जाइ लुकाई । काहूके परतीत न आई ॥ चले लोग सब मूल गमाई । यमकी बाढि काटि नाहिं जाई ॥ आजु काल जो काल अकाजा। चले लादि डिगंतर राजा॥सहज बिचारे मूल गमाई ।लाभते हानि होय रे भाई॥ ओछी मति चंद्रमा गौ अथई । त्रिकुटी संगम स्वामी बसई॥तवहीं विष्णु कहा समुझाई।मैथुन

मनलाया॥ एकसे पूजा जैनि बिचारा। एकसे निहुरि निमाज गुजारा॥ कोई काहुका हटा न माना। झूठा खसम कबीर न जाना॥ तन मन भजि रहु मोरे भक्ता। सत्य कबीर सत्य है वक्ता॥ आपुहि देव आपु है पाँती। आपुहि कुल आपू है जाती॥ सर्व भूत संसार निवासी। आपु है खसम आपु सुखबासी॥ कहइत मोहि भयल युगचारी। काके आगे कहों पुकारी॥

साखी-साँचहि कोई न माने। झूठहिके सँग जाय।
झूठेहि झूठा मिलि रहा। अहमक खेहा खाय १४॥

रमैनी १५.

वोनँई बदरिया परि गौ संझा। अगुवा भूला बन खंड मंझा॥ पिया अंते धन अंते रहई। चौपरि कामरि माथे गहई॥

साखी-फुँलवा भार न लेसके। कहे सखिनसोंरोय।
ज्यों ज्यों भीजे कामरी। त्यों त्यों भारी होय १५॥

रमैनी १६.

चलत चलत अति चरण पिराना । हारि परे तहां अति रे सयाना ॥ गण गंधर्व मुनि अंत न पाया । हरि अलोप जग धंधे लाया ॥ गहनी बंधन बाण न सूझा । थाकि परे तहां किछउन बूझा ॥ भूलि परे जिय अधिक डेराई । रजनी अंधकूप है आई ॥ माया मोह उहां भरपूरी । दादुर दामिनि पवन अपूरी ॥ बरसे तपे अखंडित धारा । रैन भयावन कछु न अधारा ॥

साखी—सबै लोग जहं डाइया । अंधा सबै भुलान ॥
कहा कोई ना माने । सब एकै माहिं समान ॥ १६ ॥

रमैनी १७.

जस जीव आपु मिले अस कोई । बहुत धर्म सुखहृदया होई ॥ जासु बात रामकी कही । प्रीति न काहुसो निर्वही ॥ एकै भाव सकल जग देखी । बाह परे सो होय विवेकी ॥ विषय मोहके

फंद छुड़ाई । तहां जाय जहां काट कसाई॥ अहै कसाई छूरी हाथा । कैसहु आवे काटौं माथा ॥ मानुष बड़ा बड़ा होय आया । एकै पंडित सबै पढ़ाया ॥ पंढ़ना पढो धरो जनि गोई । नहिं तो निश्चय जाहु बिगोई ॥

साखी-सुमिरणकरहुरामका।छाडहुदुखकी आस। तरऊपर धै चापिहैं। जस कोल्हू कोटिपिचास१७

रमैनी १८.

अर्दबुद पंथ बर्णि नहिं जाई। भूले राम भूलि दुनियाई ॥ जो चेतहु जो चेतहुरे भाई। नहिं तो जीव यम लेजाई ॥ शब्द न माने कथे ज्ञाना । ताते यम दियो है थाना ॥ संशय सावज बसे शरीरा । तिन खायो अन बेधा हीरा ॥

साखी-संशयँसावजशरीरमें। संगहिखेलेजुआरि ऐसाघायल बापुरा । जीवहि मारे झारि॥ १८॥

रमैनी १९.

अँनहद अनुभवके कारि आसा । ई विप्रीति देखहु तमासा ॥ इहै तमासा देखहु रे भाई। जहँवां शून्य तहां चलि जाइ ॥ शून्यहि बंछे शून्यहि गयऊ । हथा छोडि बेहाथा भयऊ ॥ संशय सावज सकल संसारा।काल अहेरी सांझसकारा॥ साखी—सुमिरणकरहु रामका । कालगहेहैंकेश॥ ना जानोकबमारिहैं । क्या घर क्या परदेश १९

रमैनी २०.

अंब कहु राम नाम अविनासी । हारि छोड़ि जियरा कतहुँ न जासी ॥ जँहां जाहु तहां होहु पतंगा । अब जनि जरहु समुझि विष संगा ॥ राम नाम लौलायस लीन्हा । भृंगी कीट समुझि मन दीन्हा ॥ भौ असगरुवा दुखके भारी । करु जिय जतन जो देखु विचारी ॥ मनकी बात है लहरि बिकारा ॥ ते नहिं सूझे वार न पारा ॥

साखी—इच्छाकरिभवसागर। जामेंबोहितरामअ-धार । कहैंकबीरहरिशरणगहु ॥ गौखुरवच्छ-बिस्तार ॥ २० ॥

रमैनी २१.

बहुत दुःख दुखदुखकी खानी । तब बचिहो जब रामहिं जानी ॥ रामहिं जानि युक्ति जो चलई । युक्तिहुते फंदा नहिं परई॥युक्तिहि युक्ति चला संसारा । निश्चय कहा न मानु हमारा ॥ कनक कामिनी घोर पटोरा । संपति बहुत रहे दिन थोरा ॥ थोरी संपति गौ बौराई । धर्मरा-यकी खबरि न पाई ॥ देखि त्रास मुख गौ कुम्हिलाई । अमृत धोखे गौ विष खाई ॥ साखी—मैं सिरजों मैं मारौं । मैं जारौं मैं खाव॥ जल थल महियां रमिरहो। मोर निरंजननाव२१

रमैनी २२.

अलख निरंजन लखै न कोई। जेहि बंधे बंध

सब लोई ॥ जेहि झूठे सब बांधु अयाना। झूठा वचन सांचकै माना ॥ धंधा बंदा कीन्ह व्यवहारा । कर्म बिवर्जित बसे निन्यारा ॥ षट आश्रम औ दर्शन कीन्हा । षट रस बास षटै वस्तु चीन्हा ॥ चारि वृक्ष छौ शाखा बखानी । विद्या अगणित गने न जानी ॥ औरौ अगम करें विचारा । ते नहिं सूझे वार न पारा॥जप ती- रथ ब्रत कीजे बहु पूजा।दान पुण्यकीजे बहुदूजा॥ साखी—मंदिर तो हैं नेहका। मति कोई पैठोधाय॥ जो कोई पैठे धायके । बिन शिर सेंती जाय२२॥

रमैनी २३.

अलप सुख दुख आदिउअंता।मन भुलान मैगर मैमंता॥सुख बिसराय मुक्ति कहां पावे । परिहरि सांच जूंठ निज धावे॥अनल ज्योति डाहे एक संगा । नैन नेह जस जरे पतंगा ॥ करहु बिचार जो सब दुखजाई । परिहरि झूठेकेर सगाई ॥

लालच लागी जन्म सिराई । जरा मरण नियरायल आई ॥

साखी-भँरमकाबांधाईजग । यहिविधिआवेजाय
मानुष जन्म पायके । नर काहेको जहँडाय २३॥

रमैनी २४.

चंद्र चकोर की अस बात जनाई । मानुष बुद्धि दीन्ह पलटाई ॥ चारि अवस्था सपनेहु कहई । झूठो फूरो जानत रहई ॥ मिथ्या बात न जाने कोई । यहि विधि सब गैल विगोई ॥ आगे दै दै सबन गमाया । मानुष बुद्धि सपनेहु नाहिं पाया ॥ चौंतिस अक्षरसे निकले जोई । पाप पुण्य जानेगा सोई ॥

साखी-सोईकँहतासोईहोउगे । तैंनिकरिनबाहिरआव
होहजूरठाढकहतहौं । तैंक्यों धोखेजन्मगमाव २४

रमैनी २५.

चौंतिसँ अक्षरका इहै विशेपा । सहसो नाम

याहिमें देखा ॥ भूलि भटकि नर फिर घट आया। होत अजान सो सबन गमाया ॥ खोजहिं ब्रह्मा विष्णु शिव शक्ती। अनंत लोक खोजहिं बहुभक्ती॥खोजहिं गण गंधर्व मुनि देवा। अनंत लोक खोजहिं बहु भेवा ॥

साखी--जंती सती सब खोजहिं।मनाहिंनमानेहारि
बड बड जीवन बांचिहैं।कहहिं कबीरपुकारि २५

रमैनी २६.

आपुहि कर्ता भये कुलाला। बहुविधि बासन गढे कुम्हारा ॥ विधिने सबे कीन्ह एक ठाँऊ। अनेक जतनके बने कनाऊं ॥ जठर अग्निमो दीन्ह प्रजारी। तामहँ आपु भये प्रतिपाली ॥ बहुत जतनकै बाहर आया।तब शिव शक्ती नाम धराया॥घरका सुत जो होय अयाना। ताकेसंग न जाहु सयाना॥ सांची बात कही मैं अपनी।

चर बीहर दूनोमें लीना ॥ विषके खाये विष नहिं जावे । गारुड सो जो मरत जियावे ॥

साखी–अँलखजोलागीपलकनैं । पलकहीमेंडँसिजाय ॥ विषहर मंत्र माने । तो गारुड काह कराय ॥ २९ ॥

साखी—ज्ञान अमरपद बहिरे । नियरे ते है दूरि॥
जोजानेताकेनिकटहै। नहिंतोरहासकलघटपूरि॥

रमैनी ३१.

सुमृति आहि गुणनको चीन्हा । पाप पुण्यको मारग कीन्हा ॥ सुमृति वेद पढ़े असरारा । पाखंडरूप करेंहंकारा ॥ पढें वेद औ करें बड़ाई । संशय गांठि अजहुं नहिं जाई ॥ पढे शास्त्र जीव वध करई । मुंडि काटि अगमनके धरई ॥

साखी—कँहहिंकबीरईपाखंड।बहुतकजीवसताव॥
अनुभवभावनदरसै।जियतनआपुरखाव ॥ ३१॥

रमैनी ३२.

अन्धसो दर्पण वेद पुराना । दर्वी कहा महारस जाना ॥ जस खर चंदन लादेउ भारा । परिमल बास न जानु गँवारा ॥ कहहिं कबीर खोजे अस: माना । सोन मिला जो जाय अभिमाना ॥ ३२ ॥

चर बीहर दूनोमें लीना ॥ विषके खाये विष नहिं जावे । गारुड सो जो मरत जियावे ॥

साखी–अँलखजोलागीपलकमें । पलकहीमेंडँ-सिजाय ॥ विषहर मंत्रन माने । तो गारुड काह कराय ॥ २९ ॥

रमैनी ३०.

औभूँले षट दर्शन भाई । पाखंड भेष रहा लपटाई ॥ जीव शीवका आहि नसौना । चा-रिउ वेद चतुर्गुण मौना ॥ जैनि धर्मका मर्म न जाना । पाती तोरि देवघर आना ॥ दवना मरुवा चंपाके फूलाँ । मानहु जीवकोटि सम-तूला ॥ औ पृथिवीके रोम उचारे । देखत जन्म आपनो हारे ॥ मन्मथ बिंद करे असरारा । कल्पै बिंद खसे नहिं द्वारा ॥ ताकर हाल होय अहवूदा । छौ दर्शनमें जेनि बिगुर्चा ॥

साखी—ज्ञांन अमरपद बहिरे । नियरे ते है दूरि॥
जोजानेताकेनिकटहै। नहिंतोरहासकलघटपूरि॥

रमैनी ३१.

सुमृति आहि गुणनको चीन्हा । पाप पुण्यको मारग कीन्हा ॥ सुमृति वेद पढ़े असरारा । पाखंडरूप करेंहंकारा ॥ पढ़ें वेद औ करें बड़ाई । संशय गांठि अजहुं नहिं जाई ॥ पढे शास्त्र जीव वध करई । मुंडि काटि अगमनके धरई ॥
साखी—कँहहिंकबीरईपाखंड।बहुतकजीवसताव॥
अनुभवभावनदरसै।जियतनआपुरखाव ॥ ३१॥

रमैनी ३२.

अन्धसो दर्पण वेद पुराना । दर्वी कहा महारस जाना ॥ जस खर चंदन लादेउ भारा । परिमल बास न जानु गँवारा ॥ कहहिं कबीर खोजे असः माना । सोन मिला जो जाय अभिमाना ॥ ३२ ॥

रमैनी ३३.

वेदकी पुत्री सुमृति भाई । सो जेवरी कर लेतहि आई ॥ आपुहि बरी आपन गर बंधा । झूठा मोह कालको फंदा ॥ बंधवत बंधा छोरि-या न जाई । विषय स्वरूप भूलि दुनियाई ॥ हमरे देखत सकल: जग लूटा । दास कबीर राम कहि छूटा ॥

साखी-रामहि राम पुकारते। जिभ्यां परिगोरोंस॥ सूधा जल पीवें नहीं । खोद जीवनकीहौस३२

रमैनी ३४.

पढि पढि पंडित करु चतुराई । निज मुक्ति मोहि कहो समुझाई ॥ कहां बसे पुरुष कौनसा गांऊ । सो पंडित मोहि सुनावहु नांऊ ॥ चारि वेद ब्रह्में निज ठाना । मुक्तिका मर्म उनहु नहिं जाना ॥ दान पुण्य उन बहुत बखाना । अपने

मरणकी खबरि न जाना ॥ एक नाम है अगम गँभीरा । तहंवां अस्थिर दास कबीरा ॥
साखी–चिउंटी जहां न चढि सके । राई ना ठहराय ॥ आवागवनकीगमनहीं।तहांसकलोजगजाय ॥ ३३ ॥

रमैनी ३५.

पंडित भूले पढि गुनि वेदा । आप अपनपौ जानु न भेदा ॥ संझा तर्पण औ षट कर्मा । ई बहु रूप करें अस धर्मा ॥ गायत्री युग चारि पढाई । पूछहु जाय मुक्ति किन पाई ॥ और के छिये लेतहोछींचा।तुमसोंकहहुकौनहै नीचा॥ ई गुण गर्भ करो अधिकारी। अधिके गर्भ न होय भलाई ॥ जासु नाम है गर्भ प्रहारी। सो कस गर्भहि सके संहारी ॥
साखी-कुल मर्य्यादा खोयके। खोजिन पद निर्वान ॥ अंकुर बीज नसायके। नर भये विदेही थान ॥ ३४ ॥

रमैनी ३६.

ज्ञानी चतुर बिचक्षन लोई।एक सयान सयान न होई ॥ दूसर सयानको मर्मनजाना । उत्पति परलय रैन बिहाना ॥ बनिज एक सबन मिलि-ठाना । नेम धर्म संजम भगवाना ॥ हरि अस ठाकुर तजियो न जाई । बालहि बहिस्त गावहि दुलहाई ॥
साखी-ते नर कहां गये । जिन दीन्हा गुरु चोटि ॥
राम नाम निजु जानिके।छाडिदेहुबस्तु खोटि॥ ३५

रमैनी ३७.

एकै सयान सयान न होई।दूसर सयान न जाने कोई ॥ तीसर सयान सयानहि खाई । चौथे सयान तहां ले जाई ॥ पँचये सयान जो जानेउ कोई । छठयेमा सब गयल बिगोई ॥ सतयाँ सयान जो जानहु भाइ । लोक वेदमो देउ देखाई ॥
साखी-बीजक बित्त बतावे । जोबित्त गुप्ता होय ॥
ऐसे शब्द बतावे जीवको । बूझे बिरला कोय ॥ ३६

रमैनी ३८.

यँहि विधि कहो कहानहिंमाना।मारगमाहिं पसारिनि ताना॥राति दिवस मिलि जोरिन तागा। ओटत कातत भरम न भागा ॥ भरम सब जग-रहा समाई। भरम छोडि कतहूँ नहिं जाई ॥ परे न पूरि दिनहु दिन छीना। तहां जाय जहां अग बिहूना ॥ जो मत आदि अंत चलाई। सो मत सब उन्ह प्रगट सुनाई ॥

साखी-यँहसंदेसाफुरकैमानेहु। लीन्हेउशीसचढाय संतों संतोष सुख है। रहहु तो हृदय जुडाय॥३७॥

रमैनी ३९.

जिन्ह कलमा कलिमाहिं पढाया।कुदरत खोज तिनहु नहिं पाया॥ कर्मत कर्म करे करतूता। वेद् कितेब भये सब रीता॥ कर्मतसो जग भौ अवत-रिया।कर्मतसो निमाजको धारिया॥ कर्मत सुन्नति और जनेऊ। हिंदू तुरुक न जाने भेऊ ॥

साखी-पाँनी पवन संजोयके । रचिया यह उतपात
शून्यहिं सुरति समोइके । कासोकहियेजात ॥ २८

रमैनी ४०.

आँदम आदि सुधी नहीं होई। मामाहवा कहांते आई ॥ तब नहीं होते तुरुक औ हिंदू । मांयके रुधिर पिताके बिंदू॥तबनहींहोतेगायकसाई। तब बिसमिल्लाकिनफुरमाई ॥ तब नहिं होते कुल औ- जाती। दोजख वहिस्त कौन उतपाती॥मन मसले की सुधि न जाना।मति भुलान दुई दीन बखाना॥

साखी-सञ्जोगेका गुण रवे । बिजोगेका गुण जाय
जिभ्या स्वारथ कारणे। नरकीन्हे बहुतउपाय २९

रमैनी ४१.

अंबुकी रासि समुद्रकी खाई । रवि शशि कोटि तैतीसो भाई ॥ भवँर जालमें आसन मांडा। चाह- त सुख दुख संग न छाडा ॥ दुखको मर्म न काहू पाया । बहुत भाँतिके जग भरमाया ॥

आपुहि बाउर आपु सयाना । हृदया बसे तेहि राम न जाना ॥

साखी—तेही हँरी तेहि ठाकुर। तेही हरिके दास ॥
ना यम भया न जामिनी। भामिनि चली निरास॥

रमैनी ४२.

जबँ हम रहल रहल नहिं कोई । हमरे माहिं रहल सब कोई॥ कहँहु रामकौन तेरी सेवा । सो समुझाय कहो मोहि देवा ॥ फूर फूर कहेउ मारु सब कोई। झूठेहि झूठा संगति होई ॥ आंधर कहें सबै हम देखा । तहां दिठियार बैठि मुख पेखा ॥यहि विधि कहेउं मानु जो कोई । जस मुख तस जो हृदया होई ॥ कहहिं कबीर हंस मुसकाई। हमरे कहल दुष्ट बहु भाई ॥

रमैनी ४३.

जिन्हँ जिव कीन्ह आपु विश्वासा । नर्क गये तेहि नर्कहि बासा ॥आवत जात न लागे बारा।

काल अहेरी सांझ सकारा ॥ चौदह विद्या पढि समुझावा । अपने मरणकी खबरि न पावा ॥ जाने जीवको परा अँदेसा। झूठहि आयके कहा सँदेसा ॥ संगति छाडि करे असरारा ।उबहे मोट नर्ककर भारा ॥

साखी-गुरुद्रोही सन्मुखी । नारी पुरुष विचार॥ ते नरचौरासी भरमिहैं।जौंलों चंद्र दिवाकार॥४१

रमैनी ४४.

कबहूँ न भयउ संग औ साथा । ऐसेहि जन्म गमायउ आछा ॥ बहुरि न पैहो ऐसो थाना । साधु संगति तुम नहिं पहिचाना ॥ अब तोर होई नर्कमहँ बासा ॥ निसि दिन बसेउ लबारके पासा ॥

साखी-जातें सबनकह देखिया।कहहिंकबीरपुका-र॥चेतव।होयतोचेतिले। नहिं तोदिवसपरतुहैंधार

रमैनी ४५.

हरिणाकुश रावण गौ कंसा । कृष्ण गये सुर नर मुनि बंसा ॥ ब्रह्मा गये मर्म नहिं जाना । बड सब गये जे रहल सयाना ॥ समुझि न परलि रामाकी कहानी । निर्बल दूध कि सर्बक पानी ॥ रहिगौ पंथ थकित भौ पवना । दशों दिशा उजारि भौ गवना ॥ मीन जाल भौ ई संसारा । लोहकी नाव पषाणको भारा ॥ खेवे सबै मर्म हम जानी । तैयों कहै रहे उतरानी ॥
साखी–मछरीमुखजसकेंचुवा । मुसवनमांहगिर-दान ॥ सर्पनमांहिंगहेजुआऐसी । जातदेखीसब-नकीजान ॥ ४३ ॥

रमैनी ४६.

बिनसे नाग गरुड गलि जाई । बिनसे कपटी औ सत भाई ॥ बिनसे पाप पुण्य जिन्ह कीन्हा । बिनसे गुण निर्गुण जिन्ह चीन्हा ॥ बिनसे अग्नि पवन औ पानी । बिनसे सृष्टि कहां लों गनी ॥

विष्णु लोक बिनसे छिनमांही । हौं देखा परलय की छांही ॥

साखी-मच्छरूपमाया भई । जबरहि खेले अहेर ॥
हरि हर ब्रह्मा न ऊबरे । सुर नर मुनि केहि केर ४४

रमैनी ४७.

जरासिंधु शिशुपाल संघारा । सहस्रार्जुन छलसो मारा ॥ बड छल रावणसो गौ बीति । लंका रहल कंचनकी भीति ॥ दुर्योधन अभिमाने गयऊ । पंडव केर मर्म नहिं पयऊ ॥ मायाके डिंभ गयल सब राजा । उत्तम मध्यम बाजन बाजा ॥ छौ चकवे बीति धरणि समाना ॥ एकौ जीव प्रतीत न आना ॥ कहांलों कहों अचेतहि गयऊ । चेत अचेत झगरा एक भयऊ ॥

साखी-ई माया जग मोहनी। मोहिन सब जगझारि
हरिचंद सत्तके कारणे। घर घर सोग बिकाय ४५

रमैनी ४८.

मानिकपुरहि कबीर बसेरी । महति सुनो शेष तकिकेरी ॥ ऊजो सुनी यवनपुरथाना । झूसी सुनी पीरन को नामा॥एकइस पीर लिखे तेहि ठामा। खतमा पढे पैगम्बर नामा॥सुनत बोल मोहिं रहा न जाई । देखि मुकबां रहा भुलाई॥ हबीब और नबीके कामा । जहाँलों अमल सो सबै हरामा॥ साखी-शेषअकर्दी शेषसकर्दी।मानहु बचन हमार आदि अंत औ युग युग।देखहु दृष्टि पसार ४८॥

रमैनी ४९.

दरकी बात कहो दरवेसा । बादशाह है कौने भेसा ॥ कहां कूंच कहां करे मुकामा । कौन सुरतिकों करों सलामा॥ मैं तोहिं पूछों मूसलमाना॥ लाल जर्दकी नाना बाना । काजी काज करहु तुम कैसा। घर घर जबह करावहु बैसा ॥ बकरी

मुरगी किन्ह फुरमाया । किसके कहे तुम छुरी चलाया ॥ दर्द न जानहु पीर कहावहु । बैता पढि पढि जग भरमावहु ॥ कहहिं कबीर एक सयर बोहावे । आप सरीखा जग कबुलावे ॥

साखी-दिनको रहतहैं रोजा । राति हनत हैं गाय॥ यह खून वह बंदगी । क्योंकर खुसी खुदाय॥४७॥

रमैनी ५०.

कँह इत मोहिं भयल जुग चारी । समुझत नाहिं मोर सुत नारी ॥ वंस आगि लगि वंसहि जरिया । भरमभूलनरधन्धेपरिया ॥ हस्तिके फंदे हस्ती रहई । मृगाके फंदे मृगा परहई ॥ लोहे लोह जस काटु सयाना । त्रियाके तत्त्व त्रिया पहिचाना ॥

साखी-नारि रचंते पुरुप है । पुरुप रचंते नार ॥ पुरुपहि पुरुपा जो रचे । ते बिरले संसार ॥४८॥

रमैनी ५१.

ओंकार नाम अकहुवा भाई । ताकर कहा रमैनी गाई ॥ कहैं तातपर्य एक ऐसा । जस पंथी बोहित चढि वैसा ॥ है कछु रहनिगहनिकी बाता । बैठा रहे चला पुनि जाता ॥ रहे बदन नहिं स्वांग सुभाऊ । मन अस्थिर नहिं बोले काहू ॥

साखी-तन राता मन जातहै।मनराता तन जाय॥ तन मन एकै ह्वै रहे। तब हंस कबीर कहाय॥४९

रमैनी ५२.

जेहि कारण शिव अजहुँ वियोगी । अंग-विभूति लाय भौ योगी ॥ शेष सहस मुख पार न पावे । सो अब खसम सही समुझावे ॥ ऐसी विधि जो मोकहँ ध्यावे । छठये मांह दरस सो पावे ॥ कौनेहु भाव देखाई देहों । गुप्तहि रहो सुभाव सब लेहों ॥

साखी-कँहहि कबीर पुकारिके।सबका उहै विचार
कहा हमार माने नहीं । किमि छूटे भ्रमजार५०

रमैनी ५३.

मँहादेव मुनि अंत न पाया । उमा सहित उन जन्म गमाया ॥ उनहूंते सिध साधक होई । मन निश्चय कहु कैसे होई ॥ जब लग तनमें आहै सोई । तबलग चेति न देखे कोई ॥ तब चेतिहो जब तजिहो प्राना । भया अयान तब मन पछताना ॥ इतना सुनत निकट चलि आई । मन विकार नहिं छूटे भाई ॥

साखी-तीनँलोकमों आयके।छूटिनकाहुकिआस।
एकै अंधरे जगखाया। सबका भया निराश५१

रमैनी ५४.

मॅरि गौ ब्रह्माकाशको वासी । शिव सहित मूये अविनासी ॥ मथुराको मरि गौ कृष्ण गोवारा । मरि मरि गये दशों अवतारा ॥ मरि मरि गये

भक्ति जिन्ह ठानी । सगुणमा निर्गुण जिन्ह आनी ॥

साखी-नाँथमछंदरबांचेनहीं।गोरखदत्तऔव्यास कहहिंकबीरपुकारिके।ईसबपरेकालकीफांस॥८२

रमैनी ५५.

गँये राम औ गये लछमना।संग न गई सीता ऐसी धना॥जात कौरवै लागु न बारा।गये भोज जिन्हसाजलधारा॥ गये पंडव कुन्ती ऐसी रानी। गये सहदेव जिन बुधि मति ठानी॥सर्व सोनेकी लंक उठाई। चलत बार कछु संग न लाई॥ जाकर कुरिया अंतरीक्ष छाई।सो हरिचंद देखल नहिं जाई॥ मूरख मनुसा बहुत संजोई। अपने मरे औरलग रोई॥ ई न जाने अपनेउ मरि जैबे। टका दश बिढै और ले खैबे॥

साखी-अपनीअपनीकरिगये। लागिनकाहुकसा-थ॥अपनीकरिगयेरावण।अपनीदशरथनाथ।८३

रमैनी ५६.

दिनै दिन जरे जलनीके पांऊ। गाडे जाय न उमगे काहू॥ कंधन देई मस्करी करई। कहुधौ कौन भांति निस्तरई ॥ अकर्म करै औ कर्मको धावे। पढि गुनि वेद जगत समुझावे॥ छूछे परै अकारथ जाई। कहहिं कबीर चित चेतहु भाई ॥ ५४ ॥

रमैनी ५७.

कृतिया सूत्र लोक एक अहई। लाख पचासकी आयु कहई ॥ विद्या वेद पढे पुनि सोई। वचन कहत परतक्षे होई ॥ पैठी बात विद्याकी पेटा। बाहुक भरम भया संकेता ॥

साखी–खर्गजोजनकोतुमपरे। पाछे अगमअपार॥ बिनपरचैकसजानिहो। कबीरझूठाहैहंकार ॥५५॥

रमैनी ५८.

तैं सुत मान हमारी सेवा। तोकहँ राज देउं हौं देवा ॥ अगम दुगम गढ देउं छुडाई। औरो बात

सुनहु कहुं आई ॥ उतपति परलय देउं देखाई। करहु राज सुख विलसो जाई ॥ एकौ बार न ह्वै है वाको । बहुरि जन्म न होइहै ताको॥ जाय पाप सुख होइ है घना । निश्चय वचन कबीरके माना ॥

साखी-साधुसंततेईजना। जिन्हमानलबचनहमा-र॥आदिअंतउत्पतिप्रलय।देखहुदृष्टिपसार ५६॥

रमैनी ५१.

चढत चढावत भंडहर फोरी।मन नहिं जाने केकरि चोरी॥चोर एक मूसे संसारा । विरलाजन कोइ बूझन हारा ॥ स्वर्ग पताल भूम्य ले वारी। एकै राम सकल रखवारी ॥

साखी—पाहनह्वैह्वैसबगये । बिनभीतिनकेचित्र॥ जासो कियेउ मिताइया।सो धनभया न हित्र५७

रमैनी ६०.

छाँडहु पति छाडहु लबराई।मन अभिमान टूटि तब जाई ॥ जिन ले चोरी भिक्षा खाई।सो बिरवा पलुहावन जाई ॥ पुनि संपति औ पतिको धावे । सो बिरवा संसार ले आवे ॥

साखी–झूंठ झुठाकै डारहू । मिथ्या यह संसार॥
तेहिकारण मैं कहत हौं। जाते होउ उबार॥५८॥

रमैनी ६१.

धर्म कथा जो कहतहि रहई । लाबरि उठि जो प्रातहि कहई॥लाबरि बिहाने लाबरि संझा। एक लाबरि बसे हृदया मंझा ॥ रामहुकेर मर्म नाहिं जाना । ले मति ठानिनि वेद पुराना ॥ वेदहुकेर कहल नाहिं करई । जरतइ रहै सुस्त नहिं परई ॥

साखी–गुणातीत के गावते।आपुहि गये गंवाय ॥
माटीकातनमाटिमिलिगो।पवनहिपवनसमाय ॥

रमैनी. ६२.

जो तूँ करता वर्ण विचारा। जन्मत तीनि दंड अनुसारा॥ जन्मत शूद्र मुये पुनि शूद्रा॥ कृतम जनेउ घालि जग धंदा॥ जो तू ब्राह्मण ब्राह्मणीको जाया। और राह दे काहे न आया॥ जो तू तुरुक-तुरुकनीको जाया। पेटहि काहे न सुन्नति कराया॥ कारी पियरी दूहहु गाई। ताकर दूध देउ-बिलगाई॥ छाडु कपट नर अधिक सयानी। कहहिं कबीर भजु शारङ्गपानी॥

रमैनी ६३.

नाँना रूप वर्ण एक कीन्हा। चारि वर्ण वै काहु न चीन्हा॥ नष्ट गये कर्ता नाहिं चीन्हा। नष्ट गये औरहि मन दीन्हा। नष्टगये जिन्ह वेदबखाना। वेदपढे पर भेद न जाना॥ बिमलख करें नैन नाहिं सूझा। भया अयान तब कुछहु न बूझा॥

साखी—नाँना नाच नचायके। नाचे नटके भेष ॥
घटघटहैअविनाशी । सुनहु तकी तुम शेष ६० ॥

रमैनी ६४.

काया कंचन जतन कराया । बहुत भांतिके मन पलटाया ॥ जो सौबार कहों समुझाई । तैयो धरो छोरि नहिं जाई ॥ जन के कहें जन रहि जाई । नौ निद्धी सिद्धी तिन पाई ॥ सदा धर्म जाके हृदया बसई । राम कसौटी कसतहि रहई ॥ जोरे कसावे अंते जाई । सो बाउर आपुहि बौराई ॥
साखी-ताँतेपरीकालकीफाँसी। करहुनआपनसोच
जहांसंततहांसंतसिधावे।मिलिरहे धूतहिधूत ६१

रमैनी ६५.

अँपने गुणको अवगुण कहहु । इहै अभाग जो तुम न विचारहु ॥ तू जियरा बहुतें दुख पावा । जल बिनु मीन कौन सच पावा ॥ चातक जलहल आसे पासा। स्वाँगधरे भवसागरकी आसा॥ चात-

क जल हल भरे जो पासा। मेघ न बरसे चले उदासा॥ राम नाम इहै निजु सारा॥ औरो झूठ सकल संसारा॥ हरि उतंग तुम जाति पतंगा। यमघट कियेहु जीवको संगा। किंचित हैं सपने निधि पाई। हिये न समाय कहां धरों छिपाई॥ हिये न समाय छोरि नहिं पारा। झूठा लोभ किछउ न विचारा॥ सुमिरि कीन्ह आपु नहिं माना। तरुवर तर छर छार है जाना। जिव दुर्मति डोलें संसारा। ते नहिं सूझे वार न पारा॥

साखी—अंधे भया सब डोलें। कोई न करे विचार। कहाहमारमाने नहीं। कैसे छूटे भ्रमजार॥६२॥

रमैनी ६६.

सोई हित बंधू मोहिं भावे॥ जात कुमारग मारग लावे॥ सो सयान मारग रहि जाई। करे खोज कबहूँ न भुलाई॥ सो झूँठा जो सुतको तजई। गुरुकी दया रामते भजई॥ किंचितहै एक

तेज भुलाना । धन सुत देखि भया अभिमाना ॥
साखी-दियानखताना।कियापयाना । मंदिर भया
उजार ॥मरिगये सो मरिगये।बांचे बाचनहार ६३

रमैनी ६७.

देहै हलाय भक्ति नहिं होई । स्वांग धरे नर
बहुविधि जोई ॥ धींगी धींगा भलो न माना।
जो काहू मोहि हृदया जाना ॥ मुख कछु और
हृदय कछु आना। सपनेहु काहु मोहि न जाना ॥
ते दुख पैहैं ई संसारा । जो चेतहु तो होय
उबारा ॥ जो गुरु किंचित निंदा करई । सूकर
श्वान जन्मते धरई ॥
साखी-लखचौरासी जीव जंतुमें । भटकि २ दु-
खपाव ॥ कहैं कबीर जो रामहि जाने । सो
मोहिं नीके भाव ॥

रमैनी ६८.

तेहि वियोगते भयउ अनाथा । परेउ कुंजवन
पावे न पंथा ॥ वेदो नकल कहै जो जाने । जो

समझे सो भलो न माने ॥ नटवर विद्या खेल जो जाने । तेहि गुणको ठाकुर भल माने ॥ उहै जो खेले सब घटमाहीं । दूसरके कछु लेखा नाहीं ॥ भलो पोच जो अवसर आवे । कैसहुके जन पूरा पावे ॥

साखी-जेकर शर तेहि लागे । सोइ जानेगा पीर ॥ लागेतो भागे नहीं । सुखसिंधु निहार कबीर ॥

रमैनी ६९.

ऐसा योग न देखा भाई । भूला फिरे लिये गफिलाई ॥ महादेवको पंथ चलावे । ऐसो बडो महंत कहावे ॥ हाट बजारे लावे तारी । कच्चा सिद्ध माया पियारी ॥ कब दत्ते मवासी तोरी । कब शुकदेव तो पाचे जोरी ॥ नारद कब बंदूक चलाया । व्यासदेव कब बंब बजाया ॥ करहिं लराइ मतिके मंदा । ई अतीत कि तर-

कस बंदा ॥ भये विरक्त लोभ मन ठाना । सोना पहिरि लजावे बाना ॥ घोरा घोरी कीन्ह बटोरा । गांव पाय जस चले करोरा ॥

साखी-सुंदरी न सोहे । सनकादिकके साथ ॥
कबहुँक दाग लगावे । कारी हांडी हाथ ॥६९॥

रमैनी ७०.

बोलना कासो बोलिय रे भाई । बोलतहीं सब तत्त्व नसाई ॥ बोलत बोलत बाढु बेकारा । सो बोलिये जो पडे विचारा॥मिलहि संत बचन दुइ कहिये । मिलहि असंत मौन होय रहिये ॥ पंडितसो बोलिये हितकारी । मूरख सो रहिये झखमारी ॥ कहहिं कबीर अर्ध घट डोले । पूरा होय विचार ले बोले ॥

रमैनी ७१.

सोगं बधावा जिन्ह समके मानां । ताकी बात इंद्रहुनहिं जाना ॥ जटा तोरि पहिरावे सेली ।

योग युक्तिकी गर्भ दुहेली ॥ आसन उडाय कान बडाई । जैसे कौवा चील्ह मिडराई ॥ जैसी भीत तैसी है नारी । राजपाट सब गने उजारी ॥ जैसे नरक तस चंदन जाना । जस बाउर तस रहे सयाना ॥ लपसी लौंग गने एकसारा । खांड छाडि मुख फांके छारा ॥

साखी–ईहै विचार विचारते।गये बुद्धि बलचेत॥ दुइ मिलि एकै होय रहा। मैं काहि लगाऊँ हेत ॥

रमैनी ७२.

नाँरि एक संसारहि आई । माय न वाके बापहि जाई ॥ गोड न मूंड न प्राण अधारा । जामें भभरि रहा संसारा ॥ दिना सातले उनकी सही । बुद अदबुद अचरज का कही ॥ वाहिक बंदन करें सब कोई।बुद अदबुद अचरज बडहोई।

साखी-मूँस बिलाई एक सँग।कहु कैसे रहि जाय। अचरजएकदेखोहोसंतो। हस्तीसिंघहिखाय६८॥

रमैनी ७३.

चली जात देखी एक नारी । तर गागरि ऊपर पनिहारी ॥ चली जात वह बाटहि बाटा । सोव-नहारके ऊपर खाटा ॥ जाडनमरे सपेदी सौरी । खसम न चीन्हे धरणि भइ बौरी॥ सांझ सकार दियले बारे । खसमहि छाडि संबरे लगवारे ॥ वाहीके रस निसदिन राची । पियासों बात कहै नहिं सांची ॥ सोवत छाँडि चली पिय अपना । ई दुख अबधौं कहे केहिसना ॥

साखी-अपनीजांघउघारिके।अपनी कहीनजाय॥
की चित जाने आपना । की मेरो जन गाय॥६९॥

रमैनी ७४.

तहियाँ होते गुप्त अस्थूल न काया । न ताके सोग ताकि पै माया ॥ कवल पत्र तरंग एक माहीं । संगहि रहे लिप्त पै नाहीं ॥ आस ओस अंडमा रहई । अगणित अंड न कोई कहई ॥ निराधार अधारले जानी ।

राम नाम ले उचरी बानी ॥ धर्म कहै सब पानी अहई । जातिके मन पानी अहई ॥ ढोर पतंग सरे घरियारा । तेहि पानी सब करे अचारा ॥ फंद छोडि जो बाहर होई । बहुरि पंथ नहिं जोहै सोई ॥

साखी-भँरमका बांधा यह जग। कोई न करे विचार ॥ एक हरिकीभक्तिजानेबिना । भौ बूडिमुवा संसार ॥ ७० ॥

रमैनी ७१.

तेहि साँहबके लागहु साथा । दुइ दुख मेटिके होहु सनाथा ॥दशरथ कुल अवतरि नहिं आया ।नहिं लंकाके राव सताया ॥ नहिं देवकी के गर्भहि आया । नहीं यशोदा गोद खेलाया ॥ पृथ्वी रवन धवन नहिं करिया ।पैठि पताल नाहिं बलि छलिया ॥नाहिं बलिराजा सो मांडल रारी । नहिं हरणाकुश बधल पछारी ॥ बराहरूप धरणि नहिं धरिया । क्षत्री मारि निक्षत्री नहिं करिया ॥

पियारा ॥ त्रिया पुरुष कछु कथो न जाई।सर्ब रूप जग रहा समाई ॥ रूप निरूप जाय नहिं बोली। हलुका गरुवा जाय न तौली ॥ भूख न तृषा धूप नहिं छाहीं । दुख सुख रहित रहे तेहि माहीं ॥

साखी—अपरंपरं रूप मगु रंगी।आगे रूप निरू-पन भाय ॥ बहुत ध्यानके खोजिया । नहिं तेहि संख्या आय ॥ ७३ ॥

रमैनी ७८.

मानुष जन्म चूकेहु अपराधी। यहि तनकेरि बहुत है साझी॥ तात जननि कहैं पुत्र हमारा। स्वारथ जानि कीन्ह प्रतिपाला ॥ कामिनि कहै मोर पिउ आही । बाघिनीरूप गिरासा चाही॥ सुतहु कलत्र रहैं लौलाई। यमकी नांई रहें मुख बाई॥ काग गि होउ मरण विचारे । सूकर

नहिं गोवर्धन कर गहि धरिया । नहिं ग्वालन संग बन बन फिरिया ॥ गंडुकी शालिग्राम नाहिं कूला । मच्छ कच्छ होय नहिं जल डोला ॥ द्वारावती शरीर नहिं छाडा । ले जगन्नाथ पिंड नहिं गाडा ॥

साखी—कँहहि कबीर पुकारिके।वै पंथे मति भूल॥ जेहि राखेउ अनुमानकै । सो थूल नहीं अस्थूल ॥ ७१ ॥

रमैनी ७६.

माया मोह सकल संसारा । इहै विचार न काहु विचारा ॥ माया मोह कठिन है फंदा। करै विवेक सोई जन बंदा ॥ राम नाम ले बेरा धारा । सो तो ले संसारहि पारा ॥

साखी—राम नाम अतिदुर्लभ।औरेते नहिं काम॥ आदि अंत औ युग युग।मोहि रामहीते संग्राम७२

रमैनी ७७.

एकै काल सकल संसारा । एक नाम है जगत

पियारा ॥ त्रिया पुरुष कछु कथो न जाई।सर्व रूप जग रहा समाई ॥ रूप निरूप जाय नहिं बोली । हलुका गरुवा जाय न तौली ॥ भूख न तृषा धूप नहिं छाहीं । दुख सुख रहित रहे तेहि माहीं ॥

साखी—अँपरंपरं रूप मगु रंगी।आगे रूप निरू-पन भाय ॥ बहुत ध्यानके खोजिया । नहिं तेहि संख्या आय ॥ ७३ ॥

रमैनी ७८.

मानुष जन्म चूकेहु अपराधी। यहि तनकेरि बहुत है साझी॥ तात जननि कहैं पुत्र हमारा। स्वारथ जानि कीन्ह प्रतिपाला ॥ कामिनि कहै मोर पिउ आही । बाघिनीरूप गिरासा चाही॥ सुतहु कलत्र रहैं लौलाई । यमकी नांई रहें मुख बाई ॥ काग गि दोउ मरण विचारे । सूकर

श्वान दोउ पंथ निहारे ॥ अग्नि कहे मैं ई तन जारों। पानी कहे मैं जरत उबारों ॥ धरती कहे मोहि मिलि जाई । पवन कहे संग लेउं उडाई॥ तेहिं घरको घर कहे गँवारा।सो बैरी होय गले तुम्हारा ॥ सो तन तुम अपनके जानी। विषय स्वरूप भूलेउ अज्ञानी ॥

साखी–ईतनेतनकेसाझिया।जन्मोंभरिदुखपाय॥
चेततनाहिंमुग्धनर बोरे।मोरमोरगोहराय॥७४॥

रमैनी ७५.

बढंवत बढी घटावत छोटी।परखतखरी परखावत खोटी॥केतिक कहों कहां लो कही। औरो कहों पडे जो सही ॥ कहे विना मोहिं रहा न जाई । विरही लेले कूकुर खाई ॥

साखी–खाते खाते युग गया।बहुरि न चेतहु आय
कहहिं कबीर पुकारिकै।येजीव अचेतहिजाय७५

रमैनी ८०.

बहुतक साहस करु जिय अपना।तेहि साहेब से भेंट न सपना॥खरा खोट जिन नहिं परखाया। चहत लाभ तिन्ह मूल गमाया॥ समुझि न परलि पातरी मोटी।ओछी गांठि सबै भौ खोटी॥ कहहि कबीर केहि देहो खोरी । जब चलि हो झी झी आसा तोरी॥देवँ चरित्र सुनहु हो भाई। जो ब्रह्मासो धियेउ नसाई॥

रमैनी ८१.

दूजै कहों मँदोदरि तारा । जेहि घर जेठ सदा लगवारा॥ सुरपति जाय अहिल्या छली। सुर गुरु घरणी चंद्रमें हरी॥ कहहिं कबीर हरिके गुण गाया। कुंतिहि कर्णकुंवारेहि जाया॥८१॥

रमैनी ८२.

सुखके वृक्ष एक जगत्र उपाया। समुझि न परलि विषय कछु माया॥ छौ क्षत्री पत्री युग

चारी । फल दुइ पाप पुण्य अधिकारी ॥ स्वाद अनंत कछु बर्णि न जाई । कारि चारित्रै सो ताहि समाई ॥ जो नटवट साज साजिया । जो खेले सो देखे बाजिया ॥ मोहा बापुरा युक्ति न देखा । शिवकी शक्ति बिरंचि न पेखा ॥

साखी–परदेपरदेचलिगई।समुझि परी नहिंबानि। जो जाने सो बांचि है।नहिं होत सकलकीहानि॥

रमैनी ८३.

क्षत्री करे क्षत्रिया धर्मा । सवाई वाके बाढे कर्मा ॥ जिन्ह अबधू गुरुज्ञान लखाया । ताकर मन ताहि ले धाया॥क्षत्री सो जो कुटुमसो जूझे। पांचो मेटि एकके बूझे ॥ जो मारि जीव प्रति पाले । देखत जन्म आपनो हारे ॥ हारे करै निसाने घाऊ । जूझि परे तहां मन्मथ राऊ ॥

साखी–मन्मथ मरे न जीवेजीवहि मरण नहोय॥ शून्य सनेही राम विनु । चले अपनपो खोय ७७

रमैनी ८४.

ये जियँरा तैं अपने दुखहि सम्हार । जेहि दुख व्यापि रहा संसार ॥ माया मोह बंधा सब लोई । अलप लाभ मूल गौ खोई ॥ मोर तोर में सबै बिगूचा । जननी गर्भ वोदमा सूता ॥ बहुतक खेल खेलैं बहुरूपा । जन भँवरा अस गये बहूता ॥ उपजि बिनसि फिर जुइनी आवे । सुखको लेश सपनेहु नहिं पावे ॥ दुख संताप कष्ट बहु पावे । सो न मिला जो जरत बुझावे ॥ मोर तोरमें जरे जग सारा । धिग स्वारथ झूठाहंकारा ॥ झूठी आस रहा जग लागी । इन्हते भागि बहुरि पुनि आगी ॥ जेहि हितके राखेउ सब लोई । सो सयान बांचा नहिं कोई ॥

साखी—आपुं आपु चेतेनहीं । कहो तो रुसवा होय । कहहिं कबीर जो आपुनजागे । अस्तिनिरस्ति नहोय ॥ ७८ ॥

बीजकमूल ।

शब्द १.

संतो भँक्ति सतोगुर आनी ॥

नारी एक पुरुष दुइ जाया।बूझो पंडित ज्ञानी॥ पाहन फोरि गंग एक निकरी । चहुँ दिशि पानी पानी ॥ तेहि पानी दुइ पर्वत बूडे । दरिया लहर समानी॥ उडि माखी तरवरतो लागी। बोले एकै बानी॥ वह माखीको माखा नहहीं। गर्भ रहा बिनु पानी ॥ नारी सकल पुरुष वे खाये । ताते रहे अकेला ॥ कहहिं कबीर जो अबकी बूझे । सोई गुरु हम चेला ॥ १ ॥

शब्द २.

संतो जाँगत नींद न कीजे ॥

काल न खाय कल्प नाहिं व्यापे । देह जरा नाहिं छीजे ॥ उलटी गंग समुद्रहि सोखे । शशि औ सूरहि ग्रासे ॥ नौ ग्रह मारिहियोगिया बैठो । जलमें

बिम्ब प्रकासे ॥ बिनु चरणनको दहुँ दिशि धावे । बिनु लोचन जग सूझे ॥ संशय उलटि सिंघको ग्रासे । ई अचरज कोइ बूझे ॥ औंधे घडा नहिं जल बूडे । सीधेसो जल भरिया ॥ जेहि कारण नर भिन्न भिन्न करे । सो गुरु प्रसादते तरिया ॥ बैठि गुफामें सब जग देखो । बाहर किछुउनसूझे ॥ उलटा बाण पारधिहि लागे । सूर होय सो बूझे ॥ गायन कहे कबहुँ नहिं गावे । अनबोला नित गावे ॥ नटवट बाजा पेखनी पेखे। अनहद हेत बढावे ॥ कथनी बदनी निजुकै जोवे । ई सब अकथ कहानी ॥ धरती उलटि आकाशहि बेधे । ई पुरुषनकी बानी ॥ बिना पियालाअमृतअंचवे । नदी नीर भरि राखे ॥ कहैंकबीरसोयुगयुगजीवे । जोरामसुधारसचाखे ॥ २ ॥

शब्द ३.

संतो घरमें झगरा भारी ॥ राति दिवस मिलि उठि

उठि लागे । पांच ढोटा एक नारी ॥ न्यारो न्यारो भोजन चाहैं । पांचो अधिक सवादी ॥ कोई काहुका हटा न माने । आपुहि आप मुरादी दुर्मतिकेर दोहागिन मेटे । ढोटेहि चाप चपेरे ॥ कहहिंकबीरसोईजनमेरा । जोघरकीरारिनिबेरे ३

शब्द ४.

संतो देखत जग बौराना ॥ सांच कहों तो मारन धावे । झूँठे जग पतियाना ॥ नेमी देखा धर्मी देखा । प्रात करे अस्नाना ॥ आतम मारि पाषाणहि पूजे । उनमें किछुउ न ज्ञाना ॥ बहुतक देखा पारि औलिया । पढें कितेब कुराना ॥ के- मुरीद ततबीर बतावें । उनसें उहै जो ज्ञाना ॥ आसन मारि डिंभ धरि बैठे । मनमें बहुत गुमा- ना ॥ पीतर पाथर पूजन लागे । तीरथ गर्भ भुला- ना ॥ टोपी पहिरे माला पहिरे । छाप तिलक अनुमाना ॥ साखी शब्दै गावत भूले । आतम

खबरि न जाना ॥ हिंदु कहैं राम मोहिं पियारा। तुरुक कहैं रहिमाना ॥ आपुसमें दोउ लरि लरि मूये। मर्म न काहू जाना ॥ घर घर मंतर देत फिरतुहैं। महिमाके अभिमाना ॥ गुरू सहित शिष्य सब बूडे। अंतकाल पछताना ॥ कहहिं कबीर सुनो हो संतो। ई सब भरम भुलाना ॥ केतिक कहों कहा नाहिं माने। सहजै सहज समाना ॥ ४ ॥

शब्द ५.

संतो अचरंज एक भौ भारी। कहों तो को पतियाई ॥ एकै पुरुष एक है नारी। ताकर करहु विचारा ॥ एकै अंड सकल चौरासी। भरम भुला संसारा ॥ एकै नारी जाल पसारा। जगमें भया अंदेसा ॥ खोजत खोजत काहु अंत न पाया। ब्रह्मा विष्णु महेसा ॥ नागफांस लिये घट भीतर। मूसेनि सब जग झारी ॥ ज्ञान खडग बिनु सब जग जूझे। पकरि न काहू पाई ॥ आपै मूल फूल

फुलवारी । आपहि चुनि चुनि खाई ॥ कहहिं कबीर तेई जन उबरे। जेहि गुरु लियो जगाई ॥

शब्द ६.

संतो अचरज एक भौ भारी। पुत्र धइल महतारी ॥ पिताके संग भई बावरी । कन्या रहल कुँवारी ॥ खसमहि छाडि ससुर संग गौनी । सो किन लेहु विचारी ॥ भाईके संग सासुरे गौनी। सासुहि सावत दीन्हा ॥ ननँद भौज परपंच रचो है। मोर नामकहि लीन्हा ॥ समधीके सँग नाहीं आई । सहज भई घरबारी ॥ कहहिं कबीर सुनो हो संतो । गुरुप जन्म भौ नारी ॥ ६ ॥

शब्द ७.

संतो कहौं तो को पतियाई । झूठ कहत सांच बनि आई ॥ लौके रतन अबेध अमोलिक । नहिं गाहक नहिं सांई ॥ चिमिक चिमिक चिमकै दृग दहुँ दिश। अर्ब रहा छिरियाई ॥ आपै गुरु कृपा

कछु कीन्हा। निर्गुण अलख लखाई ॥ सहज समाधि उन्मनि जागे।सहज मिले रघुराई॥जहां जहां देखों तहां तहां सोई। मन मानिक बेधो हीरा ॥ परमतत्त्व गुरुसो पावे । कहैं उपदेश कबीरा ॥

शब्द ८.

संतो आवे जाय सो माया ॥

है प्रतिपाल काल नाहिं वाके। ना कहुं गया न आया ॥ का मकसूदन मच्छ कच्छ न होई। शंखासुर न संघारा है॥दयाल द्रोह नाहिं वाके। कहहु कौनको मारा॥वै कर्ता नहिं बराह कहाये। धरणि धऱ्यो नहिं भारा॥ ई सब काम साहेबके नाहीं। झूठे कहैं संसारा ॥ खंभ फोरि जो बाहर होई। ताहि पतीजे सब कोई ॥ हरणाकुश नख उदर बिदारा।सो कर्ता नहिं होई॥बावन रूप न बलिको जाचे।जो जाचे सो माया॥बिना विवेक

सकल जग भरमे । माये जग भरमाया ॥ परशुराम जग क्षत्री नहिं मारे । ई छल माया कीन्हा॥सतगुरु भेद भक्ति नहिं जाने । जीवहि मिथ्या दीन्हा ॥ सिर्जनहार न व्याही सीता । जल पषाण नहिं बंधा ॥ वे रघुनाथ एककै सुमिरे । जो सुमिरे सो अंधा ॥ गोपी ग्वाल न गोकुल आया । करतैं कंस न मारा ॥ है मेहरवान सब हिनको साहेब । ना जीता ना हारा ॥ वे कर्ता नहिं बौद्ध कहावे । नहीं असुर संघारा ॥ ज्ञानहीन कर्ताके भरमे । माये जग भर्माया ॥ वै कर्ता नहिं भये निकलंकी । नहिं कालिंगहि मारा॥ई छल बल सब माया कीन्हा। जत्त सत्त सब टारा॥दश अवतार ईश्वरी माया। कर्ताके जिन पूजा ॥ कर्तहिं कबीर सुनो हो संतो उपजै खपै जो दूजा ॥ ९ ॥

शब्द ९.

संतो बोले ते जग मारे ॥

अनबोलेते कैसक बनि है । शब्दहि कोइ न विचारे ॥ पहिले जन्म पुत्रका भयऊ । बाप जन्मिया पाछे ॥ बाप पूतकी एकै नारी । ई अचरज काइ काछे ॥ डुंदुर राजा टीका बैठे । बिषहर करें खबासी॥श्वान बापुरा धारिन ढाकनों बिल्ली घरमें दासी॥कार डुकार कार कारि आगे । बैल करें पटवारी॥कहहि कबीर सुनो हो संतो । भैसे न्याव निबेरी ॥ ९ ॥

शब्द १०.

संतो राह दुनो हम दीठा ॥

हिंदू तुरुक हटा नाहिं माने । स्वाद सबनको मीठा॥हिंदू बरत एकादशी साधे । दूध सिंघारा सेती॥अन्नको त्यागे मनको न हटकोपार न करे सगौती । तुरुक रोजा निमाज गुजारे । बिसमिल

बागपुकारे॥इनको बहिस्त कहांसे होवै।जो सांझै मुरगी मारे॥हिंदुकी दया मेहर तुरकनकी । दोनों घटसो त्यागी॥ ई हलाल वै झटका मारें।आग दुनों घर लागी॥हिंदू तुरुककी एक राह है।सत-गुरु सोइ लखाई ॥ कहहिं कबीर सुनोहो संतो। राम न कहूं खुदाई ॥ १० ॥

शब्द ११.

संतो पांडे निपुण कसाई ॥

बकरा मारि भैंसापर धावें । दिलमें दर्द न आई ॥ करि अस्नान तिलक दे बैठे । विधिसो देवि पुजाई ॥ आतमराम पलकमें बिनसे। रुधिरकी नदी बहाई । अति पुनीत ऊँचे कुल कहिये।सभामाहिं अधिकाई॥इन्हते दीक्षा सब कोई मांगे । हँसी आवे मोहि भाई॥पाप कटनको कथा सुनावें । कर्म करावें नीचा ॥ हम तो दुना परस्पर देखा । यम लाये हैं धोखा ॥ गाय

वधेते तूरुक कहिये । इनते वै क्या छोटे॥कहहिं कबीर सुनो हो संतो।कलिमा ब्राह्मण खोटे॥११॥

शब्द १२.

संतो मतै मातु जन रंगी ॥

पियत पियाला प्रेम सुधारस । मतवाले सत-संगी ॥ अर्धे ऊर्धे भाठी रोपिनि । लेत कसारस गारी ॥ मूँदे मदन काटि कर्म कस्मल । संतति चुवत अगारी ॥ गोरखदत्त वशिष्ठ व्यास कपि । नारद शुकमुनि जोरी॥बैठेसभा शंभु सनकादिक । तहँ फिरे अधर कटोरी ॥ अंबरीष औ जाज्ञ जनक जड । शेष सहस मुख फाना ॥ कहांलों गनों अनंत कोटिलों । अमहल महल दिवाना॥ ध्रुव प्रहलाद बिभीषण माते।माती शबरी नारी॥ निर्गुण ब्रह्म माते बिंद्रावन।अजहूँ लागु खुमारी॥ सुर नर मुनि जति पीर औलिया । जिनरे पिया

बागपुकारे॥इनको बहिस्त कहांसे होवै।जो सांझै मुरगी मारे॥हिंदुकी दया मेहर तुरकनकी । दोनों घटसो त्यागी॥ ई हलाल वै झटका मारें।आग दुनों घर लागी॥हिंदू तुरुककी एक राह है।सतगुरु सोइ लखाई ॥ कहहिं कबीर सुनोहो संतो॥ राम न कहूं खुदाई ॥ १० ॥

शब्द ११.

संतो पांडे निपुण कसाई ॥

बकरा मारि भैंसापर धावें । दिलमें दर्द न आई ॥ करि अस्नान तिलक दे बैठे । विधिसो देवि पुजाई ॥ आतमराम पलकमें बिनसे। रुधिरकी नदी बहाई । अति पुनीत ऊँचे कुल कहिये।सभामाहिं अधिकाई॥इन्हते दीक्षा सब कोई मांगे । हँसी आवे मोहि भाई॥पाप कटनको कथा सुनावें । कर्म करावें नीचा ॥ हम तो दुना परस्पर देखा । यम लाये हैं धोखा ॥ गाय

वधेते तूरुक कहिये । इनते वै क्या छोटे॥कहहिं कबीर सुनो हो संतो।कलिमा ब्राह्मण खोटे॥११॥

शब्द १२.

संतो मते मातु जन रंगी ॥

पियत पियाला प्रेम सुधारस । मतवाले सतसंगी ॥ अर्धे ऊर्धे भाठी रोपिनि । लेत कसारस गारी ॥ मूँदे मदन काटि कर्म कस्मल । संतति चुवत अगारी ॥ गोरखदत्त वशिष्ठ व्यास कपि । नारद शुकमुनि जोरी॥बैठेसभा शंभु सनकादिक। तहँ फिरे अधर कटोरी ॥ अंबरीष औ जाज्ञ जनक जड । शेष सहस मुख फाना ॥ कहँलों गनों अनंत कोटिलों। अमहल महल दिवाना॥ ध्रुव प्रहलाद बिभीषण माते।माती शबरी नारी॥ निर्गुण ब्रह्म माते बिंद्रावन।अजहूँ लागु खुमारी॥ सुर नर मुनि जति पीर औलिया । जिनरे पिया

तिन जाना॥ कहैं कबीर गूँगेकी शक्कर । क्योंकर करे बखाना ॥ १२ ॥

शब्द १३.

राम तेरी माया दुंद्ध मचावे ॥

गति मति वाकी समुझि परे नहिं । सुर नर मुनिहि नचावे ॥ क्या सेमर तेरि शाखा बढाये। फूल अनूपम बानी॥केतेक चातृक लागि रहे हैं। देखत रुवा उडानी ॥ काह खजूर बडाई तेरी । फल कोई नहिं पावे ॥ ग्रीषम ऋतु जब आनि तुलानी । तेरी छाया काम न आवे ॥ आपन चतुर औरको सिखवें । कनक कामिनी सयानी॥ कहहिं कबीर सुनो हो संतो । राम चरण ऋतु मानी ॥ १३ ॥

शब्द १४.

रामुरा संशय गांठि न छूटे।ताते पकरि पकरि यम लूटे ॥ होय कुलीन मिस्कीन कहावे । तू

योगी संन्यासी ॥ज्ञानी गुणी सूर कवि दाता।ये पति किनहुन नासी॥सुमृति वेद पुराण पढें सब। अनुभव भाव न दरसे ॥ लोह हिरण्य होय धौं कैसे । जो नहिं पारस परसे । जियत न तरेहु मुयेका तरिहो । जियतहि जो न तरै ॥गहि परतीत कीन्ह जिन्ह जासो। सोई तहां अमरे॥ जो कछु कियेउ ज्ञान अज्ञाना।सोई समुझ सयाना॥ कहहिं कबीर तासों क्या कहिये। जो देखत दृष्टि भुलाना ॥ १४ ॥

शब्द १५.

रामुँरा चली बिन बनसा हो। घर छोडे जात जोलहा हो ॥ गज नौ गज दश गज उनइसकी । पुरिया एक तनाई ॥ सात सूत नौ गंड बहत्तर। पाट लागु अधिकाई ॥ तापट तुला तले नहीं गज न अमाई। पैसन शेर अढाई॥तामें घटे बढे

रतियो नहीं। करकच्च करे गहराई ॥ नित उठि बैठि खसम सो बरबस । तापर लागु तिहाई ॥ भीगी पुरिया काम न आवे । जोलहा चला रिसाई ॥ कहहिं कबीर सुनो हो संतो । जिन्ह यह सृष्टि बनाई ॥ छाड पसार राम भजु बौरे। भवसागर कठिनाई ॥ १५ ॥

शब्द १६.

रामुराँ झीझी जंतर बाजे। कर चरण बिहूना नाचे।।कर बिनु बाजे सुने श्रवण बिन्दु श्रवण श्रोता सोई।।पाटन सुबस सभा बिनु अवसर।बूझो मुनिजन लोई॥इंद्रि बिनु भोग स्वाद जिभ्या बिनु। अक्षय पिंडबिहूना।।जागत चोर मंदिर तहां मूसे। खसम अछत घर सूना ॥ बीज बिनु अंकुर पेड बिनु तरिवर।बिन फूले फल फरिया ॥ बांझकि कोख पुत्र अवतरिया। बिनु पग तरिवर चढ़िया॥ मसि बिनु द्वाइत कलम बिनु कागद ।बिनअक्षर

सुधि होई॥ सुधि बिन सहज ज्ञान बिनु ज्ञाता। कहहिं कबीर जन सोई ॥ १६ ॥

शब्द १७.

रामहि गावे औरहि समुझावे। हरि जाने बिनु बिकल फिरे॥ जेहि मुख वेद गायत्री उचरे ताके वचन संसार तरे ॥ जाके पांव जगत उठि लागे। सो ब्राह्मण जीव वध करे ॥ आपन ऊँच नीच घर भोजन। छीन कर्म हठि वोद्र भरे ॥ ग्रहन अमावस ढुकि ढुकि मांगे। कर दीपक लिये कूप परे॥एकादशी व्रत नाहिं जाने। भूत प्रेत हठि ह्रदय धरे॥तजि कपूर गांठि विष बांधे। ज्ञान गवाँये मुग्ध फिरे॥ छीजे साहु चोर प्रतिपाले। संत जनाकी कूटि करे ॥ कहहिं कबीर जिभ्याके लंपट। यहिविधि प्राणी नर्के परे॥१७॥

शब्द १८.

रॉम गुण न्यारो न्यारो ॥

अबुझा लोग कहांलों बूझे। बूझनहार विचारो॥ केतेहि रामचंद्र तपसीसे । जिन्ह यह जग बिट माया ॥ केतेहि कान्ह भये मुरलीधर ॥ तिनभी अंत न पाया ॥ मच्छ कच्छ बाराह स्वरूपी । वामन नाम धराया ॥ केतेहि बौद्ध निकलंकी कहिये। तिन्हभी अंत न पाया ॥ केतेहि सिद्ध साधक संन्यासी । जिन्ह वनवास बसाया ॥ केतेहि मुनिजन गोरख कहिये । तिन्हभी अंत न पाया॥ जाकी गति ब्रह्मों नहिं जानी । शिव-सनकादिक हारे ॥ ताके गुण नर कैसेक पैहो। कहहिं कबीर पुकारे ॥ १८ ॥

शब्द १९.

ये तंचु राम जपो हो प्रानी । तुम बूझहु अकथ कहानी ॥ जाके भाव होत हरि ऊपर । जागत

रैनि बिहानी॥ डाइनि डारे स्वनहा डोरे । सिंघ रहे बन घेरे ॥ पांचकुटुम मिलि जूझन लागे । बाजन बाजु घनेरे ॥ रोहु मृगा संशय बन हांके । पारथ बाणा मेले॥सायर जरे सकल बन डाहे । मच्छ अहेरा खेले ॥ कहहिं कबीर सुनो हो संतो। जो यह पद अर्थावे॥ जो यह पदको गाय विचारे। आप तरै औ तारे ॥ १९ ॥

शब्द २०.

कोई राम रसिक रस पीयहुगे । पीयहुगे सुग जीयहुगे ॥ फलअंकृत बीज नहिं बकला । शुक पंछी तहाँ रस खाई ॥ चूवे न बुंद अंग नहिं भीजे । दास भँवर सब सँग लाई ॥ निगम रिसाल चारि फल लागे । तामें तीनि समाई ॥ एक दूरि चाहें सब कोई । जतन जतन कहु बिरले पाई॥ गै बसंत ग्रीषम ऋतु आई। बहुरि न तरिवर तर आवे॥ कहै कबीर स्वामी सुखसागर। राम मगन होय सो पावे ॥ २० ॥

शब्द १८.

रॉम गुण न्यारो न्यारो ॥

अबुझा लोग कहांलों बूझे। बूझनहार विचारो॥ केतेहि रामचंद्र तपसीसे । जिन्ह यह जग बिट माया ॥ केतेहि कान्ह भये मुरलीधर ॥ तिनभी अंत न पाया ॥ मच्छ कच्छ बाराह स्वरूपी । वामन नाम धराया ॥ केतेहि बौद्ध निकलंकी कहिये। तिन्हभी अंत न पाया ॥ केतेहि सिद्ध साधक संन्यासी । जिन्ह वनवास बसाया ॥ केतेहि मुनिजन गोरख कहिये । तिन्हभी अंत न पाया॥ जाकी गति ब्रह्मों नहिं जानी । शिव-सनकादिक हारे ॥ ताके गुण नर कैसेक पैहो। कहहिं कबीर पुकारे ॥ १८ ॥

शब्द १९.

ये तंचु राम जपो हो प्रानी । तुम बूझहु अकथ कहानी ॥ जाके भाव होत हरि ऊपर । जागत

नहिं जीव न परछांई ॥ बंग निमाज कलमा नहिं होते। रामहु नाहिं खुदाई। आदि अंत मन मध्य न होते। आतश पवन न पानी॥ लख चौरासी जीव जंतु नहिं। साखी शब्द न बानी॥ कँहहिं कबीर सुनो हो अवधू। आगे करहु बिचारा॥ पूरण ब्रह्म कहांते प्रगटे। कृत्रिम किन्ह उपराजा॥ २२॥

शब्द २३.

अबधूँ कुदरतकी गति न्यारी॥

रंक निवाज करें वे राजा। भूपति करें भिखारी॥ याते लोग हरफना लागे। चंदन फूल न फूला॥ मच्छ शिकारी रमें जंगल में। सिंघ समुद्रहि झूला॥ रेंड रूप भये मलयागिर। चहुँ दिश फूटी बासा॥ तीन लोक ब्रह्मांड खंडमें। अंधरा देखे तमासा॥ पंगा मेर सुमेर उलंघे। त्रिभुवन मुक्ता डोले॥ गूँगा ज्ञान विज्ञान प्रकाशे। अनहद बानी

बोले ॥ आकाशहि बाँधि पतालहिं पठवे । शेष स्वर्गपर राजे ॥ कहैं कबीर राम हैं राजा । जो कछु करे सो छाजे ॥ २३ ॥

शब्द २४.

अवधू सो योगी गुरु मेरा । जो यहपदका करे निबेरा ॥ तरिवर एक मूल बिनु ठाढा । बिनु फूले फल लागा ॥ शाखा पत्र किछ नहिं वाके । अष्ट गगन मुख गाजा ॥ पौ बिनु पत्र करह बिनु तुम्बा । बिनु जिभ्या गुण गावे ॥ गावनहार के रूप न रेखा । सतगुरु होय लखावे ॥ पंछिक खोज मीनको मारग । कहैं कबीरदोउ भारी ॥ अपरंपारपारपुरु-षोत्तम । मूरतिकी बलिहारी ॥ २४ ॥

शब्द २५.

अँवधू वो तत्तु रावल राता । नाचे बाजन बाजु बराता ॥ मौरके माथे दुलहा दीन्हा । अकथ जोरि कहाता ॥ मंडये के चारन समधी दीन्हा ।

पुत्र व्याहिल माता॥दुलहिन लीपि चौक बैठारि। निर्भय पद परकासा ॥ भाते उलटि बरातिहि खायों। भली बनी कुशलाता ॥ पाणि ग्रहण भयो भौ मंडन। सुषमनि सुरति समानी॥कहहिं कबीर सुनो हो संतो । बूझो पंडित ज्ञानी॥ २५ ॥

शब्द २६.

भाँईरे बहोत २ क्या कहिये। कोई बिरले दोस्त हमारे॥गढन भंजन सँवारन आपै। ज्यों राम रखे त्यों रहिये ॥ आँसन पवन योग श्रुति सुमृति। जोतिष पढि बैलाना ॥ छौदर्शन पाखंड छ्यानवे। ये कल काहु न जाना ॥ आलम दुनिया सकल फिरि आये ये। कल उहै न आना ॥ तजिकरिगह जगत्र उचा ये । मनसों मन न समाना ॥ कहहिं कबीर योगी औ जंगम । फीकी उनकी आसा ॥ रामहि नाम रटे ज्यों चातृक । निश्चय भक्ति निवासा ॥ २६ ॥

बोले ॥ आकाशहिं बाँधि पतालहिं पठवे । शेष स्वर्गपर राजे ॥ कहैं कबीर राम हैं राजा । जो कछु करे सो छाजे ॥ २३ ॥

शब्द २४.

अवधू सो योगी गुरु मेरा । जो यहपदका करे निबेरा ॥ तरिवर एक मूल बिनु ठाढा । बिनु फूले फल लागा ॥ शाखा पत्र किछु नाहिं वाके । अष्ट गगन मुख गाजा ॥ पौ बिनु पत्र करह बिनु तुम्बा । बिनु जिभ्या गुण गावे ॥ गावन हार के रूप न रेखा । सतगुरु होय लखावे ॥ पंछिक खोज मीनको मारग । कहैं कबीरदोउ भारी ॥ अपरंपारपारपुरु-षोत्तम । मूरतिकी बलिहारी ॥ २४ ॥

शब्द २५.

अँवधूवो तत्तु रावल राता । नाचे बाजन बाजु बराता ॥ मौरके माथे दुलहा दीन्हा । अकथ जोरि कहाता ॥ मंडये के चारन समधी दीन्हा ।

तैयो तोर पराइ ॥ चारि वृक्ष छौ शाखा वाके। पत्र अठारह भाई ॥ एतिक ले गम कीहिसि गइया। गइया अति रे हरहाई ॥

ई सातों औरो है सातों। नौ औ चौदह भाई॥ एतिक ले गइया खाय बढायो। गइया तहुँ न अघाई ॥ पुरतामें राति है गइया। सेत सींग है भाई ॥ अबरण वर्ण किछुउ नाहिं वाके। खाद अखादहि खाई ॥ ब्रह्मा विष्णु खोजि ले आये। शिव सनकादिक भाई॥ सिध अनंत वाके खोज परे हैं। गइया किनहुँ न पाई ॥ कहहिं कबीर सुनो हो संतो॥जो यह पद अर्थावे॥जो यह पदको गाय विचारे। आगे होय निर्बाहे ॥ २८ ॥

शब्द २९.

भाइ रे नयन रसिक जो जागे ॥

पारब्रह्म अविगत अविनाशी। कैसहुके मन लागे॥अमली लोग खुमारी तृष्णा॥कतहुं संतोष

शब्द २७.

भाँई रे अदबुद रूप अनूप कथ्यो है। कहों तोको पतिआई ॥ जहां जहां देखों तहां सोई । सब घट रहा समाई ॥ लक्ष बिनु सुख दरिद्र बिनु दुख । नींद बिना सुख सोवे ॥ जस बिनु ज्योति रूप बिनु आशिक । ऐसो रतन बिहूना रोवे ॥ भ्रम बिनु गंजन मणि बिनु निरख । रूप बिना बहु रूपा ॥ थिति बिनु सुरति रहस्य बिनु आनँद । ऐसो चरित्र अनूपा ॥ कहहि कबीर जगत हरि मानिक । देखो चित अनुमानी ॥ परि हरि लाख लोभ कुटुम तजि । भजहू न शारंगपानी ॥ २७ ॥

शब्द २८.

भाँई रे गइया एक बिरंची दियो है। गइया भार अभार भौ भारी ॥ नौ नारीको पानी पियतु है । तृषा तेउ न बुझाई ॥ कोठा बहत्तर औ लौ लावे । वज्रकेंवार लगाई ॥ खूँटा गाडि दवारि दृढ बाँधेउ ।

कहहिं कबीर वै दूनो भूले। रामहि किनहुन पाया॥
वै खसी वै गाय कटावें। बादिहि जन्म गमाया॥

शब्द ३१.

हंसा संशय छूरी कुहिया। गइया पीवे बछरुवै दुहिदिया ॥ घर घर साउज खेले अहेरा। पारथ ओटा लेई ॥ पानीमाहिं तलफ गइ भुँभुरी। धूरि हिलोरा देई ॥ धरती बरसे बादर भीजे । भीट भये पौराऊ ॥ हंस उडानें ताल सुखाने। चहले बिंदा पाऊ ॥ जौलों कर डोले पगु चाले। तौलौं आसन कीजे ॥ कहहिं कबीर जेहि चलत न दीसे । तासु बचन का लीजे ॥ ३१ ॥

शब्द ३२.

हंसा हो चित्त चेतु सकेरा । इन्ह परपंच कैल बहुतेरा ॥ पाखंडरूप रचो इन्ह त्रिगुण । तेहि पाखंड भूलल संसारा ॥ घरके खसम बधिक वै

न पावे ॥काम क्रोध दोनौ मतवाले।माया भरि भरि आवे ॥ ब्रह्म कुलाल चढाइनि भाठी। लै इंद्री रस चाहे ॥ संगहि पोच है ज्ञान पुकारे। चतुरा होय सो पावे॥संकट सोच पोच यह कलिमा। बहुतक व्याधि शरीरा ॥ जहां धीर गंभीर अति निःचल। तहां उठि मिलहु कबीरा॥२९॥

शब्द ३०.

भाईरे दुई जगदीश कहांते आया। कहु कौने बौराया॥अल्लाह राम करीमा केशव।हरि हजरत नाम धराया ॥ गहना एक कनकते गहना।यामें भाव न दूजा ॥ कहन सुननको दुई कर थापे। यक निमाज यक पूजा ॥ वोही महादेव वोही महम्मद। ब्रह्मा आदम कहिये ॥ को हिंदू को तुरुक कहावे। एक जिमीपर रहिये। वेद कितेब पढें वै कुतबा। वै मोलना वै पांडे ॥

वेगर वेगर नाम धराये। एक मट्टीके भांडे॥

शब्द ३४.

हरिजन हंस दशा लिय डोले।निर्मल नाम चुनि चुनि बोले॥मुक्ताहल लिये चोंच लोभावे। मौन रहेकी हरिजश गावे॥ मान सरोवर तटके बासी। राम चरण चित अंत उदासी॥ काग कुबुद्धि निकट नहिं आवे। प्रति दिन हंसादर्शन पावे। नीरै क्षीरका करे निबेरा। कहहिं कबीर सोई जन मेरा॥ ३४॥

शब्द ३५.

हरि मोर पीउ मैं रामकी बहुरिया।रामबडो मैं तनकी लहुरिया॥ हरिमोर रहँटा मैं रतन पिउरि-या। हरिका नाम लेकतति बहुरिया॥ छौं मास ताग बरस दिन कुकुरी। लोग कहें भल कातल बपुरी॥ कहहिं कबीर सूत भल काता। चरखा न होय मुक्तिका दाता॥ ३५॥

राजा । परजा क्या धौं करे बिचारा ॥ भक्ति न जाने भक्त कहावे । तजि अमृत विषकै लिन सारा ॥ आगे आगे ऐसेहि बूडे तिनहुँ न मानल कहा हमारा ॥ कहा हमार गांठि दृढ बांधो । निशिबासर रहियो हुशियारा ॥ ये कलि गुरु बडे परपंची । डारि ठगोरी सब जग मारा ॥ वेद कितेब दोउ फंदे पसारा । तेहि फंदे परु आप विचारा ॥ कहहिं कबीर ते हंसन बिसरे।जेहिमा सिले छुडावनहारा ॥ ३२ ॥

शब्द ३३.

हंसा प्यारे सरवर तजि कहां जाय ॥

जेहि सरवर बिच मोतिया चुगत होते। बहु विधि केलि कराय ॥ सूखे ताल पुरइनि जल छाडे । कमल गये कुम्हिलाय॥कहहिं कबीर जो अबकी बिछुरे । बहुरि मिलों कब आय॥३३॥

शब्द ३४.

हरिजन हंस दशा लिय डोले।निर्मल नाम चुनि चुनि बोले॥मुक्ताहल लिये चोंच लोभावे। मौन रहेकी हरिजश गावे॥ मान सरोवर तटके बासी।राम चरण चित अंत उदासी॥ काग कुबुद्धि निकट नहिं आवे। प्रति दिन हंसादर्शन पावे। नीरैं क्षीरका करे निबेरा । कहहिं कबीर सोई जन मेरा ॥ ३४ ॥

शब्द ३५.

हरि मोर पीउ मैं रामकी बहुरिया।रामबडो मैं तनकी लहुरिया॥ हरिमोर रहँटा मैं रतन पिउरि-या ।हरिका नाम ले कतति बहुरिया॥ छौं मास ताागा बरस दिन कुकुरी। लोग कहें भल कातल बपुरी॥ कहहिं कबीर सूत भल काता। चरखा न होय मुक्तिका दाता ॥ ३५ ॥

राजा । परजा क्या धौं करे बिचारा ॥ भक्ति न जाने भक्त कहावे । तजि अमृत विषकैं लिन सारा ॥ आगे आगे ऐसेहि बूडे तिनहुँ न मानल कहा हमारा ॥ कहा हमार गांठि दृढ बांधो । निशिबासर रहियो हुशियारा ॥ ये कलि गुरु बडे परपंची । डारि ठगोरी सब जग मारा ॥ वेद कितेब दोउ फंदे पसारा । तेहि फंदे परु आप विचारा ॥ कहहिं कबीर ते हंसन बिसरे।जेहिमा सिले छुडावनहारा ॥ ३२ ॥

शब्द ३३.

हंसा प्यारे सरवर तजि कहां जाय ॥

जेहि सरवर बिच मोतिया चुगत होते । बहु विधि केलि कराय ॥ सूखे ताल पुरइनि जल छाडे । कमल गये कुम्हिलाय॥कहहिं कबीर जो अबकी बिछुरे । बहुरि मिलो कब आय॥३३॥

शब्द ३८.

हरि बिनु भर्म बिगुर्चनि गंदा ॥
जहाँजहांगयउ आपुन पौ खोयेउ । तेहि फंदे बहुफंदा ॥ योगी कह योग हैं नीका। दुतिया और न भाई ॥ चुंडित मुंडित मौनी जटाधारी।तिन कहुकहां सिद्धि पाई ॥ ज्ञानी गुणी सूर कवि दाता । ई जो कहैं बड हमही ॥ जहाँसे उपजे तहाँ समाने । छूटि गये सब तबहीं ॥ बांये दहिने तजू बेकारा । निजुके हरि पद गहिया ॥ कहैं कबीर गूँगे गुण खाया । पूछे सो क्या कहिया ॥ ३८ ॥

शब्द ३९.

ऐसो हरिसों जग लरतु है । पांडुर कतहुँ गरुड धरतुहै ॥ मूस बिलाई कैसन हेतू । जंबुक करे केहरि सों खेतू॥ अचरज एक देखो संसारा स्वनहा खेद कुंजल असवारा ॥ कहहिं कबीर सुनो संतो भाई। इहसंधि काहु बिरले पाई॥ ३९॥

शब्द ३६.

हरिठँग ठगत ठगोरी लाई । हरिके वियोगकैसे जियहुरे भाई ॥ को काको पुरुष कौन काकी नारी । अकथकथा यमदृष्टि पसारी ॥ को काको पुत्र को न काको बापा । कोरे मरै को सहै संतापा॥ ठगि ठगि मूल सबनका लीन्हा । राम ठगोरी काहु न चीन्हा॥ कहहिं कबीर ठगसो मन माना । गई ठगोरी जब ठग पहिचाना ॥ ३६ ॥

शब्द ३७.

हँरि ठग ठगत सकल जग डोले । गौनकरत मोसे मुखहु न बोले ॥ बालापनके मीत हमारे । हमहिं तजि कहां चलेउ सकारे॥तुमहिं पुरुष में नारी । तुम्हरी चाल पाहनहुते भारी ॥ माटि को देह पवनको शरीरा । हरि ठगसो डरै कबीरा ॥ ३७ ॥

शब्द ३८.

हरि बिनु भर्म बिगुर्चनि गंदा ॥

जहाँजहांगयउ आपुन पौ खोयेउ। तेहि फंदे बहुफंदा ॥ योगी कह योग हैं नीका। दुतिया और न भाई ॥ चुंडित मुंडित मौनी जटाधारी। तिन कहुकहां सिद्धि पाई ॥ ज्ञानी गुणी सूर कवि दाता। ई जो कहैं बड हमही ॥ जहाँसे उपजे तहाँ समाने। छूटि गये सब तबहीं ॥ बांये दहिने तजू बेकारा। निजुके हरि पद गहिया ॥ कहैं कबीर गूँगे गुण खाया। पूछे सो क्या कहिया ॥ ३८ ॥

शब्द ३९.

ऐसो हरिसों जग लरतु है। पांडुर कतहुँ गरुड धरतुहै ॥ मूस बिलाई कैसन हेतू। जंबुक करे केहरि सों खेतू॥ अचरज एक देखो संसारा स्वनहा खेद कुंजल असवारा ॥ कहहिं कबीर सुनो संतो भाई। इहसंधि काहु विरले पाई॥३९॥

शब्द ४०.

पंडित बाद बदे सो झूठा ॥

रामके कहे जगत गति पावे । खांड कहे मुख मीठा ॥ पावक कहे पांव जो डाहे। जल कहे तृषा बुझाई ॥ भोजन कहे भूँख जो भाजे । तो दुनिया तरि जाई ॥ नरके संग सुवा हरि बोले । हरि परताप न जाने ॥ जो कबहीं उडी जाय जंगलमें । तो हरि सुरति न आने ॥ बिन देखे बिनु अर्स पर्स बिनु । नाम लिये क्या होई ॥ धनके कहे धनिक जो होवे । निर्धन रहे न कोई ॥ साँची प्रीति विषय मायासो । हरि भक्तन की फांसी ॥ कहहिं कबीर एक राम भजे बिनु । बाँधे यमपुर जासी ॥ ४० ॥

शब्द ४१.

पंडितै देखहु मनमें जानी ।

कहु धौं छूति कहाँसे उपजो।तबहिं छूति तुममानी

नादे बिंदे रुधिरके संगे। घटहीमें घट सपचे॥ अष्ट कवल ह्वै पुहुमी आया। छूति कहांते उपजे॥ लख चौरासी नाना बहु बासन।सो सब सरि भौ माटी॥ एकै पाट सकल बैठाये। छूटि लेत धौं काकी॥छूतिहि जेंवन छूतिहि अचवन। छूतिहि जगत उपाया॥ कहहिं कबीर ते छूति विवर्जित। जाके संग न माया॥ ४१॥

शब्द ४२.

पंडित शोधि कहो समुझाई।जाते आवागवन नसाई॥ अर्थ धर्म औ काम मोक्ष कहु। कौन दिसा बसे भाई॥ उत्तर कि दक्षिन पूरब कि पश्चिम। स्वर्ग पताल कि माहीं॥बिना गोपाल ठौर नहिं कतहूं। नर्क जात धौं काहीं॥ अनंजानेको स्वर्ग नर्क है। हरि जानेको नाहीं॥ जेहि डरसे सब लोग डरत हैं। सो डर हमरे नाहीं॥

पाप पुण्यकी शंका नाहीं। स्वर्ग नर्क नहिं जाई॥ कहहिं कबीर सुनो हो संतो । जहांके पद तहां समाई ॥ ४२ ॥

शब्द ४३.

पंडितैं मिथ्या करहु विचारा।ना वहां सृष्टि न सिरजन हारा॥थूल अस्थूल पौन नहिं पावक। रवि शशि धरणि न नीरा॥ज्योति स्वरूप काल नहिं जहवां । वचन न आहि शरीरा॥कर्म धर्म किछुवो नहिं उहवां । ना वहां मंत्र न पूजा॥संजम सहित भाव नाहिं जहवां । सो धौं एक कि दूजा ॥ गोरख राम एकौ नाहिं उहवां । ना वहाँ वेद विचारा ॥ हरि हर ब्रह्मा नहिं शिव शक्ति। तीर्थउ नाहिं अचारा ॥ माय बाप गुरु जहवां नाहीं । सो धौं दुजा कि अकेला॥ कहहिं कबीर जो अबकी बूझे । सोई गुरु हम चेला ॥ ४३॥

शब्द ४४.

बुझ बुझ पंडित करहु विचारा । पुरुष अहै की नारी॥ब्राह्मणके घर ब्राह्मणी होती । योगीके घर चेली ॥ कलमा पढि पढि भई तुरुकनी । कलमें रहत अकेली ॥ बर नहिं बरे व्याह नहिं करे । पुत्र जन्मावनहारी॥कारे मूँडको एकहु न छाडी । अजहू आदि कुमारी ॥ मैके रहै जाय नहिं ससुरे ॥ साँई संग न सोवों॥ कहै कबीर मैं युग युग जीवों । जाति पांति कुल खोवों॥४४॥

शब्द ४५.

कौनें मुवा कहो पंडित जना॥ सो समुझाय कहो मोहिसना ॥ मुये ब्रह्मा विष्णु महेशू । पार्वती सुत मुये गणेशू ॥ मुये चंद्र मुये रवि शेषा । मुये हनुमंत जिन्ह बांधल सेता ॥ मुये कृष्ण मुये करतारा । एक न मुवा जो सिरजन

पाप पुण्यकी शंका नाहीं। स्वर्ग नर्क नहिं जाई॥ कँहहिं कबीर सुनो हो संतो । जहांके पद तहां समाई ॥ ४२ ॥

शब्द ४३.

पंडितें मिथ्या करहु विचारा।ना वहां सृष्टि न सिरजन हारा॥थूल अस्थूल पौन नहिं पावक। रवि शशि धरणि न नीरा॥ज्योति स्वरूप काल नहिं जहवां । वचन न आहि शरीरा॥कर्म धर्म किछुवो नहिं उहंवां । ना वहां मंत्र न पूजा॥सं-जम सहित भाव नाहिं जहंवां । सो धौं एक कि दूजा ॥ गोरख राम एकौ नाहिं उहंवां । ना वहाँ वेद विचारा ॥ हरि हर ब्रह्मा नहिं शिव शक्ति। तीर्थउ नाहिं अचारा ॥ माय बाप गुरु जहंवां नाहिं । सो धौं दुजा कि अकेला॥ कहहिं कबीर जो अबकी बूझे । सोई गुरु हम चेला ॥ ४३॥

शब्द ४४.

बूझ बूझ पंडित करहु विचारा। पुरुष अहै की नारी॥ब्राह्मणके घर ब्राह्मणी होती। योगीके घर चेली॥ कलमा पढि पढि भई तुरुकनी। कलमें रहत अकेली॥ बर नहिं बरै ब्याह नहिं करे। पुत्र जन्मावनहारी॥कारे मूँडको एकहु न छाडी। अजहू आदि कुमारी॥ मैके रहै जाय नहिं ससुरे॥ साँई संग न सोवों॥ कहैं कबीर से युग युग जीवों। जाति पाँति कुल खोवों॥४४॥

हारा॥कहहिं कबीर मुवा नहिं सोई । जाको आवागवन न होई ॥ ४५ ॥

शब्द ४६.

पंडितें एक अचरज बड होई ॥

एक मरे मुये अन्न नहिं खाई॥एके मरे सीझे रसोई ॥ करि अस्नान देवनकी पूजा । नौगुण कांध जनेऊ ॥ हंडिया हाड हाड थारिया मुख। अब षट्कर्म बनेऊ ॥ धर्म करे जहां जीव वधतु है । अकर्म करे मोरे भाई ॥ जो तोहराको ब्राह्मण कहिये । तो काको कहिये कसाई॥कहहिं कबीर सुनो हो संतो।भरम भूलि दुनियाई ॥ अपरंपार पार पुरुषोत्तम । या गति बिरले पाई ॥ ४६॥

शब्द ४७.

पांडे बुद्धि पियहु तुम पानी ॥

जेहि मटियाके घरमें बैठे।तामें सृष्टि समानी॥

शब्द ६०.

बुझे बुझ पंडित बिरवा न होय । आधे बसे पुरुष आधे बसेजोय॥बिरवा एक सकल संसारा। स्वर्ग शीस जर गई पतारा ॥ बारह पखुरिया चौबिस पात। घने बरोह लागे चहुँ पास। फूले न फले वाकी है बानी । रैन दिवस बेकार चूवे पानी॥कहहिं कबीर कछु अछलो न तहिया।हरि बिरवा प्रतिपालेनि जहिया ॥ ६० ॥

शब्द ६१.

बुझे बुझ पंडित मन चित लाय। कबहिं भरलि बहे कबहिं सुखाय ॥ खन ऊबे खन डूबे खन औगाह। रतन न मिले पावे नहिं थाह ॥ नदिया नहिं सासरि बहे नीर। मच्छन मरे केवट रहें तीर ॥ पोहकर नहिं बांधल तहँ घाट। पुरइनि नहिं कंवल महँ बाट ॥ कहहिं

शिव एकै । कहू धौं काह निहोरा ॥ वेद पुराण कितेब कुराना । नाना भांति बखाना ॥ हिंदू तुरुक जैनि औ योगी ये कल काहु न जाना ॥ छौ दर्शनमें जो परवाना । तासु नाम मन माना ॥ कहहिं कबीर हमहिं पै बौरे । ई सब खलक सयाना ॥ ४८ ॥

शब्द ४९.

बुझ बुझ पंडित पद निर्बान । सांझ परे कहवां बसे भान ॥ ऊंचं नीच पर्वत ढेला न ईंट । बिनु गायन तहवां उठे गीत ॥ ओस न प्यास मंदिर नहिं जहवां । सहसों धेनु दुहावें तहवां ॥ नित्त अमावस नित संक्रांती । नित नित नौ ग्रह बैठे पांती ॥ मैं तोहिं पूछौं पंडित जना । हृदया ग्रहन लागु केहि खना ॥ कहहिं कबीर इतनौ नहिं जान । कौन शब्द गुरु लागा कान ॥ ४९ ॥

शब्द ५०.

बुझौं बुझ पंडित बिरवा न होय। आधे बसे पुरुष आधे बसेजोय॥ बिरवा एक सकल संसारा। स्वर्ग शीस जर गई पतारा॥ बारह पखुरिया चौबिस पात। घने बरोह लागे चहुँ पास। फूले न फले वाकी है बानी। रैन दिवस बेकार चूवे पानी॥ कहँहिं कबीर कछु अछलो न तहिया। हरि बिरवा प्रतिपालेनि जहिया॥ ५० ॥

शब्द ५१.

बुझौं बुझ पंडित मन चित लाय। कबहिं भरलि बहे कबहिं सुखाय॥ खन ऊबे खन डूबे खन औगाह। रतन न मिले पावे नहिं थाह॥ नदिया नहिं सासरि बहे नीर। मच्छन मरे केवट रहें तीर॥ पोहकर नहिं बांधल तहँ घाट। पुरइनि नहिं कंवल महँ बाट॥ कहहिं

कबीर ई मन का धोख । बैठा रहे चला चहे चोख ॥ ८१ ॥

शब्द ५२.

बूझौं लीजे ब्रह्म ज्ञानी ॥

घूरि घूरि बर्षा बर्षावे । परिया बुंद न पानी ॥ चिउँटीके पग हस्ती बांधो । छेरी बीग रखावे ॥ उदधि माहँते निकारि छांछरी । चौडे ग्राह करावे ॥ मेडुक सर्प रहँत एक संगे । बिलिया श्वान बियाई ॥ नित उठि सिंघ स्यारसों डरपे । अदबुद कथ्यो न जाई ॥ कौने संशय मृगा वन घेरे । पारथ बाणा मेले ॥ उदधि भूपते तरिवर डाहे । मच्छ अहेरा खेले ॥ कहहिं कबीर यह अदबुद ज्ञाना । को यह ज्ञानहि बूझे ॥ बिनु पंखे उडि जाय अकाशै । जीवन मरण न मूझै ॥ ८२ ॥

शब्द ५३.

वे बिरवा चीन्हे जो कोय।जरा मरण रहित जन होय।बिरवा एक सकल संसारा।पेड एक फूटल तीनि डारा॥मध्यकी डारि चारि फल लागा। शाखा पत्र गिने को वाका॥ बेलि एक त्रिभुवन लपटानी।बांधेते छूटै नहिं ज्ञानी।कहहिं कबीरहम जात पुकारा।पंडित होय सो लेइ विचारा॥५३॥

शब्द ५४.

साँईके सँग सासुर आई॥

संग नाहिं सूति स्वाद नहिं मानी। गये जोबन सपने की नाई।जना चारि मिलि लगन सोधाये। जना पाँच मिलि मांडो छाये॥ सखी सहेलरी मंगल गावैं। दुख सुख माथे हरदि चढावैं॥ नाना रूप परी मन भांवरि। गाँठि जोरि भाई पतियाई॥ अर्घा दै ले चली सुवासिनी। चौके रांड भई संग साईं॥ भयो विवाह चली

बिनु दुलहा ॥ बाट जात समधी समुझाई ॥ कहैं कबीर हम गौने जैबे । तरब कंथ ले तूर बजैबे ॥ ५४ ॥

शब्द ५५.

नरँको ढाडस देखो आई।कछु अकथ कथ्योहै भाई॥सिंघ स्यार्दुल एक हर जोतिनि।सीकस बोइनि धाने॥बनकी भुलइया चाखुर फेरे।छागर भये किसाने॥छेरी बाघै ब्याह होतहै।मंगल गावै गाई। वनके रोज धरि दायज दीन्हो।गोहलो कंधे जाई॥ कागा कापर धोवन लागे।बकुला किरकहि दांते। माखी मूंड मुंडावन लागी । हमहू जाव बराते॥ कहहिं कबीर सुनो हो संतो।जो यह पद अर्थावे॥ सोई पंडित सोई ज्ञाता।सोई भक्त कहावे॥५५॥

शब्द ५६.

नरँ को नहिं परतीत हमारी ॥

झूठा बनिज कियो झूठे सो। पूँजी सबन मिलि

हारी ॥ षट दर्शन मिलि पंथ चलायो। त्रिदेवा अधिकारी ॥ राजा देश बडो परपंची । रैयत रहत उजारी॥इतते उत उतते इत रहहु। यमकी सांड सँवारी ॥ ज्यों कपि डोर बाँधु बाजीगर॥ अपनी खुसी परारी॥इहै पेट उत्पति परलयका। विषया सबै बिकारी॥जैसे श्वान अपावन राजी। त्यों लागी संसारी ॥ कहहिं कबीर यह अद्भुद ज्ञाना। को माने बात हमारी॥अजहूँ लेहुँ छुडाय कालसों । जो करे सुरति सँभारी ॥ ५६ ॥

शब्द ५७.

नाँ हरि भजसि न आदत छूटी ॥

शब्दहि समुझि सुधारत नाहीं॥ आँधर भये हियोहुकी फूटी॥पानी मांहि पषाण की रेखा। ठोंकत उठे भभूका॥सहज घड़ा नित उठि जल ढारे।फिर सूखका सूखा॥सेतहि सेत सितंग भो। सैन बाढु अधिकाई॥जो सन्निपात रोगियन मारे।

सो साधुन सिद्धि पाई ॥ अनहद कहत कहत जग बिनसे । अनहद सृष्टि समानी ॥ निकट पयाना यमपुर धावे । बोले एकै बानी ॥ संत-गुरु मिले बहुत सुख लहिये । सतगुरु शब्द सुधारे॥कहँहिं कबीर ते सदा सुखी हैं । जो यह पदहि विचारे ॥ ५७ ॥

शब्द ५८.

नरहँरि लागि दौं विकार बिन इंधन।मिले न बुझावनहारा ॥ मैं जानो तोहिसे व्यापे । जरत सकल संसारा॥पानी माहिं अग्नि को अंकुर। जरत बुझावे पानी॥एक न जरे जरे नौ नारी । युक्ति न काहू जानी॥शहर जरे पहरू सुख सोवे। कहे कुशल घर मेरा ॥ पुरिया जरे वस्तु निज उबरे । विकल राम रँग तेरा ॥ कुबजा पुरुष गले एक लागा । पूजि न मनकी सरधा ॥ करत विचार जन्म गौ खीसे । ई तन

रहत असाधा ॥जानि बूझि जो कपट करतु है। तेहि अस मंद न कोई॥कहहिं कबीर तेहि मूढको । भला कौन विधि होई ॥ ५८ ॥

शब्द ५९.

मॉया महा ठगिनी हम जानी ॥
त्रिगुणी फांस लिये कर डोले।बोले मधुरी बानी॥ केशवके कमला ह्वै बैठी।शिवके भवन भवानी॥ पंडाके मूरति ह्वै बैठी।तीरथहूमें पानी ॥ योगीके योगिनि ह्वै बैठी । राजाके घर रानी ॥ काहूके हीरा होय बैठी। काहुके कवडी कानी ॥ भक्तांके भक्तिन ह्वै बैठी । ब्रह्माके ब्रह्मानी ॥ कहहिं कबीर सुनो हो संतो। ई सब अकथकहानी॥५९॥

शब्द ६०.

मॉया मोह मोहित कीन्हा।ताते ज्ञान रतन हरि लीन्हा ॥ जीवन ऐसो सपना जैसो।जीवनसपन

समाना ॥ शब्दगुरू उपदेश दीन्हों । तैं छाडु पर मनिधाना ॥ ज्योति देखि पतंग हुलसे । पशु न पेखे आगि ॥ काल फांस नर मुग्ध न चेतहु । कनक कामिनी लागि ॥ शेख सय्यद कितेब निरखे । सुमृति शास्त्र विचार ॥ सतगुरुके उपदेश बिनु तैं । जानिके जीव मार ॥ कर विचार विकार परिहर । तरण तारण सोय ॥ कहहिं कबीर भगवंत भजु नर । दुतिया और न कोय ॥६०॥

शब्द ६१.

मॅरिहो रे तन का ले कारि हो । प्राण छूटे बाहर ले डारिहो ॥ काया विगुर्चंन अनबनी भांती । कोई जारे कोई गाडे माटी ॥ हिंदु ले जारे तुरुक ले गाडे ॥ यहि विधि अंत दुनों घर छाडे ॥ कर्मफांस यमजाल पस्यारा । जस धीमर मछरी गहि मारा ॥ राम बिना नर होइ है कैसा ॥ बाटमांझ गोबरौरा

जैसा ॥ कहहिं कबीर पाछे पछतैहो । या घरसे जब वा घर जैहो ॥ ६१ ॥

शब्द ६२.

माई मैं दूनों कुल उजियारी ॥

सासु ननद मिलि पटिया बंधलो।भसुरहि परलों गारी ॥ जारो माग मैं तासु नारिका।जिन सरवर रचल धमारी॥जना पांच कोखिया मिलिरखलो और दुई औ चारी॥पार परोसिनि करों कलेवा। संग हि बुद्धि महतारी ॥ सहजे बपुरे सेज बिछा- वल। सुतलिउं मैं पांव पसारी ॥ आवों न जावों मरों नहिं जीवों। साहेब मेट लगारी ॥ एक नाम मैं निजुकै गहलो । ते छूटक संसारी॥एक नाम मैं बदिकै लेखों । कहहि कबीर पुकारी ॥६२॥

शब्द ६३.

मैं कासों कहों को सुने को पतियाय।फुलवाके छुवत भँवर मरि जाय ॥ जोनियन बोइये सींचि-

यन सोय॥ बिन डार बिनु पात फूल एक होय॥ गगन मंगल बिच फुल एक फूला। तर भौ डार उपर भौ मूला ॥ फुल भल फूलल मलिनि भल गाथल । फुलवा विनसी गौ भँवर निरासल॥ कहहिं कबीर सुनो संतो भाई। पंडित जन फुल रहल लुभाई ॥ ६३ ॥

शब्द ६४.

जोलँहा बिनहुहो हरिनामा।जाके सुरनर मुनि धरें ध्याना॥ तानाँ तनेको अहुठा लीन्हा।चरखी चारिउ वेदा ॥ सरकुंडी एक राम नरायण। पूरण प्रगटे कामा ॥ भवसागर एक कठवत कीन्हा । तामें मांडी साना ॥ मांडीका तन मांडि रहा है । मांडी बिरले जाना ॥ चांद सूर्य दुई गोडा कीन्हा । मांझ दीप कियो मांझा॥ त्रिभुवन नाथ जोमांजनलागे श्याम मुरिया

दीन्हा॥ पाईके जब भरना लीन्हा। वै बांधनको रामा॥ वै भरा तिहुँलोकहि बांधे। कोई न रहत उबाना॥ तीनिलोक एक करीगह कीन्हा। दिग मग कीन्हों ताना॥ आदि पुरुष बैठावन बैठे। कबिरा ज्योति समाना॥ ६४॥

शब्द ६५.

योगियाँ फिरिगयो नगर मंझारी। जाय समाना पांच जहां नारी॥ गयेउ देसंतर कोई न बतावे। योगिया बहुरि गुफा नहीं आवे॥ गारिगयो कंथा धजा गई टूटि। भजि गयो डंड खपर गयो फूटि॥ कहहिं कबीर यह कलि है खोटी। जो रहे करवा सो निकरे टोटी॥ ६५॥

शब्द ६६.

योगियाँके नगर बसो मति कोई। जोरे सो योगिया होई॥ ये योगियाको उलटा ज्ञान। काला

यन्न सोय॥बिन डार बिनु पात फूल एक होय॥ गगन मंगल बिच फुल एक फूला। तर भौ डार ऊपर भौ मूला ॥ फुल भल फूलल मलिनि भल गाथल । फुलवा विनसी गौ भँवर निरासलः॥ कहहिं कबीर सुनो संतो भाई। पंडित जन फुल रहल लुभाई ॥ ६३ ॥

शब्द ६४.

जोलंहा बिनहुहो हरिनामा।जाके सुरनर मुनि धरें ध्याना॥ तानों तनेको अहुठा लीन्हा।चरखी चारिउ वेदा ॥ सरकुंडी एक राम नरायण । पूरण प्रगटे कामा ॥ भवसागर एक कठवत कीन्हा । तामें मांडी साना ॥ मांडीका तन मांडि रहा है । मांडी विरले जाना ॥ चांद सूर्य दुइ गोडा कीन्हा । मांझ दीप कियो मांझा॥ त्रिभुवन नाथ जोमांजनलागे श्याम मुलरिया

नगर पहुँचते । परिगो सोग संताप॥ एक अचंभ-व हम देखा । जो बिटिया ब्याहिल बाप॥ सम-धीके घर रमधी आये। आये बहुके भाय ॥ गोडे चूल्हा दै दै । चरखा दियो हढाय ॥ देवलोक मरि जायँगे । एक न मरे बढाय ॥ यह मन रंजन कारणे । चरखा दियो हढाय॥कहहि कबीर सुनो हो संतो। चरखा लखे जो कोय ॥ जो यह चरखो लगिपरे । ताको आवागवन न होय ॥ ६८ ॥

शब्द ६९.

जंत्री जंत्र अनूपम बाजे।वाके अष्टगगान मुख गाजे॥तूहि बाजे तूहि गाजे।तूहि लिये कर डोले ॥ एक शब्दमों राग छतीसों । अनहद बानी बोले॥ मुखकै नाल श्रवणके तुंबा।सतगुरु साज बनाया॥ जिभ्याके तार नासिका चरई । मायाका मोम लगाया ॥ गगन मंडिलमें भया उजियारा ।

चोला नहीं वाके म्यान ॥ प्रगट सो कंथा गुप्ता-धारी । तामें मूल सजीवन भारी ॥ वो योगियाकी युक्ति जो बूझे । राम रमे तेहि त्रिभुवन सूझे ॥ अमृत बेली छिन छिन पीवे । कहे कबीर योगी युग युग जीवे ॥ ६६ ॥

शब्द ६७.

जोपै बीजरूप भगवान । तो पंडित का पूछो आन ॥ कहा मन कहा बुद्धि कहा हंकार । सत रज तम गुण तीन प्रकार ॥ विष अमृत फल फलें अनेका । बौधा वेद कहे तरबेका ॥ कहहि कबीर तें मैं क्या जान । को धौं छूटल को अरु ज्ञान ॥ ६७ ॥

शब्द ६८.

जो चरखा जारि जाय बढैया ना मरे ॥
मैं कातों सूत हजार । चरखुला जिन जरे ॥ बाबा मोर ब्याह कराव । अच्छा बरहि तकाय ॥ ज्यौंलों अच्छा वर न मिले । तौलों तुमहिं बिहाय ॥ प्रथमे

नगर पहुँचते । परिगो सोग संताप ॥ एक अचंभव हम देखा । जो बिटिया ब्याहिल बाप ॥ समधीके घर रमधी आये । आये बहुके भाय ॥ गोडे चूल्हा दै दै । चरखा दियो हढाय ॥ देवलोक मरि जायँगे । एक न मरे बढाय ॥ यह मन रंजन कारणे । चरखा दियो हढाय ॥ कहहि कबीर सुनो हो संतो । चरखा लखे जो कोय ॥ जो यह चरखो लगिपरे । ताको आवागवन न होय ॥ ६८ ॥

शब्द ६९.

जंत्री जंत्रै अनूपम बाजे । वाके अष्टगगान मुख गाजे ॥ तूहि बाजे तूहि गाजे । तूहि लिये कर डोले ॥ एक शब्दमों राग छतीसों । अनहद बानी बोले ॥ मुखके नाल श्रवणके तुंबा । सतगुरु साज बनाया ॥ जिभ्याके तार नासिका चरई । मायाका मोम लगाया ॥ गगन मंडिलमें भया उजियारा ।

उलटा फेर लगाया ॥ कहैं कबीर जन भये विवेकी। जिन्ह जंत्रीसों मन लाया ॥ ६९ ॥

शब्द ७०.

जैस मास पशुकी तैस मास नरकी। रुधिर रुधिर एकसारा जी॥ पशुकी मास भखें सब कोई। नरहि न भखें सियारा जी ॥ ब्रह्म कुलाल मेदिनी भइया। उपजि बिनसि कित गइया जी ॥ मास मछरिया तै पैखइया। ज्यों खेतन मों बोईया जी ॥ माटीके करिदेवी देवा। काटि काटि जिव देइया-जी ॥ जो तुहरा है सांचा देवा। खेत चरत क्यों ना लेइया जी ॥ कहहिं कबीर सुनो हो संतो। राम नाम नित लेइया जी ॥ जो कछु कियहु जिभ्याके स्वारथ। बदल पराया देइया जी ॥ ७० ॥

शब्द ७१.

चातक कहांपुकारो दूरी।सो जल जगत रहा भर पूरि ॥ जेहि जल नाद बिंद को भेदा। षट कर्म

सहित उपाने वेदा॥जेहि जल जीव शीवको वासा।
सो जल धरणी अमर प्रकासा॥जेहि जल उप जल
सकल शरीरा।सो जल भेद नजानु कबीरा॥७१॥

शब्द ७२.

चलहु का टेढो टेढो टेढो ॥

दशहुं द्वार नर्क भरि बूडे । तू गंधीको बेढो॥फूटे
नैन ह्रदय नहिं सूझे । मति एकौ नहिं जानी॥
काम क्रोध तृष्णाके माते। बूडि मुये बिनु पानी॥
जो जारे तन भस्म होय धुरि । गाडे किरमिटि
खाई॥सूकर श्वान कागका भोजन। तनकी इहै
बडाई॥चेति न देखु मुग्ध नर बौरे। तोहिते काल
न दूरी॥ कोटिक जतन करो यह तनकी। अंत
अवस्था धूरी ॥ बालूके घरवागें बैठे।चेतन नाहिं
अयाना ॥ कहहिं कबीर एक राम भजे बिनु।
बूडे बहुत सयाना ॥ ७२ ॥

शब्द ७३.

फिँरहु का फूले फूले फूले ॥

जब दश मास ऊर्ध मुख होते । सो दिन काहेक भूले॥ज्यों माखी सहते नहिं बिहुरे।सोचि सोचि घन कीन्हा ॥ मुये पीछे लेहु लेहु करें सब । भूते रहनि कस दीन्हा ॥ देहरि ले बर नारि संग है। आगे संगसु हेला॥मृतुक थान लो संग खटोला। फिर पुनि हंस अकेला ॥ जारे देह भस्म है जाई । गाडे माटी खाई ॥ काँचे कुंभ उदक ज्यों भरिया।तनकी इहै बडाई ॥ राम न रमसि मोह्के माते । परेहु काल बश कूवा॥ कहहिं कबीर नर आपु बंधायो । ज्यो ललनी भ्रम सूवा ॥ ७३॥

शब्द ७४.

ऐसों योगियाँ वदकर्मी।जाके गमन आकाश न धरणी ॥ हाथ न वाके पांव न वाके। रूप न वाके रेखा ॥ बिना हाट हटवाई लावै।करै बयाई

लेखा॥ कर्म न वाके धर्म न वाके। योग न वाके युक्ती ॥ सींगी पात्र किछउ नहिं वाके। काहेक मांगे भुक्ती ॥ मैं तोहिं जाना तैं मोहिं जाना।मैं तोहि मांहि समाना ॥ उत्पति परलय यकहु न होते। तब कहु कौन ब्रह्मको ध्याना ॥ जोगी आँन एक ठाढ़ कियो है। राम रहा भर पूरी॥ औषध मूल किछउ नहिं वाके। राम सजीवन मूरी ॥ नटवट बाजा पेखनी पेखे। बाजी गरकी बाजी ॥ कहहिं कबीर सुनो हो संतो। भई सो राज बिराजी ॥ ७४ ॥

शब्द ७५.

ऐसो भरम बिगुर्चन भारी॥

वेद किताब दीन औ दोजख। को पुरुषा को नारी ॥ माटीका घट साज बनाया। नादे बिंद समाना॥ घट बिनसे क्या नाम धरहुगे।

अहमक खोज भुलाना ॥ एकै त्वचा हाड मल मूत्रा । एक रुधिर एक गूदा ॥ एक बूंदसे सृष्टि रची है । को ब्राह्मण को शूद्रा ॥ रजोगुण ब्रह्मा तमोगुण शंकर । सतोगुणी हरि होई ॥ कहहि कबीर राम रमि रहिये । हिंदू तुरुक न कोई ॥ ७५ ॥

शब्द ७६.

आँपुनपौ आपहि विसरयो ॥

जैसे श्वान कांच मंदिरमें । भरमित भूलि मरयो ॥ ज्यों केहरि वपु निरखि कूप जल । प्रतिमा देखि परयो ॥ वैसेहि गज फटिकशिलामों । दशनन आनि अरयो ॥ मर्कट मूठि स्वाद नहिं बिहुरे । घर घर रटत फिरयो ॥ कहहि कबीर ललनीके सुवना । तोहि कौने पकरयो ॥ ७६ ॥

शब्द ७७.

आँपन आस कीजे बहुतेरा । काहु न मर्म पावल हरिकेरा ॥ इंद्री कहां करे बिश्रामा । सो कहाँ गये जो कहत होते रामा ॥ सो कहां गये जो होत सयाना । होय मृतुक वह पदहिं समाना ॥ रामानंद रामरस माते । कहहिं कबीर हम कहि कहि थाके ॥ ७७ ॥

शब्द ७८.

अबँ हम जानियाहो हरिबाजीको खेल ॥ डंक बजाय देखाय तमासा । बहुरि लेत सकेल ॥ हरिबाजी सुरनर मुनि जहंडे । माया चाटक लाया ॥ घरमें डारि सकल भरमाया । हृदया ज्ञान न आया ॥ बाजी झूंठ बाजीगर सांचा । साधुनकी मति ऐसी ॥ कहहिं कबीर जित जैसी समुझी । ताकी गति भई तैसी ॥ ७८ ॥

शब्द. ७९

कहँहु अंमर कासो लागा । चेतनहारा चेत सुभागा ॥ अंमर मध्ये दीसे तारा । एक चेता एक चेतवन हारा ॥ जो खोजों सो उहवां नाहीं । सोतो आहि अंमरपद मांही ॥ कहहिं कबीर पद बूझे सोई । मुख हृदया जाके एकै होई ॥ ७९ ॥

शब्द ८०.

बंदे करिले आपु निबेरा ॥

आपु जियत लखु आपु ठौर करु । मुये कहां घर तेरा ॥ यह औसर नहिं चेतहु प्राणी । अंत कोइ नहिं तेरा ॥ कहहिं कबीर सुनो हो संतो । कठिन कालको घेरा ॥ ८० ॥

शब्द ८१.

संतो रहु ररा ममाकी भांतिहो । सब संत उधारन चूनरी ॥ वालमीक वन बोइया । नि लीन्हा शुकदेव ॥ कर्म विनोरा होइ रहाहो । सूत

काते जैदेव ॥ तीनिलोक ताना तनो है। ब्रह्मा विष्णु महेश ॥ नाम लेत मुनि हारिया। सुरपति सकल नरेश ॥ विष्णु जिभ्या गुण गाइया। बिनु बस्तीका देश ॥ सूने घरका पाहुना। तासों लाइनि हेत ॥ चारि वेद कैडा कियो। निराकार कियो राछ ॥ बिने कबीरा चूनरी। मैं नहिं बांध लबारि ॥ ८१ ॥

शब्द ८२.

तुंम यहि विधि समुझो लोई। गोरी मुख मंदिर बाजे ॥ एक सगुण षट चक्रहि बेधे। विना वृषभ कोल्हू माचा ॥ ब्रह्महि पकरि अगिनमा होमीं। मच्छ गगन चढि गाजा॥ नित अमावस नित ग्रहन होई। राहु ग्रासे नित दीजे ॥ सुरभी भक्षण करत वेदामुख। घन बसें तन छीजे ॥ त्रिकुटी कुंडल मध्ये मंदिर बाजे। औघट अंमर छीजे ॥ पुहुमिका पनिया अंमर भरिया।

ई अचरज कोइ बूझे ॥ कहहिं कबीर सुनो हो संतो । योगिन सिद्धि पियारी ॥ सदा रहें सुख संजम अपने । वसुधा आदि कुमारी ॥ ८२ ॥

शब्द ८३.

भूँला वे अहमक नादाना । जिन्ह हरदम रामहि ना जाना ॥ बरबस आनिके गाय पछारी । गरा काटि जीव आपु लिया ॥ जीयत जी मुरदा करि डारै । तिसको कहत हलाल हुवा ॥ जाहि मासुको पाक कहत हो । ताकी उत्पति सुन भाई ॥ रज वीर्यसे मास उपानी । सो मास न पाकि तुम खाई ॥ अपनी देखि कहत नहिं अहमक । कहत हमारे बडन किया ॥ उसकी खून तुम्हारी गर्दन । जिन्ह तुमको उपदेश दिया ॥ स्याही गई सफेदी आई । दिल सफेद अजहूं न हुवा ॥ रोज वंग निमाज क्या कीजे । हुजरे भीतर पैठी मुवा ॥ पंडित वेद

पुराण पढें सब। मूसलमान कुराना ॥ कहहिं कबीर दोउ गये नर्कमें। जिन्ह हरदम रामहिं ना जाना ॥ ८३ ॥

शब्द ८४.

काँजी तुम कौन कितेब बखानी ॥

झंकत बकत रहहु निशि बासर। मति एकौ नहिं जानी ॥ शक्ति अनुमाने सुन्नति करतु हो मैं न बदोंगा भाई ॥ जो खुदाय तेरि सुन्नति करतु है। आपुहि कटि क्यों न आई ॥ सुन्नति कराय तुरुक जो होना। औरतको क्या कहिये ॥ अर्ध शरीरी नारि बखानी। ताते हिंदू रहिये ॥ पहिरि जनेउ जो ब्राह्मण होना। मेहरी क्या पहिराया ॥ वो जन्मकी शूद्रिन परसे। तुम पांडे क्यों खाया ॥ हिंदू तुरुक कहांते आया। किन यह राह चलाया ॥ दिलमें खोजि देखु खोजा दे। बिहिस्त कहांते आ-या ॥ कहहिं कबीर सुनोहो संतो। जोर करतुहैं भाई ॥

कबीर न ओट रामकी पकरी। अंत चले पिछ-
ताई ॥ ८४ ॥

शब्द ८५.

भूलाँ लोग कहें घर मेरा ॥

जा घरमें तू भूला डोले। सो घर नाहीं तेरा ॥
हाथी घोरा बैल बाहना। संग्रह कियो घनेरा ॥
बस्तीमासे दियो खदेरा। जंगल कियो बिसेरा ॥
गांठि बांधि खर्च नहिं पठवो। बहुरि न कीयो
फेरा॥बीबी बाहर हुरम महलमें। बीच मियाँका
डेरा ॥ नौ मन सूत अरुझि नहिं सुरझे। जन्म
जन्म उरझेरा ॥ कहहिं कबीर सुनो हो संतो।
यह पदका करहु निबेरा ॥ ८५ ॥

शब्द ८६.

कबीरा तेरो घर कंदलामें। यह जग रहत
भुलाना ॥ गुरुकी कही करत नहिं कोई। अमहल

महल दिवाना॥ सकल ब्रह्ममों हंस कबीरा। काग न चोंच पसारा॥ मन्मथ कर्म धरे सब देही॥ नाद बिंद बिस्तारा॥ सकल कबीरा बोले बानी। पानीमें घर छाया॥ अनन्त लूट होत घट भीतर। घटका मर्म न पाया॥ कामिनी-रूपी सकल कबीरा। मृगा चारिंदा होई॥ बड बड ज्ञानी मुनिवर थाके। पकरि सके नहिं कोई॥ ब्रह्मा वरुण कुबेर पुरंदर। पीपा औ प्रह्लादा॥ हरणाकुश नख वोदू बिदारा। तिन्हको काल न राखा॥ गोरख ऐसो दत्त दिगम्बर। नाम-देव जैदेव दासा॥ तिनकी खबर कहत नहीं कोई। उन्ह कहां कियो है बासा॥ चौपर खेल होत घट भीतर। जन्मका पांसा डारा॥ दम दमकी कोई खबरि न जाने। कोइ कै न सके निरुवारा॥ चारि हग मही मंडल रच्यो है। रूम शाम बिच डिल्ली॥ तेहि ऊपर कछु अजब तमाशा। मारो है यम किल्ली॥ सकल

अवतार जाके महि मंडल । अनंत खडा कर जोरे ॥ अदबुद अगम औगाह रच्यो है । ई सब शोभा तेरे ॥ सकल कबीरा बोले बीरा । अजहूँ हो हुशियारा ॥ कहहिं कबीर गुरु सिकली दर्पण । हरदम करहि पुकारा ॥ ८६ ॥

शब्द ८७.

कबिरा तेरो बन कंदलामें । मानु अहेरा खेले ॥ बफुवारी आनंद मृगा । रुचि रुचि सर मेले ॥ चेतत रावल पावल खेडा । सहजै मूल बांधे ॥ ध्यान धनुष ज्ञान बाण । जोगेसर साधे ॥ षट चक्र वेधि कवल वेधि । जाय उजियारी कीन्हा ॥ काम क्रोध लोभ मोह । हांकि सावज दीन्हा ॥ गगन मध्ये रोकिन द्वारा । जहां दिवस नाहिं राती ॥ दास कबीरा जाय पहूंचे । विछुरे संग रु साथी ॥ ८७ ॥

शब्द ८८.

साँवज न होई भाई सावज न होई।वाकी मासु भखे सब कोई ॥ सावज एक सकल संसारा । अविगति वाकी बाता ॥ पेट फाडि जो देखियरे भाई।आहि करेज न आंता ॥ ऐसी वाकी मासरे भाई। पल पल मास बिकाई ॥ हाड गोड ले घूर पवारिनि । आगि धुवां नहीं खाई॥ शीरु सींगि किछुवो नहिं वाके।पूछ कहांवै पावैं॥सब पंडित मिलि धंधे परिया । कबीरा बनोरि गावैं॥८८॥

शब्द ८९.

सुँभागे केहि कारण लोभ लागे। रतन जन्म खोयो ॥ पूर्वल जन्म भूमि कारण । बीज काहेक बोयो॥बुंदसे जिन्हपिंड संजोयो।अग्निकुंडरहाया। जब दश मास माताके गर्भे।बहुरि लागल माया॥ बारहुते पुनि बृद्ध हुवा। होनहारसो हुवा॥ जब यम आयिहैं बांधि चलै हैं।नैनन भरि भरि रोया।

जीवनकी जनि आसा राखो। काल धरे हैं श्वासा। बाजी है संसार कबीरा । चित चेति डारो फांसा ॥ ८९ ॥

शब्द

संत महंतो सुमिरो सोई। जो कालफांसते वांचा होई। दत्तात्रेयमर्म नहिं जाना। मिथ्यासाधभुलाना॥ सलिल मथि घृतके काढिन । ताहि समाधि समाना ॥ गोरख पवन राखि नाहिं जाना। योग युक्ति अनुमाना॥ ऋद्धि सिद्धि संजम बहुतेरा। पारब्रह्म नहिं जाना ॥ वशिष्ट श्रेष्ठविद्या संपूरण। राम ऐसे शिष्य शाखा ॥ जाहि रामको कर्ता कहिये । तिनहुंको काल न राखा ॥ हिंदू कहैं हमहिं ले जारों। तुरुक कहैं हमारो पीर ॥ दोउ आय दीनमें झगरें। ठाढे देखें हंस कबीर॥९०॥

शब्द ९१.

तन धरि सुखिया काहु न देखा । जो देखा

सो दुखिया ॥ उदय अस्तकी बात कहत हैं। सबका किया विवेका ॥ बाटे बाटे सब कोई दुखिया। क्या गेही क्या बैरागी ॥ शुकाचार्य दुखहिके कारण । गर्भहि माया त्यागी ॥ योगी जंगम ते अति दुखिया । तापसके दुख दूना ॥ आशा तृष्णा सब घट व्यापी । कोइ महल नहिं सूना॥सांच कहों तौ सब जग खीजे । झूठ कहा ना जाई॥कहहिं कबीर तेई भौ दुखिया। जिन्ह यह राह चलाई ॥ ९१ ॥

शब्द ९२.

तौं मनको चीन्हो मोरे भाई। तन छूटे मन कहां समाई ॥ सनक सनंदन जैदेव नामा।भक्ति हेतु मन उतहुं न जाना॥अंबरीष प्रहलादसुदामा। भक्ति सही मन उनहुं न जाना ॥ भर्थरी गोरख गोपीचंदा।ता मन मिलि मिलि कियो अनंदा ॥

जा मनको कोई जानु न भेवा । ता मन मगन भये शुकदेवा॥ शिव सनकादिक नारद शेषा। तनके भीतर मन उनहुं न पेखा॥येकल निरंजन सकल शरीरा।तामहँ भ्रमिभ्रमि रहल कबीरा१२

शब्द १३.

बाबू ऐसो है संसार तिहारो। इहै कलि व्यौहारो ॥को अबअनुख सहत प्रति दिनको।नाहिं न रहनि हमारो॥सुमृति सोहाय सबै कोई जानै। हृदया तत्त्व न बूझै॥निर्जिव आगे सर्जिव थापै। लोचन किछउ न सूझै॥तजि अमृत विप काहेक अचवे । गांठि बाधिनि खोटा ॥ चोरन दीन्हो पाट सिंघासन । साहुनसे भौ ओटा ॥ कहहिं कबीर झूठे मिलि झूठा।ठगहीं ठग व्यौहारा।तीनि लोक भरपूरि रहा है। नाहीं है पतियारा॥१३॥

शब्द ९४.

कैंहो हो निरंजन कौने ग्रानी ॥

हाथ पांव मुख श्रवण जिभ्या नहिं । का कहि जपहु हो प्रानी ॥ ज्योतिहि ज्योति ज्योति जो कहिये । ज्योति कौन सहिदानी ॥ ज्योतिहि ज्योति ज्योतिदै मारे । तब कहु ज्योति कहां समानी ॥ चारि वेद ब्रह्मा जो कहिया । उनहुँ न या गति जानी ॥ कहहिं कबीर सुनो हो संतो । बूझो पंडित ज्ञानी॥९४॥

शब्द ९५.

को अैस करे नगर कोटवलिया । मासु फैलाय गिद्ध रखवरिया ॥ मूस भौ नाव मंजार कडिहरिया ॥ सोवे दादुर सर्प पहरिया ॥ बैल बियाय गाय भइ बँझा।बछरू दुहिये तीनि तीनि संझा॥ नित उठि सिंघ स्यारसों जूझे । कबिराका पद जन बिरला बूझे ॥ ९६ ॥

शब्द ९६.

कौंको रोवों गैल बहुतेरा । बहुतक मुवल फिरल नहिं फेरा ॥ जब हम रोया तब तुम न संभारा । गर्भवासकी बात विचारा ॥ अब तैं रोया क्या तैं पाया । केहि कारण अब मोहि रोवाया ॥ कहहिं कबीर सुनो संतो भाई । कालके बसि परो मति कोई ॥ ९६ ॥

शब्द ९७.

अल्लह राम जियो तेरि नाईं । जिन्हपर मेहर होहु तुम साईं ॥ क्या मुंडी भुईं शिर नाये । क्या जल देह नहाये ॥ खून करे मिस्कीन कहावै । अवगुण रहै छिपावै ॥ क्या वजू जप मंजन किये । क्या मसजीद शिर नाये ॥ हृदया कपट निमाज गुजारै । क्या हज मक्के जाये ॥ हिंदू बरत एकादशि चौबिस । तीस रोजा मुसलमाना । ग्यारह मास कहो किन टारे । एक महीना आना ॥ जौं

खुदाय महजीद बसतु है । और मुलुक केहि केरा ॥ तीरथ मूरत राम निवासी । दुइमा किनहु न हेरा ॥ पूरब दिशा हरिको बासा । पश्चिम अल्लह मुकामा ॥ दिलमें खोजि दिलहीमा खोजो । इहे करीमा रामा ॥ वेद कितेब कहो किन झूठा । झूठा जो न बिचारे ॥ सब घट एक एककै लेखे । भय दूजाके मारे ॥ जेते औरत मर्द उपानी । सो सब रूप तुम्हारा ॥ कबीर पोंगरा अल्लह रामका । सो गुरु पीर हमारा ॥ ९७ ॥

शब्द ९८.

आंव बे आव मुझे हरिको नाम । और सकल तजु कौने काम ॥ कहां तब आदम कहां तब हवा । कहाँ तब पीर पैगम्बर हुवा ॥ कहां तब जिमी कहां आसमान । कहां तब वेद कितेब क़ुरान ॥ जिन्द दुनियामें रची मसीद । झूठा रोजा झूठी

ईद ॥ सांचा एक अल्लहको नाम। जाको नइ नइ करहु सलाम ॥ कँहु धौं बहिस्त कहाँते आई। किसके कहे तुम छूरि चलाई ॥ कर्ता किरतम बाजी लाई। हिंदु तुरुककी राह चलाई ॥ कहां तब दिवस कहां तब राती। कहो तब किरतम किन उत्पाती ॥ नहिं वाके जाति नहिं वाके पाँति ॥ कहहि कबीर वाकी दिवस न राति ॥ ९८ ॥

शब्द ९९.

अब कहां चलेउ अकेले मीता। उठहु न करहु घरहुकी चिंता ॥ खीर खांड घृत पिंड संवारा। सो तन ले बाहर कै डारा ॥ जो शिर रचि रचि बांधहु पागा। सो शिर रतन बिडारत कागा ॥ हाड़ जरैं जस जंगल लकड़ी। केश जरैं जस घासकी पूली ॥ आवत संग न जात संगाती। काह भये दल बांधल हाथी ॥ मायाके रस लैन न पाया। अंतर यम बिलारि ह्वै धाया ॥

कहहि कबीर नर अजहुं न जागा । यमका मुगदर मांझ शिर लागा ॥ ९९ ॥

शब्द १००.

देखउँ लोग हरिकेर समाई।मायधरि पुत्र धियउ संग जाई॥सासु ननद मिलि अचल चलाई। मंदिरियाके गृह बैठी जाई॥हमै बहनोई राम मोर सारा । हमहिं बाप हरि पुत्र हमारा ॥ कहँहि कबीर ये हरिके बूता। राम रमे ते कुकुरिके पूता ॥ १००

शब्द १०१.

देखि देखि जिँय अचरज होई। यह पद बूझे बिरला कोई ॥ धरती उलटि अकासै जाय । चिउटीके मुख हस्ति समाय ॥ बिना पवन सो पर्वत ऊडे । जीव जंतु सब वृक्षा चढे॥ सूखे सरवर उठे हिलोरा। बिनु जल चकवा करत किलोरा ॥ बैठा पंडित पढे पुरान।बिनु देखे का करत

बखान ॥ कहहि कबीर यह पदको जान । सोई संत सदा परवान ॥ १०१ ॥

शब्द १०२.

हो दासीके ले देऊं तोहि गारी । तैं समुझि सुपंथ बिचारी ॥ घरहुक नाह जो अपना । तिन हुसे भेंट न सपना ॥ ब्राह्मण क्षत्री बानी । तिनहु कहल नहिं मानी ॥ योग जंगम जेते । आपु गहे हैं तेते ॥ कहहिं कबीर एक योगी । वो तो भर्मि भर्मि भौ भोगी ॥ १०२ ॥

शब्द १०३.

लोगों तुमहिं मतिके भोरा ॥

ज्यों पानी पानी मिलि गयऊ । त्यों धुरि मिला कबीरा ॥ जो मैथिलको सांचा व्यास । तोहर मरण होय मगहर पास ॥ मगहर मरे मरं नहिं पावे । अंते मरे तो राम लजावे ॥ मगहर मरे सो गदहा होय । भल परतीत रामसो खोय ॥

क्या कासी क्या मगहर ऊसर । जोपै हृदय राम बसे मोर ॥ जो कासी तन तजे कबीरा।तो रामहि कहु कौन निहोरा ॥ १०३ ॥

शब्द १०४.

कैसे तरौ नाथ कैसे तारो। अब बहु कुटिल भरो ॥ कैसी तेरी सेवा पूजा ॥ कैसो तेरो ध्यान उपर उजल देखो बग अनुमान ॥ भाव तो भुजंग देखो।अति बिबिचारी॥सुरति सचान।तेरी मति तो मंजारी ॥ अतिरे बिरोधि देखो अतिरे सयाना । छौ दर्शन देखो भेष लपटाना॥कहहि कबीर सुनो नर बंदा । डाइनि डिंभ सकल जग खंदा ॥ १०४ ॥

शब्द १०५.

ये भ्रम भूतसकल जग खाया । जिन जिन पूजा ते जहंडाया॥अंड न पिंड न प्राण न देही। कोटि कोटि जीव कौतुक देही ॥ बकरी मुरगी कीन्हेउ छेवा ॥ आगल जन्म उन्ह औसर

लेवा ॥ कहहिं कबीर सुनो नर लोई । भुतवाके पुजले भुतवा होइ ॥ १०५ ॥

शब्द १०६.

भँवँर उडे बग बैठे आई। रैन गई दिवसो चलि जाई ॥ हल हल कांपो बाला जीऊ । ना जानो का करिहै पीऊ ॥ कांचे बासन टिके न पानी । उडि गये हंस काया कुम्हिलानी ॥ कागा उडावत भुजा पिरानी । कहहि कबीर यह कथा सिरानी ॥ १०६ ॥

शब्द १०७.

खँसम बिनु तेलीको बैल भयो ॥

बैठत नाहिं साधुकी संगत। नाधे जन्म गयो॥ वहि वहि मरहु पचहु निज स्वारथ । यमको डंड सह्यो ॥ धन दारा सुत राज काज हित । माथे भार गह्यो । खसमहिं छाडि विषय संग रातेव । पापके बीज बोयो ॥ झूठी मुक्ति नर आस जीवनकी । प्रेत को जूठ खयो ॥

लख चौरासी जीव जंतुमें । सायर जात बह्यो ॥ कहहिं कबीर सुनो हो संतो । उन्ह श्वानोंकी पूछ गह्यो ॥ १०७ ॥

शब्द १०८.

अब हम भैलि बहुरि जल मीना । पूर्वल जन्म तपका मद कीन्हा ॥ तहिया मैं अछलेउं मन बैरागी । तजलेउं मैं लोग कुटुम राम लागी ॥ तजलेउं मैं काशी मति भइ भोरी । प्राणनाथ कहु का गति मोरी ॥ हमहिं कुसेवक कि तुमहिं अयाना । दुइमा दोष काहि भगवाना ॥ हम चलि आयलि तुम्हरे शरणा । कितहुं न देखो हरिजीके चरणा ॥ हम चलि आयलि तुम्हरे पासा । दास कबीर भल कैल निरासा ॥ १०८ ॥

शब्द १०९.

लोग बोले दुरि गये कबीर । ये मति कोई कोई जानेगा धीर ॥ दशरथ सुत तिहुं लोकहि जाना ।

राम नामका मर्म है आना ॥ जेहि जीव जानि परा जस लेखा । रज्जुका कहे उरग सम पेखा ॥ यद्यपि फल उत्तम गुण जाना । हरि छोडि मन मुक्ति उनमाना ॥ हरि अधार जस मीनहि नीरा ॥ और जतन कछु करै कबीरा ॥ १०९ ॥

शब्द ११०.

आपनैं कर्म न मेटो जाई ॥

कर्मका लिखल मिटे धौ कैसे । जो युग कोटि सिराई ॥ गुरु वशिष्ठ मिलि लगन सुधायो । सूर्य मंत्र यक दीन्हा ॥ जो सीता रघुनाथ बिहाई । पल एक संच न कीन्हा ॥ तीन लोकके कर्ता कहिये ॥ बालि बधो बरियाई ॥ एक समय ऐसी बनि आई । उनहूं औसर पाई ॥ नारद मुनिको बदन छिपायो । कीन्हों कपिको स्वरूपा ॥ शिशुपालकी भुजा उपारी । आपु भये हरि ठूंठा ॥

पार्वतीको बांझन कहिये । ईश्वर न कहिये भिखारी ॥ कहहिं कबीर कर्ताकी बातें । कर्मकी बातनि न्यारी ॥ ११० ॥

शब्द १११.

है कोई गुरुज्ञानी । जगत उलटि वेद बूझै ॥ पानीमें पावक बरै । अंधहि आँखिन सूझै ॥ गाइ तो नाहर खायो । हरनै खायो चीता ॥ काग लंगर फाँदिके । बटेर बाज जीता ॥ मूस तो मंजार खायो । स्यार खायो स्वाना ॥ आदि कोउ देश जानै । तासु वेसबाना ॥ एकहि दादुर खायो । पाँचहि भुवंगा ॥ कहहिं कबीर पुकारिके । हैं दोऊ एक संगा ॥ १११ ॥

शब्द ११२.

झँगरा एक बढो राजा राम । जो निरुवारे सो निर्वान ॥ ब्रह्म बडा कि जहाँसे आया । वेद बडा की जिन्ह उपजाया ॥ ईसन बडा कि

जेहि मन माना। राम बड, की रामहि जाना॥
भ्रमि भ्रमि कबीर फिरें उदास। तीर्थ बडा की तीर्थका दास ॥ ११२ ॥

शब्द ११३.

झूँठे हि जनि पतियाउ हो। सुनु संत सुजाना॥
तेरे घटहीमें ठगपुर है। मति खोवहू अपाना॥
झूठेकी मंडान है। धरती असमाना॥
दशहु दिशा वाकी फंद हैं। जीव घेरे आना॥
योग जप तप संयमा। तीरथ व्रत दाना॥
नौधा वेद कितेब है। झूठेका वाना॥
काहुके वचनहि फूरे। काहु करामाती॥
मान वडाई ले रहे। हिंदू तुरुक जाती॥
वात व्योते अस्मानकी। मुदति नियरानी॥
बहुत खुदी दिल राखते। बूडे विनु पानी॥
कहहिं कवीर कासो कहौं। सकलो जग अंधा॥
सांचे से भागा फिरा। झूठेका बंदा ॥११३॥

शब्द ११४.

सारँ शब्दसे बांचि हो। मानहु इतबारा हो ॥ आदि पुरुष एक वृक्ष है। निरंजन डारा हो ॥ त्रिदेवा शाखा भये। पत्र संसारा हो ॥ ब्रह्मा वेद सही कियो। शिव योग पसारा हो ॥ विष्णु माय उत्पत्ति कियो। ईउरले व्यौहारा हो॥ तीनि लोक दशहु दिशा। यम रोकिन द्वारा हो ॥ कीर भये सब जीयरा। लिये बिषका चारा हो॥ ज्योतिस्वरूपी हाकिमा। जिन्ह अमल पसारा हो ॥ कर्मकी बन्सी लायके। पकरो जग सारा हो॥ अमल मिटावो तासुका। पठवों भव पारा हो॥ कहहिं कबीर तोहि निर्भय करों। परखो टकसारा हो ॥ ११४ ॥

शब्द ११५.

संतो ऐसी भूलँ जगमाहीं। जाते जीव मिथ्यामें

जाहीं ॥ पहिले भूले ब्रह्म अखंडित । झाँई आपुहि मानी॥झाँई में भूलत इच्छा कीन्ही । इच्छाते अभिमानी॥अभिमानी कर्ता ह्वै बैठे। नाना ग्रंथ चलाया ॥ वोहि भूलमें सब जग भूला । भूलका मर्म न पाया ॥ खल चौरासी भूलते कहिये। भूलते जग बिटमाया ॥ जौ है सनातन सोई भूला । अब सो भूलहि खाया ॥ भूल मिटै गुरु मिले पारखी । पारख देहिं लखाई ॥ कहहिं कबीर भूलकी औषध।पारख सबकी भाई॥११९

ज्ञान चौंतीसा ।

ॐकार आदि जो जाने।लखिकै मेटै ताहिसों माने॥ ॐकार कहैं सब कोई।जिन्ह यह लखा सो बिरला होई॥ कंका कँवल किर्णमो पावै। शशि बिगसित संपुट नहिं आवै॥तहां कुसुम रंग

जो पावे । औगह गहिके गगन रहावे ॥ १ ॥ खेखा चाहे खोरि मनावे । खसमहि छाडि दहूं दिश धावे ॥ खसमहि छाडि छिमा ह्वै रहिये। होय न खीन अक्षय पद लहिये ॥ २ ॥ गंगा गुरुके बचनहि मान । दूसर शब्द करो नहिं कान ॥ तहां बिहंगम कबहुं न जाई । औगह गहिके गगन रहाई ॥ ३ ॥ घंघा घट बिनसे घट होई । घटहीमें घट राखु समोई ॥ जो घट घटे घटहि फिरि आवे। घटहीमाँ फिर घटहि समावे ॥ ४ ॥ङङा निरखत निशदिन जाई। निरखत नैन रहे रतनाई ॥ निमिषं एक जो निरखै पावे। ताहि निमिषमें नैन छिपावे॥५॥चचाँ चित्र रचो बड भारी। चित्र छोडि तैं चेतु चित्रकारी॥ जिन्ह यह चित्र विचित्र है खेला। चित्र छोडि तैं चेतु चीतेला ॥ ६ ॥ छँछा आहि छत्रपति पासा ।

छकि किन रहहु मेटि सब आसा ॥ मैं तोहीं छिनछिन समुझावा । खसम छाडि कस आपु बंधावा ॥७॥ञँजा ईतन जियत न जारो । जौवन जारि युक्ति तन पारो ॥ जो कछु युक्ति जानि तन जरे । ई घट ज्योति उजियारी करै ॥८॥ झंझा अरुझि सरुझि कित जान । अरुझनि ढोंडत जाय परान ॥ कोटि सुमेर ढूंढि फिरि आवै ॥ जो गढ गढे गढैया सो पावे ॥९॥ञंञा निग्रहै से नेहू ॥ करु निरुवार छांड़ संदेहू ॥ नहिं देखे नहिं भाजिया परम सयान पयेहू ॥ जहां न देखि तहां आपु भजाऊ । जहां नहिं तहाँ तन मन लाऊ ॥ जहां नहिं तहां सब कछु जानी । जहां है तहां ले पहिचानी ॥१०॥ टट्टा विकट बाट मनमांही । खोलि कपाट महलमों जाही ॥ रही लटापटि जुटि तेहिमांही । होहि अटल तब कतहुं न जाई ॥ ११ ॥

ठंठा ठौर दूर ठग नियरे। नितके निठुर कीन्ह मन घेरे ॥ जे ठग ठगे सब लोग सयाना । सो ठग चीन्हि ठौर पहिचाना ॥ १२ ॥ डडॉ डर उपजे डर होई । डरहीमें डर राखु समोई ॥ जो डर डरे डरहि फिरि आवे । डरहीमें फिर डरहि समावे ॥ १३ ॥ ढंढा हींडतही कित जान। हींढत ढूंढत जाई प्रान ॥ कोटि सुमेर ढूंढि फिरि आवे । जेहि ढूंढा सो कतहुं न पावे ॥ १४॥ णॅणा दुई बसाये गांऊ । रेणा ढूंढे तेरी नाऊ ॥ मुये एक जाय तजि घना । मरे इत्यादिक्क केतेको गना ॥ १५ ॥ तंता अति त्रियो नाहिं जाई । तन त्रिभुवनमें राखु छिपाई ॥ जो तन त्रिभुवनमांहि छिपावे । तत्त्वहि मिलि तत्त्वसो पावे ॥ १६ ॥ थथां अति अथाह थाहो नाहिं जाई । ई थिर ऊ थिर नाहिं रहाई ॥ थोरे थोरे थिर होउ भाई । बिन थंभे जस मंदिर थंभाई १७

ददाँ देखहु बिनसनहारा। जस देखहु तस करहु बिचारा॥ दसहुं द्वारे तारी लावे। तब दयालके दर्शन पावे॥ १८॥ धंधा अर्धमांहि अँधियारी। अर्ध छाडि ऊर्ध मन तारी॥ अर्ध छोडि ऊर्ध मनलावे। आपा मेटिके प्रेम बढावे॥ १९॥ चौथे वो नाँमँह जाई। रामका गद्धा होय खर खाई॥ २०॥ पंपा पाप करें सब कोई। पापके करे धर्म नहिं होई॥ पपा कहे सुनहु रे भाई। हमरेसे इन किछुवो न पाई॥ २१॥ फंफा फल लागे बड दूरी। चाखे सतगुरु देइ न तूरी॥ फँफा कहे सुनहु रे भाई। स्वर्ग पतालकी खबरि न पाई॥ २२॥ बँबा बर बर करें सब कोई। बरबर करे काज नहिं होई॥ बबा बात कहें अर्थाई। फलका मर्म न जानहु भाई॥ २३॥ भंभा भर्मि रहा भरपूरी। भभरेते है नियरे दूरी॥ भभा कहे सुनहु रे भाई। भभरे आवे भभरे जाई॥२४॥

मँमाके सेये मर्म नहिं पाई। हमरेसे इन मूल गमाई। माया मोह रहा जग पूरी। माया मोहहि लखहु बिसूरी॥२५॥ यँयाँ जगत रहा भरपूरी। जगतहुंते है जाना दूरी॥ यया कहे सुनहुरे भाई। हमहीं ते इन जै जै पाई॥२६॥ रँरा रारि रहा अरुझाई। रामके कहे दुख दारिद्र जाई॥ रँरा कहे सुनहु रे भाई। सतगुरु पूँछिके सेवहु आई॥२७॥ लँला तुतुरे बात जनाई। तुतुरे आय तुतुरे परचाई॥ आप तुतुरे औरकी कहई। एकै खेत दुनों निर्बहई॥२८॥ वँवा वह वह कहैं सब कोई। वह वह कहे काज नहिं होई॥ वह तो कहे सुने जो कोई। स्वर्ग पतालन देखे जोई॥२९॥ शँशा सर नहिं देखे कोई। सर शीतलता एकै होई॥ शँशा कहे सुनहु रे भाई। शून्य समान चला जग जाई॥३०॥ षँषा खरा करें सब कोई। खर खर करे काज नहिं होई॥

षषा कहे सुनहु रेभाई । राम नाम ले जाहु पराई ॥ २१ ॥ ससा सरा रचौ बरियाई।सर वेधे सब लोग तवाई॥ससाके घर सुन गुण होई । इतनी बात न जाने कोई ॥ ३२ ॥ हहा हाय हायमें सब जग जाई । हर्ष सोग सब मांहि समाई॥ हकरि हकारि सब बड बड गयऊ । हहा मर्म न काहू पयऊ ॥ ३२ ॥ क्षक्षा छिनमें परलय सब मिटि-जाई। छेव परे तब को समुझाई॥ छेव परै काहु अंत न पाया। कहहिं कबीर अगमन गोहराया ॥ ३४ ॥

विप्रमतीसी ।

विप्रमतीसी १.

सुनहु सबन मिलि विप्रमतीसी । हरि बिनु बूडी नाव भरी सी॥ब्राह्मण होयके ब्रह्म न जाने। घरमा यज्ञ प्रतिग्रह आने ॥ जेहि सिरजा तेहि

ना पहिचाने। कर्म धर्म मति बैठि बखाने॥ ग्रहन असावस और दुईजा। शांति पांति प्रयोजन पूजा॥ प्रेत कनक मुख अंतर बासा। आहुति सत्य होमकी आसा॥ कुल उत्तम जगमांहि कहावे। फिर फिर मध्यम कर्म करावे॥ सुत दारा मिलि जूठो खाई। हरिभक्ताके छूति लगाई॥ कर्म अशौच उच्छिष्टा खाई। मतिभ्रष्ट यमलोक सिधाई॥ नहाय खोरि उत्तम है आये। विष्णु भक्त देखत दुख पाये॥ स्वारथ लागि रहे बेकाजा। नाम लेत पावक जिमि डाजा॥ राम कृष्णकी छोडि न आसा। पढि गुनि भये कृतमके दासा॥ कर्म पढें औ कर्मको धावें। जेहि पूछा तेहि कर्म दृढावें॥ निःक-र्मीकी निंदा कीजे। कर्म करें ताही चित दीजे॥ भक्ति भगवंतकी हृदया लावें। हिरणाकुशको पंथ चलावें॥ देखहु सुमतिकेर परकासा।

बिनु अभ्यंतर भये कृतमके दासा ॥ जाके पूजे पाप न ऊडे । नाम स्मैरणी भवसा बूडे ॥ पाप पुण्यके हाथहि पासा । मारि जगतका कीन्ह बिनासा ॥ ई बहनी कुल बहनि कहावैं । ई गृह जारे ऊ गृह मारे ॥ बैठे ते घर साहु कहावैं । भीतर भेद मन्मुखहि लगावैं ॥ ऐसी विधि सुर बिप्र भनीजे । नाम लेत पीचासन दीजे ॥ बूडि गये नहिं आपु सँभारा । ऊंच नीच कहु काहि जो हारा ॥ ऊंच नीच है मध्यकी बानी । एकै पवन एक है पानी ॥ एकै मटिया एक कुम्हारा । एक सबनका सिरजनहारा ॥ एक चाक सब चित्र बनाई । नाद बिंदके मध्य समाई ॥ व्यापिक एक सकलकी ज्योती । नाम धरे का कहिये भौती ॥ राक्षस करनी देव कहावैं । वाद करैं गोपाल न भावैं ॥ हंस देह तजि न्यारा होई । ताकर जाति कहै धौं कोई ॥ श्याह सफेद कि राता पियरा । अबरण

वरण कि ताता सियरा। हिंदू तुरुक कि बूढोबा-
रा॥ नारि पुरुषका करहु विचारा॥ कहिये काहि
कहा नाहिं माना। दास कबीर सोइ पै जाना॥
साखी—बहा है बहि जातहौ। कर गहिये चहुं ओर॥
जो कहा नाहिं माने तो। दे धक्का दुइ ओर॥ १॥

कहरा।

कहरा १.

सहज ध्यान रहु सहज ध्यान रहु। गुरुके वचन
समाई हो॥ मेली सृष्टि चरा चित राखहु। रहौ
दृष्टि लौलाई हो॥ जस दुख देखि रहहु यह
औसर। अस सुख होइ हैं पाये हो॥ जो खुटकार
बेगि नहिं लागे। हृदय निवारहु कोऊ हो॥
मुक्तिकी डोरी गाढि जनि खैंचहु। तब बझि है
बडरोहू हो॥ मनुवहि कहहु रहहु मन मारे।

खिजुवा खीजि न बोले हो ॥ मानु मीत मितैवो न छोडे । कमऊ गांठि न खोले हो ॥ भोगउ भोग भुक्ति जनि भूलहु । योग युक्ति तन साधहु हो ॥ जो यह भांति करहु मतवलिया । ता मतके चित बांधहु हो ॥ नाहिं तो ठाकुर है अति दारुण । करि है चाल कुचाली हो ॥ बांधि मारि डंड सब लेहीं । छूटहिं तब मतवाली हो ॥ जबहीं सावत आनि पहूँचे । पीठ सांठि भल टुटि हैं हो ॥ ठाढे लोग कुटुम्ब सब देखे । कहे काहुके न छूटि हैं हो ॥ एक तो निहुरि पांव परि बिनवै । बिनति किये नहिं माने हो ॥ अनचीन्हे रहहु न कियेहु चिन्हारी । सो कैसे पहिचनबेउ हो ॥ लीन्ह बुलाय बात नहिं पूछी । केवट गर्भ तन बोले हो ॥ जाकर गांठि समर कछु नाहीं । सो निर्धनिया ह्वै डोले हो ॥ जिन्ह सम युक्ति अगमनके राखिन । धरिन मच्छ भरि डेहरि हो ॥ जेकर हाथ पांव

कछु नाहीं । धरन लाग तेहि सो हरि हो ॥ पेलना अछत पेलि चलु बौरे । तीर तीर का टोवहु हो ॥ उथले रहहु परहु जनि गहिरे । मति हाथहुकी खोवहु हो ॥ तरके घाम उपरके भुभुरी । छाहँ कतहुँ नहिं पायहु हो ॥ ऐसेनि जानि पसीझेहु सीझेहु । कस न छतुरिया छायहु हो ॥ जो कछु खेड कियहु सो कीयेहु । बहुरि खेड कस होई हो ॥ सासु ननँद दोऊ देत उलाटन । रहहु लाज मुख गोई हो ॥ गुरु भौ ढील गोनी भई लचपच । कहा न मानेहु मोरा हो ॥ ताजी तुर्की कबहुँ न साधेहु । चढेहु काठके घोरा हो ॥ ताल झांझभल बाजत आवे । कहरा सब कोइ नाचे हो ॥ जेहि रंग दुलहा ब्याहन आये । दुलहिनि तेहिरंग राचे हो ॥ नौका अछत खेवे नहिं जाने । कैसेक लगवेहु तीरा

हो ॥ कहहिं कबीर रामरस माते । जोलहा दास कबीरा हो ॥ १ ॥

कहरा २.

मतँ सुनु मानिक मत सुनु मानिक । हृदया बंद निवारहु हो ॥ अटपट कुम्हरा करे कुम्हरैया । चमरा गांव न बांचे हो ॥ नित उठि कोरिया पेट भरतु है । छिपिया आंगन नाचे हो ॥ नित उठि नौवा नाव चढतु है बेरहि बेरा बोरे हो ॥ राउरकी कछु खबरि न जानहु । कैसेकै झगरा निबेरहु हो ॥ एक गांव में पांच तरुनि बसै । जेहिमा जेठ जेठानी हो ॥ आपन आपन झगरा प्रकासिनि । पियासों प्रीति नसाइनि हो ॥ भौंसिंनमांहिं रहत नित बकुला । तिकुला ताकि न लीन्हा हो ॥ गाइन माहिं बसेउ नहिं कबहू । कैसे पद पहिचनबेउ हो ॥ पंथी पंथ बूझ नहिं लीन्हा । मूढहिं मूढ गंवारा हो ॥ घाट छोडि कस औघट रेंगहु कैसेक

लगबहु तीरा हो ॥ जँतइनके धन हेरिन लल-
चिन। कोदइतके मन दौरा हो ॥ दुइ चकरी जनि
दरर पसारहु । तब पैहो ठीक ठौरा हो ॥ प्रेम
बाण एक सतगुरु दीन्हो । गाढों तीर कमाना
हो ॥ दास कबीर कीन्ह यह कहरा । महरामांहि
समाना हो ॥ २ ॥

कहरा ३.

रामनामको सेवहु बीरा । दूरि नाहिं दुरि
आसा हो ॥ और देव का सेवहु बौरे । ई सब
झूठी आसा हो ॥ ऊपर ऊजर कहा भौ बौरे ।
भीतर अजहूं कारो हो ॥ तनके वृद्ध कहा भौ
बौरे । मनुवा अजहूं बारो हो ॥ मुखते दांत
गये कहा बौरे । भीतर दांत लोहेके हो ॥ फिर
फिर चना चबाव विषयके। काम क्रोध मद लोभै-
के हो ॥ तनकी सकल संज्ञा घटि गयऊ ।

मनहि दिलासा दूना हो ॥ कहहिं कबीर सुनो हो संतो । सकल सयाना पहुना हो ॥ ३ ॥

कहरा ४.

ओढ़न मोर राम नाम । मैं रामहिका बनजारा हो ॥ राम नामका करहु बनिजिया । हरि मोरा हटवाई हो॥ सहस नामका करों पसारा।दिन दिन होत सवाई हो ॥जाके देव वेद पछ राखा । ताके होत हटवाई हो ॥ कानि तराजू सेर तीलि पउवा । तुर्किनि ढोल बजाई हो ॥ सेर पसेरी पूरा कैले । पासंग कतहुँ न जाई हो ॥ कहहिं कबीर सुनो हो संतो । जोर चला जहंडाई हो ॥ ४ ॥

कहरा ५.

राम नाम भजु राम नाम भजु । चेति देखु मनमाहीं हो। लच्छ करोरि जोरि धन गाडे। चलत डोलावत बांही हो ॥ दादा बाबा और प्रपाजा । जिन्हके यह भुइँ भांडे हो ॥ आँधर भये हियहु

की फूटी । तिन्ह काहे सब छाडे हो॥ ई संसार असारको धंधा । अन्तकाल कोइ नाहीं हो ॥ उपजत बिनसत बार न लागे । ज्यों बादरकी छांही हो ॥ नात गोत कुल कुटुंम सब । इन्हकर कौन बडाई हो ॥ कहहि कबीर एक राम भजे बिनु । बूडी सब चतुराई हो ॥ ५ ॥

कहरा ६.

रामँ नाम बिनु राम नाम बिनु । मिथ्या जन्म गमायो हो ॥ सेमर सेइ सुवा ज्यों जहँडे । ऊन परे पछिताई हो॥जैसे मदपी गांठी अर्थ दे । घरहुकी अकिल गमाई हो॥ स्वादे वोद्र भरे धौं कैसे । ओसे प्यास न जाई हो ॥ दर्बहीन जैसे पुरुषारथ । मनहीमांहि तबाई हो ॥ गांठि रतन मर्म नहिं जाने । पारख लीन्हा छोरी हो॥कहहिं कबीर यह औसर बीते । रतन न मिले बहोरी हो ॥ ६ ॥

कहरा. ७

रहहु संभारे राम विचारे । कहता हौं जे पुकारे हो ॥ मूंड मुंडाय फूलिके बैठे । मुद्रा पहिर मंजूसा हो ॥ तेहि ऊपर कछु छार लपेटे । भितर भितर घर मूसा हो ॥ गांव बसतु है गर्भ भारती । वाम काम हंकारा हो ॥ मोहन जहां तहां ले जइ हैं । नहिं पत रहल तुम्हारा हो ॥ सांझ मंझारिया बसे सो जाने । जन होइ है सो थीरा हो ॥ निर्भय भये तहाँ गुरूकी नगरिया । सुख सोवें दास कबीरा हो ॥

कहरा ८.

क्षेमं कुसल औ सही सलामत । कहहु कौनको दीन्हा हो ॥ आवत जात दोऊ विधि लूटे । सर्व तंग हरि लीन्हा हो ॥ सुर नर मुनि जति पीर औलिया । मीरा पैदा कीन्हा हो ॥ कहाँ लों गनों अनंत कोटि लों । सकल पयाना कीन्हा हो ॥

पानी पवन अकाश जायँगे। चंद्र जायँगे सूरा हो॥ येभि जायँगे वोभि जायँगे। परत न काहुके पूरा हो॥ कुशल कहत कहत जग बिनसे। कुशल कालकी फांसी हो॥ कहैं कबीर सारि दुनिया बिनसे। रहे राम अविनासी हो॥ ८॥

कहरा ९.

ऐसनि देह निरालप बौरे। मुवले छुवे नहिं कोई हो॥ डंडवाकी डोरिया तोरिया तोरि लराइनि। जो कोटिन धन होई हो॥ ऊर्धनि स्वासा उपजि तरासा। कहराइनि परिवारा हो॥ जो कोई आवे बेगि चलावे। पल एक रहन न पाई हो॥ चंदन चीर चतुर सब लेपैं। गरे गजमुक्ताके हारा हो॥ चौसठ गीध मुये तन लूटै। जंबुकन वोद्र बिदारा हो॥ कहहिं कबीर सुनो हो संतो ज्ञानहीन मतिहीना हो॥ इक इक दिना याहि गति सबकी। कहा राव कहा दीना हो॥ ९॥

माया किनहुं न भोगी हो ॥ वेद पढंते वेदुवा मारे। पूजा करंते स्वामी हो ॥ अर्थ विचारत पंडित मारे। बांधेउ सकल लगामी हो। सिंगीऋषि वन भीतर मारे। शिर ब्रह्माका फोरी हो ॥ नाथ मछंदर चले पीठिदे । सिंघलहूमें बोरी हो ॥ साकटके घर कर्ता धरता । हरिभक्तोंते चेरी हो ॥ कहहिं कबीर सुनो हो संतो । ज्यों आवे त्यों फेरी हो ॥

वसंत ।

वसंत १.

जाके बारह मास वसंत होय। ताके परमारथ बूझै बिरला कोय॥ बरसै अगिन अखंड धार । हरियर भो वन अठारह भार ॥ पनिया आदर धरिन लोय। पौन गहे कस मलिन धोय ॥ बिनु तरिवर फूले आकाश। शिव बिरंचि तहां लेइ बास॥ सन

कादिक भूले भँवर बोय । लख चौरासी जोइनि जोय ॥ जो तोहिं सतगुरु सत्त लखाव । ताते न छूटे चरण भाव ॥अमर लोक फल लावे चाव। कहहिं कबीर बूझे सो पाव ॥ १ ॥

बसंत २.

ऐसना पढिलेहु श्री बसंत।बहुरि जाय परबेहु यमके फंद ॥ मेरुडंडपर डंक दीन्ह।अष्ट कवल परचारि लीन्ह॥ब्रह्म अगिन कियी परकास।अधः ऊर्ध तहां बहे बतास ॥ नौ नारि परिमल सो गांव सखी पांच तहां देखन धाव ॥ अनहद बाजा रहल पूरि। तहां पुरुष बहत्तर खेलैं धूरि॥माया देखि कस रह्यो है भूलि। जस बनस्पति रहि है फूलि ॥ कहैं कबीर यह हरिकेदास।फगुवा माँगे वैकुंठ बास ॥ २ ॥

बसंत ३.

मैं आयों मेस्तर मिलन तोहि।रितु बसंत पहि

रावहु मोहिं।लंबी पुँरिया पाई छीन।सूत पुराना खूटा तीन ॥ सर लागे तेहि तीनसै साठ।कसनि बहत्तर लागु गांठ ॥ खुरखुर खुरखुर चले नारि। बैठि जोलाहिन पल्थी मारि ॥ ऊपर नचनियां करत कोड । करिगहमाँ दुइ चलत गोड ॥पांच पचीसो दशहुं द्वार।सखी पांच तहां रची धमार॥ रंग विरंगी पहिरे चीर। हरिके चरण धै गावैं कबीर ॥ ३ ॥

वसंत ४.

बुढिया हंसि बोलि मैं नितहिं वार । मोसों तरुनि कहो कौनि नार ॥ दांत गये मोरे पान खात । केस गये मोरे गंगा नहात ॥ नैन गये मोरे कजरा देत । वैस गये पर पुरुप लेत॥ जान पुरुप वा मोर अहार । अनजानेका करों सिंगार ॥ कहहिं कबीर बुढिया अनंद गाय । पूत भतारहि बैठी खाय ॥ ४ ॥

वसंत ५.

तुम बुझ बुझ पंडित कौनि नारि । काहु न व्याहलि है कुमारि ॥ सब देवन मिलि हरिहि दीन्ह । चारिउ युग हरि संग लीन्ह॥प्रथम पदु- मिनी रूप आहि । है साँपिनी जग खेदि खाय॥ ई बर जोवत ऊबर नाहिं।अतिरे तेज त्रिय रैनि ताहि ॥ कहहिं कबीर ये जग पियारि । अपने बलकवहिं रहल मारि ॥ ५ ॥

वसंत ६.

माई मोर मनुसा अति सुजान । धंध कुटि कुटि करत बिहान ॥ बडी भोर उठि आंगन बाढु । बडे खांच ले गोबर काढु॥ बासी भात मनुसे लिहल खाय । बडो घैल लिये पानीको जाय ॥ अपने सैंयाकी मैं बांधूं पाट । ले बेचूंगी हाटो हाट ॥ कहहिं कबीर ये हरिके काज।जोइ याके ढिग रहि कौनि लाज ॥ ६ ॥

वसंत ७.

घरहिमें बाबुल बाढलि रारि। उठिउठि लागलि चपल नारि ॥ एक बडी जाके पाँच हाथ। पांचों के पचीस साथ ॥ पचीस बतावें और और। और बतावें कईक ठौर ॥ अंतर मध्ये अंत लेइ। झक झोरि झोरा जिवहि देइ ॥ आपन आपन चाहें भोग। कहु कैसे कुशल परिहैं जोग ॥ विवेक विचार न करै कोय। सब खलक तमासा देखे लोय ॥ मुख फारि हँसै राव रंक। ताते धरे न पावे एको अंक ॥ नियरे न खोजे बतावे दूरि। चहुं दिश बागुलि रहलि पूरि ॥ लछ अहेरी एक जीव। ताते पुकारे पीव पीव ॥ अबकी बार जो होय चुकाव। कहहिं कबीर ताकी पूरि दाव ॥ ७ ॥

वसंत ८.

कर्ई पल्लवके बल खेले नारि। पंडित होय सो लेइ बिचारि॥ कपरा न पहिरे रहै उघारि। निर्जिव से धनि अति पियारि॥ उलटि पलटि बाजु तार। काहु मारे काहु उबार॥ कहै कबीर दासनके दास। काहु सुख दे काहु निरास॥८॥

वसंत ९.

ऐसो दुर्लभ जात शरीर। राम नाम भजु लागु तीर॥ गये बेनु बलि गये कंस। दुर्योधन को बूडो वंस॥ पृथु गये पृथ्वीके राव। त्रिवि-क्रम गये रहे न काव॥ छौ चक्कवे मंडलीके झारि। अजहुँ हो नर देखु विचारि॥ हनुमंत कश्यप जनक बालि। ई सब छेकल यमके द्वारि॥ गोपीचंद भल कीन्ह योग। जस रावण मारयो करत भोग॥ ऐसी जात देखि नर सब-हिं जान। कहहिं कबीर भजु राम नाम॥९॥

वसंत १०.

सबहीं मदमाते कोई न जाग। संगहि चोर घर मूसन लाग ॥ योगी माते योग ध्यान । पंडित माते पढि पुरान ॥ तपसी माते तपके भेव । संन्यासी माते करि हमेव ॥ मोलना माते पढि मुसाफ । काजी माते दै निसाफ ॥ संसारी माते मायाके धार । राजा माते करि हँकार॥ माते शुकदेव उद्धव अक्रूर । हनुमंत माते लै लँगूर ॥ शिव माते रहि चरण सेव । कलि माते नामा जैदेव ॥ सत्य सत्य कहे सुमृति वेद । जस रावण मोरउ घरके भेद ॥ चंचल मनके अधम काम। कहहिं कबीर भजु राम नाम ॥ १० ॥

वसंत ११.

शिव कासी कैसे भई तुम्हारी । अजहुँ हो शिव लेहु विचारी ॥ चोवा चंदन अगर पान । घर घर सुमृति होय पुरान ॥ बहु विधि भवनै लागु भोग ।

ऐसो नग्र कोलाहल करत लोग ॥ बहु विधि भवन बरजा लोग तोर। तेहि कारण चित धीठ मोर ॥ हमरे बलकवाके इहै ज्ञान। तोहराके समुझावे आन॥ जो जेहि मनसे रहल आय। जीवका मरण कहु कहां समाय ॥ ताकर जो कछु होय अकाज । ताहि दोष नाहिं साहेब लाज ॥ हर हर्षित सों कहल भेव । जहाँ हम तहाँ दुसरा न केव ॥ दिना चारि मन धरहु धीर। जस देखे तस कहैं कबीर ॥ ११ ॥

वसंत १२.

हमरे कहलक नहिं पतियार। आप बूडे नर सलिल धार ॥ अंधा कहे अंधा पतियाय । जस बिस्वाके लगन धराय ॥ सो तो कहिये ऐसो अबूझ । खसम ठाढ ढिग नाहीं सूझ ॥ आपन आपन चाहैं मान । झूठ प्रपंच सांच करि जान॥

झूठा कबहुँ न करि है काज । हौं बरजो तोहि सुनु निलाज ॥ छाडहु पाखँड मानो बात ।नहिं तो परवेहु यमके हाथ ॥ कहहिं कबीर नर कियो न खोज । भटकि मुवा जस वनके रोझ ॥ १२ ॥

चाचर ।

चाचर १.

खेलति माया मोहनी।जिन्ह जेर कियो संसार॥ रचेउ रंगते चूनरी । कोइ सुंदरी पहिरे आय ॥ शोभा अदभुद रूप वाकी।महिमा वरनि न जाय॥ चंद्रवदनि मृगलोचनी माया।बुंदका दियोउघार॥ जती सती सब मोहिया । गजगति ऐसी जाकी चाल ॥ नारदको मुख माँडिके । लीन्हों बसन छोडाय ॥ गर्भ गहेली गर्भते । उलटि चली मुसकाय ॥ शिवसन ब्रह्मा दौरिके । दूनों पकरे

धाय ॥ फगुवा लीन्ह छुडायके । बहुरि दियो छिटकाय ॥ अनहद धुनी बाजा बजे । श्रवण सुनत भौ चाव ॥ खेलनहारा खेलिहै । जैसी वाकी दाव ॥ ज्ञान ढाल आगे दियो।टारे टरे न पावँ॥ खेलन हारा खेलि है । बहुरि न वाकी दाव ॥ सुर नर मुनिऔ देवता । गोरखदत्त औ ब्यास सनक सनंदन हारिया । औरकी केतिक बात ॥ छिलकत थोथे प्रेमसों । मारे पिचकारी गात ॥ कै लीन्हों बसि आपने । फिरि फिरि चितवत जात ॥ ज्ञान डांग ले रोपिया । त्रिगुण दियो है साथ ॥ शिवसन ब्रह्मा लेन कहो है। और की केतिक बात ॥ एक ओर सुर नर मुनि ठाढे । एक अकेली आप॥दृष्टि परे उन काहु न छाडे। कै लीन्हों एकै थाप ॥ जेते थे तेते लिये । घूँघट माहिं समाय ॥ कज्जल वाकी रेखहै।अदग

गया नहिं कोय ॥ इंद्र कृष्ण द्वारे खडे। लोचन ललित लजाय ॥ कहहिं कबीर ते ऊबरे। जाहि न मोह समाय ॥ १ ॥

चाचर २.

जारो जगका नेहरा। मन बौरा हो ॥
जामें सोग संताप समुझी मन बौरा हो॥
तन धनसे क्या गर्भसि मन बौरा हो ॥
भस्म कीन्ह जाके साज समुझि मन बौराहो॥
बिना नेवका देवघरा मन बौरा हो ॥
विनु कह गिलकी ईंट समुझि मन बौरा हो॥
कालबूतकी हस्तिनी मन बौरा हो ॥
चित्र रचो जगदीश समुझि मन बौरा हो॥
काम अंध गज वसि परे मन बौरा हो ॥
अंकुश सहियो शीस समुझि मन बौरा हो
मर्कट मूठी स्वादकी मन बौरा हो ॥
लीन्हो भुजा पसारि समुझि मन बौरा हो ॥

छूटनकी संशय परी मन बौरा हो ॥
घर घर नाचेउ द्वार समुझि मन बौरा हो ॥
ऊंच नीच समुझेउ नहीं मन बौरा हो ॥
घर घर खायेउ डांग समुझि मन बौरा हो ॥
ज्यों सुवना ललनी गह्यो मन बौरा हो ॥
ऐसो भरम विचार समुझि मन बौरा हो ॥
पढे गुने क्या कीजिये मन बौरा हो ॥
अंत बिलैया खाय समुझि मन बौरा हो ॥
सूने घरका पाहुना मन बौरा हो ॥
ज्यों आवे त्यों जाय समुझि मन बौरा हो ॥
नहानेको तीरथ घना मन बौरा हो ॥
पूजबेको बहु देव समुझि मन बौरा हो ॥
बिनु पानी नर बूडाहिं मन बौरा हो ॥
तुम टेकेउ राम जहाज समुझि मन बौरा हो
कहहिं कबीर जग भर्मिया मन बौरा हो ॥
तुम छाडहु हरिकी सेव समुझि मन बौराहो २

बेलि।

बेलि १.

हंसा सरवर शरीरमें रमैया राम ॥
जागत चोर घर मूसहिं हो रमैया राम॥
जो जागल सो भागल हो रमैया राम ॥
सोवत गैल वियोग हो रमैया राम ॥
आजु बसेरा नियरे हो रमैया राम ॥
काल बसेरा बडि दूर हो रमैया राम ॥
जइ हो बिराने देश हो रमैया राम ॥
नैन भरोगे दूर हो रमैया राम ॥
त्रास मथन दधि मथन कियो हो रमैया राम॥
भवन मथेउ भरपूरि हो रमैया राम ॥
फिरिके हंसा पाहुन भयो हो रमैया राम॥
वेधिन पद निर्वान हो रमैया राम ॥
तुम हंसा हो मन मानिक हो रमैया राम ॥
हटलो न मानेहु मोर हो रमैया राम ॥

जसरे कियहु तस पायेउ हो रमैया राम ॥
हमरे दोष का देहु हो रमैया राम ॥
अगम काटि गम कियेहु हो रमैया राम ॥
सहज कियेहु बिश्वास हो रमैया राम ॥
राम नाम धन बनिज कियो हो रमैया राम ॥
लादेउ वस्तु अमोल हो रमैया राम ॥
पांच लदनुवां लादि चले हो रमैया राम॥
नौ बहियां दश गोनि हो रमैया राम ॥
पांच लदनुवाँ खागि परे हो रमैया राम॥
खाखर डारिनि फोरि हो रमैया राम ॥
शिर धुनी हंसा उडिचले हो रमैया राम॥
सरवर मीत जोहारि हो रमैया राम ॥
आगि जो लागि सरवरमें हो रमैया राम॥
सरवर जारि भौ भूरि हो रमैया राम ॥
कहहिं कबीर सुनो संतो हो रमैया राम॥
परखि लेहु खरा खोट हो रमैया राम ॥१॥

बेलि २.

भल सुमृति जहँडायेउ हो रमैया राम ॥
धोखे कियेउ बिश्वास हो रमैया राम ॥
सोतो हैं बन्सी कसि हो रमैया राम ॥
सोरे कियेहु बिश्वास हो रमैया राम ॥
इतो है वेद शास्त्र हो रमैया राम ॥
गुरु दिहल मोहि थापि हो रमैया राम ॥
गोबर कोट उठायउ हो रमैया राम ॥
परिहरि जैवेहु खेत हो रमैया राम ॥
मन बुद्धि जहँवां ना पहुँचे हो रमैया राम॥
तहाँ खोज कैसे होय हो रमैया राम ॥
यह सुनिकै मन धीरज धरहु हो रमैयाराम
मन बढि रहल लजाय हो रमैया राम॥
फिर पाछे जनि हेरहु हो रमैया राम ॥
कालबूत सब आहि हो रमैया राम ॥
कहहिं कबीर सुनो संतो हो रमैया राम॥
मन बुद्धि ढिग फैलायउ हो रमैया राम॥२॥

बिरहुली ।

बिरहुली ।

आदि अंत नहिं होते बिरहुली ॥
नहिं जर पल्लव डार बिरहुली ॥
निशि बासर नहिं होते बिरहुली ॥
पौन पानी नहिं मूल बिरहुली ॥
ब्रह्मादिक सनकादिक बिरहुली ॥
कथिगये योग अपार बिरहुली ॥
मास असारे शीतल बिरहुली ॥
बोइनि सातों बीज बिरहुली ॥
नित गोडे नित सींचे बिरहुली ॥
नित नौ पल्लव डार बिरहुली ॥
छिछिलि बिरहुली छिछिलि बिरहुली ॥
छिछिली रहल तिहुँ लोक बिरहुली ॥
फूल एक भल फूलल बिरहुली ॥
फूलि रहल संसार बिरहुली ॥

सो फुल लोरें संत जना विरहुली ॥
बंदिके राउर आय बिरहुली ॥
सो फल बंदे भक्त जना बिरहुली ॥
डंसि गौ बैतल सांप बिरहुली ॥
विषहर मंत्र न माने बिरहुली ॥
गारुड बोले अपार बिरहुली ॥
विषकी क्यारी तुम बोयहु बिरहुली॥
अब लोरतका पछिता वहु बिरहुली ॥
जन्म जन्म यम अंतरे बिरहुली ॥
फल एक कनयर डार बिरहुली ॥
कहैं कबीर सच पाव बिरहुली ॥
जो फल चाखहु मोर बिरहुली ॥

हिंडोला।

हिंडोला १.

भरम हिंडोला झूले सब जग आय ॥ पाप

पुण्यके खंभा दोऊ । मेरु माया माहिं ॥ लोभ भँवरा विषय मरुवा । काम कीला ठानि ॥ शुभ अशुभ बनाये डांडी । गहो दूनों पानि॥ कर्म पट-रिया बैठिके । को को न झूले आनि ॥ झूलत गण गंधर्व मुनिवर । झूलत सुरपति इंद्र ॥ झूलत नारद शारदा । झूलत व्यास फणिंद्र ॥ झूलत बिरंचि महेश शुकमुनि । झूलत सूरज चंद्र ॥ आप निर्गुण सगुण होय । झूलिया गोविन्द ॥ छौ चारि चौदह सात एकईस । तीनिउ लोक बनाय ॥ खानी बानी खोजि देखहु।अस्थिर कोई न रहाय॥ खंड ब्रह्मांड खोजि देखहु । छूटन कितहूँ नाहिं ॥ साधु संतति खोजि देखहु । जीव निस्तारि कित जाहिं ॥ शशि सूर रैनि शारदी । तहां तत्त्व प्रलय नाहिं ॥ काल अकाल परलय नहीं । तहां संत बिरले जाहिं ॥ तहांके बिछुरे बहु कल्प बीते । भूमि परे भुलाय ॥ साधु संगति खोजि देखहु।

बहुरि न उलटि समाय ॥ ये झूलवेकी भय नहीं जो होय संत सुजान ॥ कहहिं कबीर सत सुकृत मिले तो । बहुरि न झूले आन ॥ १ ॥

हिंडोला २.

बहुविधि चित्र बनायके । हरि रचिन क्रीडा रास ॥ जाहि न इच्छा झूलवेकी । ऐसी बुद्धि केहि पास ॥ झूलत झूलत बहु कल्प बीते । मन नहिं छाडे आस ॥ रच्यो रहस हिंडोरवा । निशि चारी युग चौ मास ॥ कबहुंक ऊंचे कबहुंक नीचे । स्वर्ग भूतले जाय ॥ अति भरमित भरम हिंडोरवा । नेकु नहीं ठहराय ॥ डरपत हौं यह झूलवेको ॥ राखु जादव राय । कहैं कबीर गोपाल विनती । शरण हरि तुम आय ॥ २ ॥

हिंडोला ३.

लोभ मोहके खंभा दोऊ । मनमें रच्यो है

हिंडोल ॥ झूलहिं जीव जहान जहाँ लगि । कितहुँ न देखों थित ठौर । चतुर झूलहि चतुराइया । झूलहिं राजा शेष ॥ चांद सूर्य दोउ झूलहीं । उनहुं न अज्ञा भेष ॥ लख चौरासी जीव झूलहिं । रवि सुत धरिया ध्यान ॥ कोटि कल्प युग बीतिया । अजहुं न माने हारि ॥ धरति अकाश दोउ झूलही । झूलहिं पौना नीर ॥ देह धरे हरि झूलही । ठाढे देखहिं हंस कबीर ॥ ३ ॥

साखी ।

जँहिया जन्म मुक्ता हता । तहिया हता न कोय ॥
छठी तुम्हारी हौं जगा । तू कहां चला बिगोय ॥ १ ॥
शब्द हमारा तू शब्दका । सुनि मति जाहु सरक ॥
जो चाहो निज तत्त्वको । तो शब्दहि लेहु परख २ ॥
शब्द हमारा आदिका । शब्दै पैठा जीव ॥ फूल

रहनिकी टोंकरी । घोरे खाया घीव ॥ ३ ॥
शब्दै बिना सुरति आँधरी । कहो कहां को जाय ॥
द्वार न पावे शब्दका । फिर फिर भटका खाय ॥ ४ ॥
शब्द शब्द बहु अंतरै । सार शब्द मथि लीजै ॥
कहहिं कबीर जहां सार शब्द नहिं । धृग जीवन
सो जीजै ॥ ५ ॥ शब्दै मारा गिर परा । शब्दहि
छोडा राज ॥ जिन्ह जिन्ह शब्द विवेकिया ।
तिनका सरिगौ काज ॥ ६ ॥ शब्दै हमारा आदि
का । पल पल करहु यादि ॥ अंत फलैगी मांहली ।
ऊपरकी सब बादि ॥ ७ ॥ जिन्हैं जिन्ह सम्मल
ना कियो । अस पुर पाटन पाय ॥ झालि परै
दिन अथये । सम्मल कियो न जाय ॥ ८ ॥
यहांई सम्म करिले । आगे विषई बाट ॥ स्वर्ग
बिसाहन सब चले । जहां बनिया ना हाट ॥ ९ ॥
जो जाँनहु जीव आपना ॥ करहु जीवको सार ॥
जियरा ऐसा पाहुना । मिलै न दूजी बार ॥ १० ॥

जो जानँहु जग जीवना। जो जानहु सो जीव॥ पानि पचावहु आपना। तो पानी माँगि न पीव॥ ११॥ पाँनी पियावत क्या फिरो। घर घर सायर बारि॥ तृषावंत जो होयगा। पीवेगा झखमारि॥ १२॥ हंसा मोती बिकानिया। कंचन थार भराय॥ जो जाको मर्म न जाने। सो ताको काह कराय॥ १३॥ हंसा तू सुवर्ण वर्ण। का वर्णों मैं तोहिं॥ तरिवर पाय पहेलि हो। तबै सराहों तोहिं॥ १४॥ हंसा तूतो सबल था। हलुकी अपनी चाल। रंग कुरंगे रंगिया। तैं किया और लगवार॥ १५॥ हंसा सरवर तजि चले। देही परि गौ सून॥ कहहिं कबीर पुकारिके। तेहि दर तेही थून॥ १६॥ हंसे बकु देखा एक रंग। चरें हरियरे ताल॥ हंस क्षीरते जानिये। बकुहि धरेंगे काल॥ १७॥ कौहे हरनी दूबरी।

यहि हरियरे ताल ॥ लक्ष अहेरी एक मृग । केतिक टारों भाल ॥ १८ ॥ तीनें लोक भौ पींजरा । पाप पुण्य भौ जाल ॥ सकल जीव सावज भये । एक अहेरी काल ॥ १९ ॥ लोभे जन्म गमाइया । पापे खाया पुण्य ॥ साधी सो आधी कहें । तापर मेरा खुन्य ॥ २० ॥ आँधी साखी शिर खडी । जो निरुवारी जाय ॥ क्या पंडित की पोथिया । जो राति दिवस मिलि गाय ॥ २१ ॥ पांचैं तत्त्वका पूतरा । युक्ति रची में कीव ॥ मैं तोहिं पूँछों पंडिता । शब्द वडा की जीव ॥ २२ ॥ पांचैं तत्त्वका पूतरा । मानुष धरिया नांव ॥ एक कलाके बीछुरे । बिकल होत सब ठांव ॥ २३ ॥ रंगहिते रंग ऊपजै । सब रंग देखा एक ॥ कौन रंग है जीवका । ताका करहु विवेक ॥ २४ ॥ जाग्रतरूपी जीव है ॥ शब्द सोहागा सेत ॥ जर्द बुंद जल कुकुही । कहहिं कबीर कोइ देख ॥ २५ ॥

पांचैं तत्त्व ले या तन कीन्हा। सो तन ले काहि ले दीन्हा॥ कर्महिके वश जीव कहत हैं। कर्महि को जीव दीन्हा ॥ २६ ॥ पांचै तत्त्वके भीतरे। गुप्त वस्तु अस्थान ॥ बिरला मर्म कोई पाइ है। गुरुके शब्द प्रमान ॥ २७॥ असुन्न तखत अडि आसना। पिंड झरोखे नूर ॥ जाके दिलमें हौं बसो। सैना लिये हजूर ॥ २८ ॥ हृदयां भीतर आरसी। मुख देखा नहिं जाय ॥ मुख तो तबहीं देखि हो। जब दिलकी दुबिधा जाय ॥ २९ ॥ गांवें ऊंचे पहाडपर। औ मोटाकी बांह ॥ कबीर अस ठाकुर सेइये। उबारिये जाकी छांह ॥३०॥ जेहि मारग गये पंडिता। तेई गई बहीर। ऊंची घाटी रामकी। तेहि चढि रहैं कबीर॥ ३१ ॥ ये कबीर तैं उतरि रहु। तेरो सम्मल परोहन साथ। सम्मल घटे न पगु थके। जीव बिराने हाथ॥३२॥ कबीरका घर शिखरपर। जहां सिलहली गैल॥

पांव न टिके पिपीलिका । तहां खलकन लादे बैल ॥ २३ ॥ बिन देखे वह देशके । बात कहे सो कूर ॥ आपुहि खारी खातहै । बेंचत फिरे कपूर ॥ २४ ॥ शब्द शब्द सब कोइ कहैं । वो तो शब्द विदेह ॥ जिभ्यापर आवे नहीं । निरखि परखि करि लेह ॥ २५ ॥ पर्वत ऊपर हर वहे । घोरा चढि वसे गांव ॥ विना फूल भँवरा रस चाहे । कहु बिरवा को नांव ॥ २६ ॥ चंदन वांस निवारहु । तुझ कारण वन काटिया ॥ जियत जीव जनि मारहु । मुये सबै निपातिया ॥ २७ ॥ चंदन सर्प लपेटिया । चंदन काह कराय । रोम रोम विष भीनिया । अमृत कहां समाय ॥ २८ ॥ ज्यों मोदाद समसान शिल । सबै रूप समसान ॥ कहहिं कबीर वह सावजकी गति । तबकी देखि भुलान ॥ २९ ॥ मंत्री टेक छोडे नहीं । जीभ चोंच

जरिजाय ॥ ऐसो तत्त अंगार है। ताहि चकोर चबाय ॥ ४० ॥ चकोर भरोसे चंद्रके । निगले तत्त अंगार ॥ कहैं कबीर डाहे नहीं । ऐसी बस्तु लगार ॥ ४१ ॥ मिलिमिलि झंगरा झूलते । बाकी छूटि न काहु ॥ गोरख अटके कालपुर । कौन कहावे साहु ॥४२॥ गोरखं रसिया योगके । मुये न जारी देह ॥ मास गलि माटी मिली । कोरो मांजी देह ॥४३॥ बँनते भागि बेहडे परा । करहा अपनी वान ॥ बेदन करहा कासो कहै । को करहाको जान ॥४४॥ बहुँत दिवसते हींडिया । शून्य समाधि लगाय ॥ करहा पडा गाडमें । दूरि परा पछिताय ॥ ४५ ॥ कबीर भरम न भाजिया । बहुविधि धरिया भेष ॥ सांईके परचावते । अंतर रहि गइ रेष ॥ ४६ ॥ बिनुं डांडे जग डांडिया । सोरट परिया डांड ॥ बाटनिहारे लोभिया । गुरते मीठी खांड ॥४७॥

मलयागिरकी बासमें । वृक्ष रहा सब गोय ।
कहबेको चंदन भया।मलयागिर ना होय॥४८॥
मलयागिरकी बासमें । बेधा ढांक पलास॥बेना
कबहुँ न बेधिया । जुग जुग रहिया पास॥४९॥
चलते चलते पगु थका । नग्र रहा नौ कोस ॥
बीचहि में डेरा परा । कहहु कौन को दोस॥५०॥
झाँलि परे दिन आथये । अन्तर परगइ सांझ ॥
बहुत रसिकके लागते । बिस्वा रहि गइ बांझ॥५१
मन कहे कब जाइये । चित्त कहे कब जाव ॥
छौ मासके हींडते । आध कोस पर गांव ॥५२॥
गृह तजिके भये उदासी । वनखंड तपको जाय॥
चोली थाकी मारिया।बेरई चुनि चुनि खाय५३॥
राम नाम जिन चीन्हिया । झीना पंजर तासु ॥
नैन न आवै नींदरी । अंग न जामै मासु॥५४॥
जो जन भींजे रामरस । बिगसित कबहुँ न रूख॥
अनुभव भाव न दरसै । ते नर सुख न दुख ॥५५॥

कँाटे आम न मौरसी । फाटे जुटे न कान ॥
गोरख पारसपरसे बिना।कौनेको नुकसान॥९६॥
पारॅस रूपी जीव है । लोह रूप संसार ॥ पार-
सते पारस भया । परख भया टकसार ॥९७॥
प्रेम पाटका चोलना। पहिर कबीरू नाच॥पानिप
दीन्हों तासुको । जो तन मन बोले सांच॥९८॥
दर्पण केरी गुफा में । स्वनहा पैठा धाय ॥ देखि
प्रतीमा आपनी । भूँकि भूँकि मरिजाय ॥ ९९ ॥
ज्यों दर्पण प्रतिबिंब देखिये। आपु दुहुँनमा सोय॥
यह तत्तते वह तत्त है । याहीसे वह होय॥६०॥
जोबॅन सायर मुझते ।रसिया लाल कराय ॥
अब कबीर पांजी परे । पंथी आवहिं जाय॥६१॥
दोहरा तो नौ तन भया । पदहिं न चीन्हें कोय ॥
जिन्हें यह शब्द विवेकिया।छत्र धनी है सोय॥६२
कबीर जात पुकारिया । चढ चंदन की डार ॥

बाट लगाये ना लगे। पुनि का लेत हमार॥ ६३॥
सबते सांचा है भला। जो सांचा दिल होय॥
सांच बिना सुख नाहिना। कोटि करे जो कोय ६४
सांचों सौदा कीजिये। अपने मनमें जानि॥
सांचे हीरा पाइये। झूठे मूलहु हानि॥ ६५॥
सुकृत वचन मानै नहीं। आपु न करे विचार॥
कहहिं कबीर पुकारिके। सपनेहु गया संसार॥ ६६॥
आगि जो लागि समुद्रमें धुंवा न परगट होय॥
की जाने जो जरि मुवा। की जाकी लाई होय॥ ६७॥
लाई लावन हार की। जाकी लाई पर जरे॥
बलिहारी लावन हारकी। छपर बांचे घर जरे ६८
बुंद जो परा समुद्रमें। सो जानत सब कोय॥
समुद्र समाना बुंद में। सो जाने बिरला कोय ६९॥
जहर जिमी दै रोपिया। अमी सींचे सौ बार॥
कबीर खलक ना तजे। जामें जौन बिचार॥ ७०॥
बाँकी डाली लाकडी। वो भी करे पुकार॥

अब जो जाय लोहार घर। डाहे दूजी बार॥७१॥
बिरह की ओदी लाकडी। सपचे औ धुंधुवाय॥
दुखते तबहीं बांचि हो। जब सकलो जरिजाय ७२
बिरह बाण जेहि लागिया। औषध लगे न ताहिं॥
सुसुकि सुसुकि मरि मरि जिवे। उठे कराहि कराहि
७३ सांचाँ शब्द कबीरका। हृदया देखु विचार॥
चित्तहु दै समुझे नहीं। मोहिं कहत भैल जुग
चार॥ ७४ ॥ जो तू सांचाँ बाणिया। सांची
हाट लगाव॥ अंदर झारू देइके। कूरा दूरि
बहाव॥ ७५ ॥ कोठी तो है काँठकी। ढिग
ढिग दीन्ही आग॥ पंडित जरि झोली भये।
साकट उबरे भाग॥ ७६ ॥ साँवन केरा सेहरा
बुंद परा असमान॥ सारी दुनिया बैष्णव
भई। गुरु नहिं लागा कान॥७७॥ ढिगँ बूडा
उतरा नहीं। याहिं अँदेसा मोहि॥ सलिल
मोहकी धारमें। क्या नींद रि आई तोहि॥७८॥

सखी कहे गहे नहीं । चाल चली नाहिं जाय ॥
सलिल धार नदिया बहे । पांव कहां ठहराय ॥७९॥
कँहंता तो बहुते मिला । गहंता मिला न कोय ॥
सो कहंता बहि जान दे । जो न गहंता होय ॥८०॥
एक एक निरुवारिये । जो निरुवारी जाय ॥ दोय
सूखका बोलना । वना तमाचा खाय ॥ ८१ ॥
जिभ्यां को तो बंदँ दे । बहु बोलन निरुवार ॥
स्वारथीसे संग करु । गुरुमुख शब्द विचार ॥८२॥
जाके जिभ्या बंध नहीं । हृदया नाहीं सांच ॥
ताके संग न लागिये । घाले वटिया मांझ ॥८३॥
प्राणी तो जिभ्या डिगा । छिन छिन बोले कुबोल ॥
मनके घाले भरमत फिरे । कालहि देत हिंडोल ८४
हिलगी भाल शरीरमें । तीर रहा है टूट ॥ चुम्बक
विना न निकसे । कोटि पाहन गये छूट ॥ ८५ ॥
आगे सीढ़ी सांकरी । पाछे चकनाचूर ॥
परदा तरकी सुंदरी । रही धकासे दूर ॥ ८६ ॥

संसारी समय बिचारी । कोई ग्रेही कोई जोग ॥
औसर मारे जात है । तै चेत बिराने लोग॥८७॥
संशय सब जग खंडिया । संशय खंडे न कोय ॥
संशय खंडे सो जना । जो शब्द विवेकी होय ॥
बोलन है बहु भाँतिका । तेरे नैनन किछउन सूझ॥
कहहिं कबीर बिचारिके । तै घट घट बानी बूझ॥
मूल गहेते काम है । तैं मत भरम भुलाव ॥ मन
सायर मनसा लहरी । बहे कतहुं मत जाव॥९०॥
भँवर बिलम्बे बागमें । बह फूलनकी बास ॥
ऐसे जीव बिलम्बे बिषयमें। अंतहुं चले निरास९१
भँवर जाल बकुजाल है । बूडे बहुत अचेत ॥
कहहिं कबीर ते बांचिहैं । जाके हृदय विवेक९२॥
तीनि लोक टीडी भया । उडा जो मनके साथ॥
हरिजन हरि जानें बिना । परे कालके हाथ॥९३॥
नाँना रंग तरंग हैं । मन मकरंद असूझ॥ कहहिं
कबीर पुकारिके । तै अकिल कला ले बूझ ॥९४॥

बाजीगर का बांदरा । ऐसा जीव मनके साथ ॥ नाना नाच नचायके । ले राखे अपने हाथ ॥९६॥ ई मन चंचल ई मन चोर । ई मन शुद्ध ठगहार॥ मनमनकरतेसुरनरमुनि।जहंडेमनक्षलकेदुवार ॥ विरह भुवंगम तन डंसो । मंत्र न माने कोय ॥ राम बियोगी ना जिये। जिये तो बाउर होय ॥ ॥ ९७ ॥ राम वियोगी विकलतन । इन्ह दुखवो मति होय॥ छुवतहीं मारि जायँगे । तालावेली होय ॥ ९८ ॥ बिरह भुवंगम पैठिके। कीन्ह करेजे घाव ॥ साधु अंग न मोरि हैं । ज्यों भावे त्यों खाव ॥ ९९ ॥ करँक करेजे गडि रहा । बचन वृक्षकी फांस ॥ निकसाये निकसे नहीं। रही सो काहू गांस ॥ १०० ॥ कॉला सर्प शरीरमें । खाइनि सब जग झारि ॥ बिरले ते जन बांचि हैं। जो रामहि भजे बिचारि ॥ १०१ ॥ काल खड़ा शिर ऊपरे । तै जागु बिराने मीत ॥ जाका

घर है गैल में । सो कस सोवे निर्चिंत ॥१०२॥
कलकाठि कालू घुना । जतन जतन घुन खाय ॥
काया मध्ये काल बसत है । मर्म न काहू
पाय ॥ १०३ ॥ मन माया की कोठरी । तन
संशय का कोट ॥ विषहर मंत्र माने नहीं । काल
सर्पकी चोट ॥ १०४ ॥ मन माया तो एक है ।
माया मनहि समाय ॥ तीन लोक संशय परी।मैं
काहि कहूं समुझाय ॥ १०५ ॥ बेह्रा दीन्हों
खेतको । बेह्रा खेतहि खाय ॥ तीन लोक संशय
परी । मैं काहि कहूं समुझाय ॥१०६॥मन सायर
मनसा लहरि । बूडे बहुत अचेत ॥ कहहिं कबीर
ते बांचि हैं । जाके हृदय विवेक ॥ १०७ ॥
सायर बुद्धि बनायके । बांये बिचक्षण चोर॥ सारी
दुनिया जहडे गई । कोई न लागा ठौर॥१०८॥
मानुष ह्वैयके ना मुवा । मुवा सो डांगर ढोर ॥
एकौ जीव ठौर नहिं लागा । भया सो हाथी

घोर ॥ १०९ ॥ मानुष तैं बड पापिया । अक्षर गुरुहि न मान ॥ बार बार बन कुकुहीं गर्भ भरे औ ध्यान ॥ ११० ॥ मानुष विचारा क्या करे । जाके कहे न खुले कपाट ॥ स्वनहा चौक बैठायकै । फिर फिर ऐपन चाट ॥ १११ ॥ मानुष बिचारा क्या करे । जाके शून्य शरीर ॥ जो जीव झाँकि न ऊपजे । तो कहा पुकार कबीर ॥११२॥ मानुष जन्म नर पायके । चूके अबकी घात ॥ जाय परे भवचक्रमें । सहे घनेरी लात ॥ ॥ ११३ ॥ रतनका जतन करु । माटीका सिंगार ॥ आया कबीरा फिर गया । झूटा है हंकार ॥ ११४ ॥ मानुष जन्म दुर्लभ है । बहुरि न दूजी बार ॥ पक्का फल जो गिरि परा । बहुरि न लागे डार ॥ ११५ ॥ बाढ मनोर जात हौ । मोहि सोवत लिये जगाय ॥ कहहिं कबीर पुकारि के । ई पिंडे होहु कि जाय ॥ ११६ ॥ साखी

पुलंदर ढहि परे । बिबि अक्षर युग चार । कबीर रसना रंभन होतहै। कोइ कै न सके निरुवार ११७ बेडा बांधिन सर्पकी । भवसागरके माहिं ॥ जो छोडे तो बूढे । गहे तो डंसे बांहिं ॥ ११८ ॥ हाथ कटोरा खोवा भरा। मग जोवत दिन जाये ॥ कबीर उतरा चित्तते । छांछ दियो नाहिं जाय ॥ ११९ ॥ एक कहौ तो है नहीं । दोय कहौ तो गारि ॥ है जैसा रहे तैसा । कहहिं कबीर बिचारि ॥ १२० ॥ अमृत केरी पूरिया । बहुविधि दीन्हा छोरि ॥ आप सरीखा जो मिले । ताहि पोयाऊंघोरि ॥१२१॥ अमृत केरी मोटरी। शिरसे धरी उतार ॥ जाहि कहौं मैं एक है । सो मोहि कहे दुइ चार ॥ १२२ ॥ जाके मुनिवर तप करें । वेद थके गुण गाय ॥ सोई देउ सिखापना । कोई नहिं पतिआय ॥ १२३ ॥ एकेते अनंत भौ । अनंत एक ह्वै आया ॥ परचै

भई एकते तव । अनंतो एकैमांहि समाया ॥ १२४ ॥ एकै शब्द गुरु देवका । ताका अनंत विचार ॥ थाके मुनि जन पंडिता । वेद न पावें पार ॥ १२५ ॥ राउॅरके पिछवारे । गावें चारिउ सैन ॥ जीव परा बहु लूटमें । ना कछु लेन न देन ॥ १२६ ॥ चोगोडाके देखते । व्याधा भागा जाय ॥ अचरज एक देखो हो संतो ॥ मूवा कालहि खाय ॥ १२७ ॥ तीनँ लोक चोरी भई । सबका सरबस लीन्ह ॥ विना मूँडका चोरवा । परा न काहू चीन्ह ॥ १२८ ॥ चँकी चलती देखि के । मेरे नैनन आया रोय ॥ दुइ पाट भीतर आयके । साबुत गया न कोय ॥ १२९ ॥ चार चोर चोरी चले । पगु पनहिं उतार ॥ चारिउ दर थूनी हनी । पंडित करहु विचार ॥ १३० ॥ बलिहारी वह दूधकी । जामें निकरै घीव ॥ आधी साखी कबीरकी । चारि वेदका जीव ॥ १३१ ॥

बँलिहारी तेहि पुरुषकी।जो परचित परखनिहार॥
साई दीन्हो छांडको । खारी बूझे गँवार ॥ १३२ ॥
विषके बिरवे घर किया । रहा सर्प लपटाय ॥
तातेजियरहिडर भया।जागत रैनि बिहाय१३३॥
जो घँर हैगा सर्पका । सो घर साधन होय ॥ सकल
संपदा ले गये । बिषभारि लागा सोय ॥ १३४ ॥
घुँघुची भरके बोइये । उपजा पसेरी आठ ॥ डेरा
परा कालका । सांझ सकारे जात ॥ १३५ ॥ मन
भरके बोईये । घुँघुची भरि नहिं होय ॥ कहा
हमार माने नहीं । अंतहु चले बिगोय ॥ १३६ ॥
आँपा तजे हरि भजे । नख शिख तजे बिकार ॥
सब जीवनसे निर्भै रहे । साधमता है सार॥१३७॥
पछापछीके कारने । सब जग रहा भुलान॥निर्पछ
होयके हरि भजे । सोई संत सुजान ॥ १३८ ॥
बँडे गये बडापने । रोम रोम हंकार ॥ सतगुरुके
परचै बिना । चारों बरन चमार ॥१३९॥ माया

तजे क्या भया । जो मान तजा नहिं जाय ॥ जेहि माने मुनिवर ठगे । सो मान सबनको खाय ॥ १४० ॥ मायाके झक जग जरे । कनक कामिनी लाग ॥ कहहिं कबीर कस बांचिहो । रुई लपेटी आग ॥ १४१ ॥ माया जग सांपिनि भई । विष ले पैंठि पताल ॥ सब जग फंदे फंदिया । चले कबीरू काछ ॥ १४२ ॥ साँप बिच्छूका मंत्र है । माहुरहु झारा जाय ॥ विकट नारिके पाले परे । काढ़ि कलेजा खाय ॥ १४३ ॥ तामसके तीन गुण । भँवर लेइ तहां बास ॥ एकै डारी तीनि फल । भाटा ऊख कपास ॥ १४४ ॥ मॅन मतंग गइयर हने । मनसा भई सचान ॥ जंत्र मँत्र माने नहीं । लागी उड़ि उड़ि खान ॥ ॥ १४५ ॥ मॅन गयंद माने नहीं । चलै सुरतिके साथ ॥ महावत बिचारा क्या करे । जो अंकुश

नाहीं हाथ ॥ १४६ ॥ ई माया है चूहडी । और चूहडोंकी जोय ॥ बाप पूत अरुझायके । संग न काहुके होय ॥ १४७ ॥ कनक कामिनी देखिके । तू मत भूल सुरंग ॥ मिलन बिछुरन दुहेलरा । कस केंचुलि तजत भुवंग ॥ १४८ ॥ मायाके बसि परे । ब्रह्मा विष्णु महेश । नारद शारद सनक सनंदन । गौरी पूत गणेश ॥१४९॥ पीपरि एक जो महा गंभानि।ताकर मर्म कोइ नहिं जानि ॥ डार लंबाय फल कोइ न पाय । खसम अछत बहु पीपरे जाय ॥ १५० ॥ साहुसे भौ चोरवा चोरहुसे भौ हीत ॥ तब जानोगे जीयरा । जबर परेगी तूझ ॥१५१॥ ताकी पूरी क्यों परे । जाके गुरु न लखाई बाट ॥ ताके बेडा बूडि है । फिरि फिरि औघट घाट ॥ १५२ ॥ जाना नहिं

बूझा नहीं । समुझि किया नहिं गौन ॥ अंधेको अंधा मिला । राह बतावे कौन ॥ १८३ ॥ जाको गुरु है आंधरा । चेला काह कराय ॥ अंधे अंधा पेलिया । दोऊ कूप पराय ॥ १८४ ॥ लोगोंकेरि अथाइया । मति कोइ पैठो धाय ॥ एकै खेत चरत हैं । बाघ गधेरा गाय ॥ १८५ ॥ चारि मास घन बर्सिया । अति अपूर जल नीर ॥ पहिरे जड तन बखतरी । चुभै न एकौ तीर ॥ १८६ ॥ गुरुकी भेली जिव डरे । काया सींचनहार ॥ कुमति कमाई मन बसे । लाग जुवाकी लार ॥ १८७ ॥ तन संशय मन सोनहा । काल अहेरी नीत ॥ एके डांग बसेरवा । कुशल पूछो का मीत ॥ १८८ ॥ साहु चोर चीन्हे नहीं । अंधा मतिका हीन ॥ पारख बिना विनाश है । कर विचार होहु भिन्न ॥ १८९ ॥ गुरु सिकलीगर कीजिये । मनहि

मस्कला देय ॥ शब्द छोलना छोलिके । चित दर्पण करि लेय ॥ १६० ॥ मूरख के शिखलावते । ज्ञान गांठिका जाय ॥ कोइला होय न ऊजरा । जो सौमन साबुन लाय ॥ १६१ ॥ मूढ कर्मिया मानवा । नख शिख पाखर आहि ॥ बाहनहारा क्या करे । जो बान न लागे ताहि ॥ १६२ ॥ सेमरकेरा सुवना । छिवले बैठा जाय ॥ चोंच सवाँरे शिर धुने । ई उसहीको भाय ॥ १६३ ॥ सेमर सुवना बेगि तजु । तेरी घनी बिगुर्चीं पांख ॥ ऐसा सेमर जो सेवै । जाके हृदया नाहीं आंख ॥ १६४ ॥ सेमर सुवना सेइया । दुइ ढेंढीकी आस ढेंढी फूटि चनाक दै । सुवना चले निरास ॥ १६५ ॥ लोग भरोसे कौनके । बैठ रहै अरगाय ॥ ऐसे जियेरहि यम लूटे । जस मटिया लूटे कसाय ॥

॥१६६॥ समुझि बूझि जड हो रहे । बल तजि निर्बल होय॥कहैं कबीर ता संतका।पल न पकरै कोय॥१६७॥हीरा सोइ सराहिये ।सहे घननकी चोट॥कपटकुरंगीमानवा।परखतनिकराखोट६८ हरि हीरा जन जौहरी । सबन पसारी हाट ॥ जब आवे जन जौहरी। तब हीरोंकी साट१६९॥ हीरा तहां न खोलिये । जहां कुँजरोंकी हाट ॥ सहजै गाँठी बाँधिके । लगिये अपनी बाट१७०॥ हीरा परा वजारमें । रहा छार लपटाय ॥ केतेहिं मूरख पचि मुये । कोइ पारखि लिया उठाय॥१७१॥ हीरोंकी ओबरी नहीं।मलयागिर नहिं पाति ॥ सिंहोंके लहडा नहीं।साधु न चलैं जमाति ॥१७२॥ अपने अपने शिरोंका । सबन लीन्ह है मान॥हरिकी बात दुरंतरी।परी न काहू जानै ॥१७३॥ हाड जरै जस लाकडी। बार जरै

जस घास ॥कबिरा जरे राम रस । जस कोठी जरे कपास ॥ १७४ ॥ घाट भुलाना बाट बिनु । भेष भुलाना कान ॥ जाकी माडी जगतमें । सो न परा पहिचान॥ १७५॥मूरख सों क्या बोलिये। शठ सो काह बसाय ॥ पाहनमें क्या मारिये । जो चोखातीर नसाय॥ १७६॥जैसी गोली गुमजकी । नीच परी ढहराय ॥ तैसा हृदया मूरखका।शब्द नहीं ठहराय ॥ १७७ ॥ ऊपरकी दोउ गईं । हियेहुकी गई हिराय ॥कहहिं कबीर जाकी चारिउ गईं । ताको काह उपाय ॥ १७८ ॥ केते दिन ऐसे गया । अनरूचे का नेह ॥ ऊसर बोय न ऊपजे । जो अति घन बरसे मेह॥१७९॥ मैं रोवों यह जगतको । मोको रोवे न कोय ॥ मोको रोवे सो जना । जो शब्द विवेकी होय ॥ १८० ॥ साहेब साहेब सब कहे । मोहहिं अंदेशा और ॥

साहबसे परचै नहीं। बैठोगे केहि ठौर ॥१८१॥ जीवबिनाजीवबांचेनहीं। जीवका जीव अधार॥ जीवदयाकरिपालिये।पंडितकरो बिचार॥१८२॥ हमने तो सबकी कही। मोको कोइ न जान॥ तब भी अच्छा अबभी अच्छा। जुग जुग होउ न आन ॥ १८३ ॥ प्रगट कहो तो मारिया। परदा लखे न कोय ॥ सहना छिपा पयार तर। को कहि वैरी होय ॥१८४॥ देश विदेश हों फिरा। मनही भरा सुकाल ॥ जाको ढूँढत हौं फिरां। ताका परा दुकाल ॥ १८५ ॥ कलि खोटा जग आँधरा। शब्द न माने कोय ॥ जाहि कहा हित आपना। सो उठि वैरी होय ॥ १८६ ॥ मसि कागद छूवो नहीं।कमल गहों नहिं हाथ ॥ चारिउ जुगका महातम। कबीर मुखहि जनाई बात १८७ फहम आगे फहम पाछे। फहम दहिने डेरि॥

फहम पर जो फहम करे। सो फहम है मोरि॥१८८॥
हद्द चले सो मानवा। बेहद्द चले साध॥
हद बेहद दोऊ तजे। ताकर मता अगाध॥१८९॥
समुझेकी गति एक है। जिन्ह समुझा सब ठौर॥
कहहिं कबीर ये बीचके। बलकहि औरकी और॥
राँह बिचारी क्या करे। जो पंथिन चले विचार॥
अपना मारग छोडिके। फिरे उजार उजार.१९१॥
मूवा है मारि जाहुगे। मुयेकी बाजी ढोल॥
सपन सनेही जग भया। सहिदानी रहि गौ बोल॥
मूवा है मारि जाहुगे। बिन शिर थोरी भाल॥
परेहु करायल वृक्ष तर। आज मरहु कि काल॥
बोली हमारी पूर्वकी। हमें लखे नहिं कोय॥
हमको तो जोई लखै। जो धुर पूरबका होय॥
जाके जलते रौंदे परा। धरती होय वेहाल॥
सो सावत घामें जरे। पंडित करहु विचार१९८॥

पायन पुहुमी नापते । दरिया करते फाल ॥
हाथन पर्वत तौलते । तेहि धरि खायो काल १९६ ॥
नौ मन दूध बटोरिके । टिपके किया विनाश ॥
दूध फाटि कांजी भया । हूवा घृतका नाश १९७ ॥
केतनो मनाऊँ पांव परि । केतनो मनाऊँ रोय ॥
हिन्दू पूजे देवता । तुरुक न काहू होय ॥ १९८ ॥
मानुष तेरा गुण बडा । मासु न आवे काज ॥
हाड न होते आभरन । त्वचा न वाजन वाज १९९
जो मोहि जाने ताहि मैं जानों ॥
लोक वेद का कहा न मानो ॥ २०० ॥
सबकी उत्पति धरती । सब जीवन प्रतिपाल ॥
धरती न जाने आप गुण । ऐसा गुरू विचार २०१
धरती जानति आप गुण । कधी न होती डोल ॥
तिल तिल गरुवी होती । रहति टिकोंकी मोल २०२

जहिया क्रितम ना हता। धरती हती न नीर॥
उत्पति प्रलय ना हती। तबकी कहैं कबीर२०३॥
जहां बोल तहां अक्षर आया। जहां अक्षर तहां-
मनहि दिढाया॥बोल अबोल एक है जाई।जिन्ह
यह लखा सो बिरला होई॥ २०४ ॥ तौलों तारा
जगमगे। जौलों उगे न सूर॥ तौलों जीव कर्म
बस डोले। जौ लों ज्ञान न पूर॥ २०५ ॥
नांव न जाने गांव का। भूला मारग जाय॥
काल कडेगा कांटा।अगमन खसी कराय॥२०६
संगति कीजै साधु की। हरे और की व्याध॥
ओछी संगति कूर की। आठों पहर उपाधि२०७॥
संगतिसे सुख ऊपजे। कुसँगति से दुख होय॥
कहहिंकबीरतहांजाइये।जहांअपनीसंगतहोय ८॥
जैसी लागी बोर की। वैसे निबहे छोर॥ कवडी
कवडी जोरिके। पूँजी लक्ष करोर॥ २०९ ॥

आजु काल दिन कैकमें । अस्थिर नाहिं शरीर॥ कहहिं कबीर कस राखि हो । कांचे बासन नीर॥ ॥ २१०१ ॥ बहु बन्धनसे बांधिया । एक विचारा जीव॥ की बल छूटे आपने । की रे छुडावे पीव॥ ॥ २११ ॥ जीव मति मारो बापुरा । सबका एकै प्राण ॥ हत्या कबहुँ न छूटि है । जो कोटिन सुनो पुराण ॥ २१२ ॥ जीव घात ना कीजिये । बहुरि लेत वै कान ॥ तीरथ गये न बांचि हो । जो कोटि हीरा देहुदान ॥ २१३ ॥ तीरथ गये तीनि जना । चित चंचल मन चोर ॥ एकौ पाप न काटिया । लादिनि मन दश और॥२१४॥ तीरथ गये ते बहि मुये । जूडे पानी नहाय ॥ कहहिं कबीर सुनो हो संतो । राक्षस ह्वै पछि- ताय ॥ २१५ ॥ तीरथ भई विष बेलरी । रही जुगन जुग छाय ॥ कबीर न मूल निकंदिया । कौन

हलाहल खाय ॥ २१६ ॥ ये गुणवंती बेलरी।तुव गुण बर्णि न जाय ॥ जर काटे ते हरियरी । सींचे ते कुम्हिलाय ॥ २१७ ॥ बेलि कुढंगी फल बुरो । फुलवा कुबुधि बसाय ॥ बोर बिनष्टी तूमरी। तेरो सरो पात करुवाय ॥ २१८ ॥ पानी ते अति पातला । धूवाँते अति झीन ॥ पौनहुते उतावला । सो दोस्त कबीरन कीन्ह ॥ २१९॥ सतगुरु वचन सुनो हो संतो । मति लीजै शिर भार ॥ हो हजूर ठाढ कहत हौं । अब तैं समर सँभार ॥ २२०॥ वो करुवाई बेलरी। औ करुवा फल तोर॥सिद्ध नाम जब पाइये। बेलि बिछोहा होय ॥ २२१ ॥ सिद्ध भया तो भया । चहुँदिश फूटी बास ॥ अंतर वाके बीज है। फिर जामनकी आस ॥ २२२ ॥ परदे पानी ढारिया । संतो करौ विचार ॥ शरमा शरमी पचि मुवा । काल घसीट-

नहार ॥ २२३ ॥ आस्ति कहों तो कोइ न पतीजै। बिना आस्तिका सिद्धा ॥ कहहिं कबीर सुनो हो संतो। हीरी हीरा वेधा ॥ २२४ ॥ सोना सज्जन साधुजन। टूटि जुरैं सौ बार ॥ कुजन कुंभ कुम्हारका। एकै धका दरार ॥ २२५ ॥ काजर केरी कोठरी। बुडताहै संसार ॥ बलिहारी तेहि पुरुषकी। जो पैठिके निकरनहार ॥ २२६ ॥ काजरहीकी कोठरी। काजरहीका कोट ॥ तौंदी कारी ना भई। रहा सो ओटहि ओट ॥२२७॥ अर्ब खर्ब ले दर्ब है। उदय अस्तलों राज। भक्ति महातम ना तुले। ई सब कौने काज ॥ २२८ ॥ मच्छ बिकाने सब चले। धीमरके दरबार ॥ अँखिया तेरी रतनारी। तू क्यों पहिरा जार॥२२९॥ पानी भीतर घर किया। सेजा किया पनार ॥ पासा परा करीमका। तब मैं पहिरा जार॥२३०॥

मच्छ होय नाहिं बांचि हो। धीमर तेरो काल ॥ जेहि जेहि डाबर तुम फिरो। तहां तहां मेले जाल ॥ २३१ ॥ बिन रसरी गर सकलो बंधा। तासो बंधा अलेख ॥ दीन्हा दर्पण हस्तमें चस्म बिना क्या देख ॥ २३२ ॥ समुझाये समुझे नहीं। पर हाथ आपु बिकाय ॥ मैं खेंच-तहौं आपको। चला सो यमपुरजाय ॥ २३३ ॥ नित खरसान लोहा घुनछूटे॥ नितकी गोष्ट माया मोह टूटे ॥ २३४ ॥ लोहाकेरी नावरी। पाहन गरुवा भार ॥ शिरपर विषकी मोटरी। चाहे उत-रन पार ॥ २३५ ॥ कृष्ण समीपी पांडवा। गले हिवारे जाय ॥ लोहाको पारस मिले। तो काहेको कारी खाय ॥ २३६॥ पूरब उगे पश्चिम अथवे। भखे पौनके फूल ॥ ताहुको राहु ग्रासे। मानुष काहेक भूल ॥ २३७ ॥ नैनन आगे मन बसे।

पलक पलक करे दौर ॥ तीन लोक मन भूप है। मन पूजा सब ठौर ॥ २३८ ॥ मन स्वारथी आप रस । विषय लहर फहराय॥ मनके चलाये तन चले । जाते सरबस जाय ॥ २३९ ॥ कैसी गति संसारकी । ज्यों गाडरकी ठाठ ॥ एक परा जो गाडमें। सबै गाडमें जात॥२४०॥मारग तो कठिन है । वहाँ कोइ मति जाव ॥ गयेते बहुरे नहीं । कुशल कहे को आव ॥ २४१ ॥ मारी मरे कुसंगकी । केरा साथे बेर॥वे हाले वे चीरे । विधिन संग निबेर ॥ २४२ ॥ केरा तबहीं न चेतिया । जब ढिग लागी बेर ॥ अबके चेते क्या भया । जो कांटन लीन्हा घेर ॥ २४३ ॥ जीव मर्म जाने नहीं।अंध भया सब जाय ॥ बादि द्वारे दाँद न पावे । जन्म जन्म पछिताय ॥ २४४ ॥ जाँको सतगुरु ना मिला।व्याकुल दुहुँदिश धाय॥

आँखि न सूझै बावरा। घर जरै घूर बुतायः२४५॥
बस्तु अंते खोजे अंते। क्यों कर आवे हाथ॥
सज्जन सोई सराहिये। जो पारख राखै साथ॥
॥ २४६ ॥ सुनिये सबकी। निबेरिये अपनी॥
सेंदुरका सिंधोरा। झपनीकी झपनी॥२४७॥
बाजन दे बाजंतरी। तू कल कुकुही मति छेर॥
तुझे बिरानी क्या परी। तू अपनी आप निबेर॥
॥ २४८ ॥ गावै कथै बिचारै नांहीं। अनजानेका
दोहा॥ कहहिं कबीर पारस पर्से बिना। जस
पाहन भीतर लोहा॥२४९॥ प्रथम एक जो हौं
किया। भया जो बारह बान॥ कसत कसौटी
ना ठिका। पीतर भया निदान॥२५०॥ कबीर न
भक्ति बिगारिया। कंकर पत्थर धोय॥ अंतरमें
विष राखिके। अमृत डारिनि खोय॥२५१॥
रही एककी भई अनेककी। बिस्वा बहुत भतारि॥
कहहिं कबीर काके संग जरि है। बहु पुरुषनकी

नारि ॥ २८२ ॥ तन बोहित मन काग है । लख जोजन उडि जाय ॥ कबहिके भरमें अगम दरिया । कबहिंके गगन रहाय ॥ २८३ ॥ ज्ञान रतनकी कोठरी । चुम्बक दीन्हो ताल ॥ पारखी आगे खोलिये । कूंजी वचन रिसाल ॥ २८४ ॥ स्वर्ग पतालके बीचमें । दुई तुमरिया बद्ध ॥ षट दर्शन संशय परी । लख चौरासी सिद्ध ॥ २८५ ॥ सकैलो दुर्मति दूर करु । अच्छा जन्म बनाव ॥ काग गौन गति छाडिके । हंस गौन चलि आव ॥ ॥ २८६ ॥ जैसी कैहि करे जो तैसी । राग दोष निरुवारे ॥ तामें घटे बढे रतियो नहिं । यहि विधि आपु सँवारे ॥ २८७ ॥ द्वारे तेरे रामजी । मिलहु कबीरा मोहि ॥ तैं तो सबमें मिलि रहा । मैं न मिलौंगा तोहि ॥ २८८ ॥ भरम बढा तिहुं लोकमें । भरम मंडा सब ठांव ॥ कहहिं कबीर पुकारिके । तुम बसेउ भरमके गांव ॥ २८९ ॥ रतन अडाइन

रेतमें । कंकर चुनि चुनि खाय ॥ कहहिं कबीर पुकारिके । ई पिंडे होहु कि जाय ॥ २६० ॥ जेते पत्र बनस्पति । औ गंगाकी रेन ॥ पंडित बिचारा क्या कहे । कबीर कही मुख बैन ॥ २६१ ॥ हौं जाना कुल हंस हौं । ताते कीन्हा संग ॥ जो जानत बगु बावरा । छुवे न देतेउं अंग ॥ २६२ ॥ गुणियातो गुणहिकहै।निर्गुणिया गुणहि घिनाय॥ बैलहि दीजे जायफर । क्या बूझे क्या खाय २६३ अहिरहु तजि खसमहु तजि । बिना दादकी ढोर ॥ मुक्ति परे बिललात है । बृंदाबन की खोर॥२६४॥ मुखकी मीठी जो कहे । हृदया है मति आन ॥ कहैं कबीर ता लोगसे।तैसहि रामसयान॥२६५॥ इतते उतकोसब गये । भार लदाय लदाय॥ उतते कोई न आइया । जासो पूछिये धाय ॥ २६६ ॥ भक्ति पियारी रामकी।जैसी पियारी आग॥सारा

पढ़न जारि सुवा । बहुरि ले आवै मांग ॥२६७॥
नारि कहावै पीवकी । रहै और सँग सोय ॥ जार
मीत हृदया बसै खसम खुसी क्यों होय ॥२६८॥
सज्जनसे दुर्जन भया । सुनि काहुके बोल ॥ कांसा
तांबा होय रहा । हता टिकेका मोल ॥२६९॥
निर्बंधन बांधी आपनी । दर्शन दीजै रामा ॥ तुम्हें
दर्शन देहुगे । तो आवै कौने कामा ॥२७०॥ कहौं
परलय बीतिया । लोगहि लागु तमाहि ॥ भा-
लक सौच निवारिके । पाछल करहु गोसाहि
॥ २७१ ॥ एक समाना सकलमें । सकल समा-
ना ताहि ॥ कबीर समाना बूझमें । तहाँ दूसरा
नाहि ॥ एकै साधे सब साधिया । सब साधे एक
जाय ॥ जैसा सींचै मूलको । फूलै फलै अघाय
॥२७३॥ जाहि जन [illegible] । [illegible]
[illegible]

लगाय ॥ २७४ ॥ सांच कहो तो हैं नहिं। झूठहि लागु पियारि ॥ मो शिर ढारे ढेकुली। सींचे और कियारि ॥ २७५ ॥ बोल तो अमोल है। जो कोई बोले जान ॥ हिये तराजू तौलिके। तब मुख बाहर आन ॥ २७६ ॥ करु बहिंया बल आपनी। छाड बिरानी आस ॥ जाके आंगन नदिया बहे। सो कस मरे पियास ॥२७७॥ वोतो वैसेही हुवा। तू मति होहु अयान ॥ वो निर्गुणिया तैं गुणवंता। मत एक हिमें सान ॥ २७८ ॥ जो मतवारे रामके। मगन होहिं मनमाहिं ॥ ज्यों दर्पणकी सुंदरी। गहे न आवे बाहिं ॥ २७९ ॥ साध होना चाहिये। पक्का ह्वैके खेल ॥ कच्चा सरसों पेरिके। खरी भया नहिं तेल ॥ २८० ॥ सिंघोंकेरी खोलरी। मेढा पैठा धाय ॥ बानीते पहिचानिये। शब्दहि

फिरे । पकरि शब्दकी छाहिं ॥ २८९ ॥ नग पषाण जग सकल है । पारख बिरला कोय ॥ नगते उत्तम पारखी। जगमें बिरला होय॥२९०॥ सपने सोया मानवा । खोलि जो देखे नैन ॥ जीव पराबहु लूटमें । ना कछु लेन न देन॥२९१॥ नष्टका राज है । नफर का बरते तेज ॥ सार शब्द टकसार है । कोइ हृदया माहिं विवेक ॥ २९२॥ जबलग बोला तबलग ढोला।तौलों धनबेवहार॥ ढोला फूटा बोला गया। कोइ न झांके द्वार॥२९३ कर बंदगी विवेककी । भेष धरे सब कोय ॥ सो बंदगी बहि जान दे। जहां शब्द विवेक न होय ॥ २९४ ॥ सुर नर मुनि औ देवता । सात दीप नौ खंड । कहहिं कबीर सब भोगिया । देह धरेकोडंड ॥ २९५॥ जबलग दिनपर दिल नहीं। तबलग सबसुख नाहिं॥ चारिउ युगन पुकारिया।

सो संशय दिलमाहिं ॥ २९६ ॥ जंत्र बजावत हैं सुना । टूटि गया सब तार ॥ जंत्र बिचारा क्या करे । जब गया बजावनहार ॥ २९७ ॥ जो तू चाहे मुझको । छाँड सकलकी आस ॥ मुझही ऐसा होय रहो । सबसुख तेरे पास ॥ २९८ ॥ साधु भया तो क्या भया । बोले नाहिं विचार॥ हतैं पराई आतमा । जीभ बांधि तरवार ॥ २९९॥ हंसाके घट भीतरे । बसे सरोवर खोट ॥ चले गाँव जहवां नहीं । तहाँ उठावन कोट ॥ ३०० ॥ मधुर वचन है औषधी । कटुक वचन है तीर ॥ श्रवणद्वार ह्वै संचरैं । सालैं सकल शरीर ॥ ३०१॥ ढाढस देखो मरजीवको । धाये जुरि पैठि पताल ॥ जीव अटक माने नहीं । ले गहि निकरा लाल॥ ॥३०२॥ ई जग तो जहँडे गया । भया योग ना भोग

तिल झारि कबीरा लिया । तिलैठी झारे लोग॥
॥ ३०३ ॥ये मरजीवा अमृत पीवा । क्या धसि
मरसि पतार ॥ गुरुकी दया साधुकी संगति ।
निकरि आव यहि द्वार ॥३०४॥ केतेहि बुंद हल
कों गये । केते गये बियोग ॥ एक बुंदके कारने ।
मानुष काहेक रोय ॥ ३०५ ॥ आगि जो लागि
समुद्रमें । टुटि टुटि खसे खोल ॥ होवे कबीर
डांफिया । मोर हीरा जरे अमोल ॥ ३०६ ॥छौ
दर्शनसें जो परवाना । तासु नाम बनवारि ॥
कहहिं कबीर सब खलक सयाना । इन्हमें हमहिं
अनारि ॥ ३०७ ॥सांचे शाप न लागे । सांचे
काल न खाय ॥ सांचहि सांचा जो चले । ताको
काह नसाय ॥ ३०८ ॥ पूरा साहेब सेइये । सब
विधि पूरा होय ॥ ओछेसे नेह लगायके । मूलहू

आवे खोय ॥ ३०९ ॥ जाहु वैद घर आपने । यहाँ बात न पूछे कोय ॥ जिन्ह यह भार लदा इया । निरबाहेगा सोय ॥ ३१० ॥ औरनके सिखलावते । मोहडे परि गौ रेत ॥ रास बिरानी राखते । खाइनि घरका खेत ॥ ३११॥ मैं चितवतहौं तोहिं को। तू चितवत है वोहि॥कहहिं कबीर कैसे बनि है । मोहि तोहि औ वोहि ॥ ३१२॥ तकत तकावत तहि रहा । सके न बेझा मार॥सबै तीर खाली परा । चला कमानहिं डार ॥३१३ ॥ जस कथनी तस करनी। जस चुम्बक तस ज्ञान॥ कहैं कबीर चुम्बक बिना।क्यों जीते संग्राम॥३१४ अपनी कहे मेरी सुने। सुनि मिलि एकै होय॥हमरे देखत जग जात हैं। ऐसा मिला न कोय ॥३१५ देश विदेश हौं फिरा।गांव गांवकी खोरि॥ऐसा जियरा ना मिला। लेवे फटक पछोरि ॥ ३१६ ॥

मैं चितवत हौं तोहिंको । तू चितवत कछु और ॥ नालत ऐसी चित्तपर । एक चित्त दुइ ठौर ॥ ३१७ ॥ चुम्बक लोहे प्रीति है । लोहे लेत उठाय ॥ ऐसा शब्द कबीरका । काल से लेत छुडाय ॥ ३१८ ॥ भूला तो भूला । बहुरिके चेतना ॥ बिस्मय की छूरी । संशयका रेतना ॥ ३१९ ॥ दोहरा कथि कहै कबीर । प्रति दिन समय जो देखि ॥ मुये गये नहिं बाहुरे । बहुरि न आये फेरि ॥ ३२० ॥ गुरु बिचारा क्या करे । शिष्यहि माँहि चूक ॥ भावे त्यों परमोधिये बांस बजाये फूक ॥ ३२१ ॥ दादा भाई बाप के । लेखो चरणन होइ हौं बंदा ॥ अबकी पुरिया जो निरुवारे । सो जन सदा अनंदा ॥ ३२२ ॥ सबते लघुताभली । लघुतासे सब होय ॥ जस दुतियाको चंद्रमा । शीस नाव सब कोय ॥ ३२३ ॥ मरते मरते जग मुवा । मुये न जाना

कोय ॥ ऐसा होयके ना मुवा । जो बहुरि न मरना होय ॥ ३२४ ॥ मरते मरते जग मुवा । बहुरि न किया बिचार ॥ एक सयानी आपनी । परबस मुवा संसार ॥ ३२५ ॥ शब्द है गाहक नहीं । वस्तु है महँगे मोल ॥ बिना दाम काम न आवे । फिरे सो डामाडोल ॥ ३२६ ॥ गृह तजिके भये योगी । योगीके गृह नाहिं ॥ बिना विवेक भटकत फिरे । पकरि शब्द की छाहिं ॥ ३२७ ॥ सिंघ अकेला बन रमे । पलक पलक करै दौर ॥ जैसा बनहै आपना वैसा बनहै और ॥ ३२८ ॥ पैठा है घट भीतरे । वैठा है साचेत ॥ जब जैसीगति चाहे। तब तैसी मति देत ॥ ३२९ ॥ बोलतही पहिचानिये । साहु चोरका घाट ॥ अंतर घटकी करनी । निकरे मुखकी बाट ३३० दिलका महरम कोइ न मिलिया । जो मिलिया

सो गर्जि ॥ कहहिं कबीर अस्मानहि फाटा । क्योंकर सीवे दर्जि ॥ ३३१ ॥ ई जग जरते देखिया । अपनी अपनी आगि ॥ ऐसा कोई ना मिला । जासों रहिये लागि ॥ ३३२ ॥ बना बनाया मानवा । बिना बुद्धि बेतूल ॥ कहा लाल ले कीजिये । बिना बासका फूल ॥ ३३३ ॥ सांच बराबर तप नहीं । झूठ बराबर पाप ॥ जाके हृदया सांचहै । ताके हृदया आप ॥३३४॥ कोरे बडे कुल ऊपजे । जोरे बडी बुद्धि नाहिं ॥ जैसा फूल उजारिका । मिथ्या लागि झर जाहिं३३५॥ कर्तें किया न विधि किया।रबि शशि परी न दृष्टि तीन लोकमें नहींहै।जाने सकलो सृष्टि ॥३३६॥ सुर हुर पेड अगाध फल । पंछी मरिया झूर ॥ बहुत जतनकै खोजिया । फल मीठा पै दूर३३७॥ बैठा रहै सो बानिया । ठाढ रहे सो ग्वाल॥जागत

रहे सो पहरुवा। तेहि धरि खायो काल॥३३८॥
आगे आगे दौं जरे। पाछे हरियर होय॥बलि-
हारी तेहि वृक्षकी। जर काटे फल होय॥३३९॥
जन्म मरण बालापना। चौथे वृद्ध अवस्था
आय। जस मूसाको तके बिलाई। अस यम
जीवघात लगाय॥३४०॥ हैं बिगरायल वोरका।
बिगरो नाहिं बिगारो॥ घाव काहिपर घालो।
जित देखो तित प्राण हमारो॥ ३४१॥ पारस
परसे कंचन भौ॥ पारस कधी न होय॥
पारसके अरस परसते। सुबर्ण कहावे सोय
॥ ३४२॥ ढूंढत ढूंढत ढूंढिया। भया सो गुना
गून॥ ढूंढत ढूंढत ना मिला। तबहारी कहा
बेचून॥ ३४३॥ वेचूने जग चूनिया। साँई
नूर निन्यार॥ आखिर ताके वखत में।
किसका करो दिदार॥ ३४४॥ सोई नूर
दिल पाक है। सोई नूर पहिचान॥

जाके किये जग हुवा। सो बेचून क्यों जान३४५॥
ब्रह्मा पूछे जननिसे। कर जोरे शीस नवाय॥
कौन बर्ण वह पुरुषहै। माता कहु समुझाय३४६॥
रेषं रूप वै है नहीं। अधर धरी नहिं देह॥ गगन मंडल के मध्य में। निरखो पुरुष बिदेह॥३४७॥
धरे ध्यान गगन के माहिं। लाये बज्र किंवार॥
देखि प्रतिमा अपनी। तीनिउँ भये निहाल३४८
ये मन तो शीतल भया। जब उपजा ब्रह्मज्ञान॥
जेहि बसंदर जग जरे। सो पुनि उदक समान३४९
जासो नाता आदिका। बिसरि गया सो ठौर॥
चौरासी की बसि परे। कहे और की और ३५०॥
अलख लखों अलखे लखों। लखों निरंजन तोहिं।
हो कबीर सबको लखों। मोको लखे न कोहिं३५१॥
हम तो लखा तिहुँ लोकमें। तूं क्यों कहे अलेख॥

सार शब्द जाना नहीं । धोखे पहिरा भेख ३५२ ॥
साखी आँखि ज्ञानकी । समुझि देखु मनमाहिं ॥
बिना साखी संसारका । झगरा छूटत नाहिं ३५३ ॥

॥ इति बीजक मूल गुरुकी दयासे संपूर्ण ॥

गुरुअर्पणमस्तु ॥

बीजक मूल ग्रंथ समाप्त.

दया गुरुकी ।

अथ फल बीजक का ।

साखी ।

बीजक कहिये साख धन । धनका कहे सँदेश ॥
आतम धन जेहि ठौर है । बचन कबीर उपदेश १
देखे बीजक हाथ ले । पावे धन तेहि शोध ॥
याते बीजक नाम भौ । माया मनको बोध॥२॥
आस्ति आत्माराम है । मन माया कृत नास्त॥
याकी पारख लहे जथा।बीजक गुरु मुख आस्त३
पढे गुने अति प्रीति युत । ठहरिके करेबिचार ॥
थिरता बुद्धि पावे सही।बचन कबीर निरधार४॥
सार शब्द टकसार है । बीजक याको नाम ॥
गुरुकी दयासे परख भई।बचन कबीर तमाम५॥
पारख बिना परचै नहीं । बिन सत्संग न जान६
दुविधा तजि निर्भय रहे । सोई संत सुजान ७॥

नीर क्षीर निर्णय करे । हंस लक्ष सहिदान ॥
दयारूपि थिरपद रहे । सो पारख पहिचान ७॥
देह मान अभिमान के । निरहंकारी होय ॥
वर्ण कर्म कुल जातिते । हंस निन्यारा होय ॥८॥
जग विलास है देहको । साधो करो विचार ॥
सेवा साधन मन कर्मते । यथा भक्ति उर धार९

॥ इति फल बीजकका गुरुकी दयासे संपूर्ण ॥

पुस्तक मिलनेका ठिकाना–
खेमराज श्रीकृष्णदास,
"श्रीवेङ्कटेश्वर" स्टीम् प्रेस–बंबई.